नवरत्न भाष्य तथा रसविलास १६06

नवरत्नभाष्य

रासविलास।

द: वद्रीप्रसाद की किता
व है और वद्रीप्रसाद
हरचंदपुर वा रामगढ़
के है अगर कोई दावा
करै तो झूठा पड़े ता:
२६-पात्त सन १९
१७ ईस्वी

श्री १॥



ि: बद्रीप्रसाद हिरजाहिरता ०१६

०प्रप्रैल सन १९४१ १९१८ ई० लिखी

मौजा हरचंदपुर थाना दिविया

पुरलहरी जिला बिधूना परगना

घनाकी हेंडी को रखवा कर सदा

केगा।

श्रीगणेशाय नमः ।

नवरत्न भाष्य.

तथा

रासविलास ।

जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द परब्रह्म परमेश्वर व जगज्जननि वृषभानुनंदिनीकी अलभ्यलीला रसामृत रसिकजनार्थ वर्णित हैं ।

वही

पं० कृष्णविहारीशुक्ल द्वारा परिशोधिकर

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

कार्तिक संवत् १९६३, शके १८२८

चलत चाल गजराजकी, पायल शब्द सुनाय।
मानो पढि कछु मंत्रसों, मदनहि देत जगाय॥
कि ठोकर इश्क पढनेमें रसालय लवभडकतीहै।

॥ श्रीः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः।



दक्षहस्तकृताश्लेषां वामेनालिङ्गच राधिकाम्।
कृतनाटचो हरिः कुञ्जे पातु वेणुं विनादयन्॥ १॥

मथुरा काशी भरमिये, हमैं देव विश्वास।
घटही भीतर हरिवसैं, क्यों खोजत आकाश॥
हमैं नवरत्नभाषाही स्वरगकी सच निशेनी है।

१०—कुचमूलमें तूलकी लाय किनारी हमैं नित प्यारी दिखाइयो ना। दिखाइयो तौ न छिपायो फेर लटै मुखपै लटकाइयो ना।
लटकाइयो तो मटकायके भौंह कटाक्षके बाण चलाइयो ना। हँसि कृष्णबिहारी जू रासविलास दिखाय हमैं तरसाइयो ना।

श्रीगणेशाय नमः ।

नवरत्नभाष्य रासविलासका-

सूचीपत्र.

इति.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ नवरत्नभाष्यरासविलास ।

बाबू श्यामलाल वाजपेयी विरचित ।

प्रथमभाग १.

अथ श्रीवंदना वा समाजीवचन ।

नृत्यकृतगान ।

दोहा-श्रीगुरुचरण स्मरण करूं, जिनसों पायों ज्ञान ॥
प्रिया प्रीतमकी भक्तिमें, निशिदिन रह मम ध्यान १
नवरत्नहु भाषा कहूं, सब भक्तनको दास ॥
लीला कछु वर्णन करूं, युगलचरणकी आस ॥ २ ॥
नंदगाम नँदनँदन भे, वरषाने वृषभान ॥
दोनों कुलदीपक भये, गावत वेद पुरान ॥ ३ ॥
ब्रजसमुद्र मथुरा कमल, वृंदावन मकरंद ॥
ब्रज वनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचंद ॥ ४ ॥
गोपी ओपी जगतमें, जिनकी उलटी रीत ॥
तिनके पग वंदन करूं, जिन करी कृष्णसों प्रीत ॥५॥
ब्रजकी रजको परशिकै, मिलत पदारथ चार ॥
जाको ब्रजबाला वधू, डारत नित्य बुहार ॥ ६ ॥

श्रीनारायण अति सुभट, जिनको व्रजसौं हेत ॥
ठौर ठौर लीला रची, निकट जानि संकेत ॥ ७ ॥
चंद्र मिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार ॥
दृढ़ व्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नृत्य विहार ॥ ८ ॥
कोई भरोसे भजनके, काहूके आचार ॥
व्यास भरोसे कुँवरके, सोवत टांग पसार ॥ ९ ॥
मुरली मदनगोपालकी, बाजत अति गम्भीर ॥
कृष्णदास बाजत सुनी, वा कालिंदीतीर ॥ १० ॥

समाजीवचन ।

कुण्डलिया ।

आचारज ललिता सखी, रसिक हमारी छाप ॥
नित्य किशोरी उपासना, युगल मंत्रको जाप ॥
युगलमंत्रको जाप वेद रसिकनकी बानी ॥
श्री वृंदावन धाम इष्ट श्यामा महरानी ॥
प्रेमदेवता मिले विना सिधि होत न कारज ॥
भगवत सब सुख देन प्रगट भे रसिकाचारज ॥ १ ॥
सांचे श्री राधारमण, झूंठो सब संसार ॥
बाजीगरको पेखनो, मिटत न लागै बार ॥
मिटत न लागै बार भूत की सम्पति जैसे ॥
मेहरी नाती पूत धुआँके बादर जैसे ॥
भगवतते नर अधम लोभबिच घर घर नाचैं ॥
झूंठे गढ़े सोनार बैनके बोले साँचैं ॥ २ ॥

जहाँ रसिक स्वादी मिलै, तहँ सन्मान न होइ ॥
जहाँ होइ सन्मान बहु, तहँ मन मिलै न कोइ ॥
मन मिलाप जहँ होय तहाँ इष्टता नशावै ॥
जहाँ इष्टता होय तहाँ दारिद्र सतावै ॥
जेते हरिके धाम हैं काम क्रोध क्रीडा करैं ॥
भगवत यहि कलिकालमें कहो रसिक क्यों निस्तरैं॥ ३॥
दुखिया द्विज विद्याविना, राजा दल बिन सोय ॥
रूप विना गणिका दुखी, योगी योग न होय ॥
योगी योग न होय साधु हरभजन नजाने ॥
भाट कलावत भाँड सभा नट लज्जा माने ॥
भगवत रसिक अनन्य विना नाहिं कोई सुखिया ॥
धन सम्पति परिवार पुत्र विन सब जग दुखिया॥४॥

पद ॥ राधा नाम आधार परम धन ॥ टेक ॥
जाहि पिया मुरलीमें टेरत सुमिरत बारंबार परमधन ।
यंत्र मंत्र अरु वेद तंत्रमें किनहुं न पायोपार परमधन ।
श्री मुख प्रगट कियो ना यासों जानि सारको सार-
परम धन ॥ राधा नाम आधार परमधन ॥ १ ॥

गोपी प्रेमकी धुजा ॥ टेक ॥ जिन गोपाल किये वश
अपने कर धर श्याम भुजा॥शुक मुनि व्यास प्रशंसा
कीन्ही उद्धव संत सराही ॥ भूरि भाग्य गोकुलकी
वनिता अति पुनीत जगमाही ॥ कहाभयो जो
विप्र कुल जनम्यों जो हरि सेवा नाहीं ॥

सोइ पुनीत दास परमानंद जो हरि सन्मुख जाहीं २

कवित्त-वृंदावन धाम नीको ब्रजको विश्राम नीको,
श्यामा श्याम नाम नीको मंदिर अनंदको ॥
कालीदह न्हान नीको यमुना पय पान नीको,
रेणुकाको खान नीको स्वाद नीको कंदको ॥
राधा कृष्ण नाम नीको संतन को संग नीको,
गोरे श्याम रंग नीको अंग युग चंगको ॥
नील पीत पट नीको बंसीवट तट नीको,
ललित किशोरी नीको नट नीको नंदको ॥ १ ॥
लाजको जहाज डूबो शीलको समुद्र सूख्यो,
दयाके खजाने की तारी कोइ ले गयो ॥
संतहू की कोठी लूटी धर्महूकी धुजा टूटी,
पाप घर घर अरु घट घट में छै गयो ॥
संतनको कहा दोष होत कोऊ देत नाहीं,
नाहीं को नकीब सब घर घर बिच कह गयो ॥
संत कहे चेत तू अचेत नर लाज पुनि,
दया धर्म कर्म बीच अंश कहूं रह गयो ॥ २ ॥

श्री युगल आरती ।

दो०-पाग बनो पटुका बनो, बनो लालको वेष ।
राधावल्लभ लालकी, चलहु आरतीदेख ॥ १ ॥

राग मलार-आरति युगल करत ब्रजनारी ॥ श्रीनँ-
दनंदन वृषभानुदुलारी ॥टेक॥ उतमेघवरणसांवरीमू

रति इतचन्द्रवदनशारद उजियारी ॥ उतभक्तनकोअ-
मृतबरपावत इतपालनहितशरदफुहारी ॥ १ ॥ उतमो-
रमुकुटचीरारँगबाँधे इतशीशफूलचूनरिरँगकारी । उ-
ततिलकभालमधुआकिरेख इतमाँगकाढिसेंदूरसँवा-
री ॥ २ ॥ उतभ्रुकुटिकुटिलधनुलसतरेख इतभोरीहोम
नहरतसुरारी॥उतकमलनयन अतिचपलडोल इतमृग
नयनीकीचितवनिन्यारी ॥ ३ ॥ उतगोलकपोलमनोहर
अति इतचपलासीदामिनिदमकारी ॥उतहिबुलाकना
कबिचसोहत इतनकबेसरलटकनप्यारी ॥ ४ ॥ उतमु-
रलीमुखअधरविराजैइतमुसक्यानिहँसनिकिलकारी ॥
उतगलमालवनमालसुहावै इतचम्पादुलरीगलहारी॥५॥
उतनटवरपीताम्बरशोभा इतलहँगामेंजरदकिनारी ॥
उतनारायणयुगलछबिनिरखत इतश्यामौहरषिदेत-
हैं तारी ॥ ६ ॥

दो०–सुख मन रूप अनूप हौ, कह वरणों कवि नंद ॥
अब वृंदावन वरणिहौं, जहँ वृंदावन चंद ॥ १ ॥
वृंदावन आनंद घन, कछु छबि वरणि न जाय ॥
कृष्णललित लीलाके कारण, धार रहे जड़ताय॥२॥

सो० श्री ब्रजराजकुवँरवरगाइयेभक्तनकोमनभावतोगा
इये॥आनंदकेकंदनिधिवरगाइये श्रीलाडिलीललन वर गाइये॥

दो०–नौरस में कवियन कहो, सरस अधिक शृंगार ॥
ताहूमें पुनि अति सरस, सो यह रास विहार ॥ १ ॥

नौही अंग शृँगारके, होरी चोरी दान ॥
छलहि करन वन ऋतुगवन, विरह मिलन अरु मान २
नागरिया नवनागरी, खेलन रास विलास ॥
पल पल वारों हे सखी, नित नव नागरि दास ॥ ३ ॥

रासगान प्रारम्भ ।

रास विलास गहेकर पल्लव यक यक भुजग्रीवा मेली ।
द्वै द्वै गोपी बिच्च बिच माधो नृत्यत संग सहेली ॥ १ ॥

परमूल श्री ठाकुरजीका ।

तत त्रांग धुमकिट त्रांग धुमकिट धुमकिट त्रांग
त्रांग तत ताता त्रांग मुन मुन मुन तत थेई ॥ १ ॥

परमूल श्री प्रियाजी ।

ततो त्रांग थूथू थो ततो त्रांग थूथूथो धितक त्रांग
थूथू ततू थू धिकतू थू धिकतक थूथूतकदधिगिनथेई

परमूल ललता सखी ।

तक तक झन झुन कुड झझक त्रांग नुकंज ॥
तक तक झुन झुन कुड कुड जझिक त्रांग निंकुंज॥
गिड गिडिता गिडिता थूंगा गिडता दधिगिनथेई ॥

परमूल सखी विशाखा ।

तेजिक तेजिक त्रीतेज तेदाता ॥
तेजिक तेजिक त्रीतेज तेदाता ॥
झिझक तक थेई झिझक तकथेई ॥

तेझिक तेझिक त्रीतेत तदा थेई ॥
परमूल श्रीठाकुरजीका ।
तद्दी तद्दी धिक तक तद्दी त्रांगतो ॥
त्रांग त्रांग दधिगिन थेई झिझक झिझक ॥
तक थेई झिझक तकथेई ताथा थेई ॥
ताथेई झिझक तक थेई थूथू थेई थेई थेई ॥
थेथे थेथे तेता त्रियता त्रितेज तीदाता थेई ॥१॥

टूट परी मोतिन की माला ढूँढत फिरत सकल ग्वारी॥ मुखलत कुसुम मालती विकसत निरख हँसे गिरिवरधारी॥शरद विमल नभ चंद्र विराजत विहरत नृत्यतनंद किशोर॥ परमानंदप्रभु वदन सुधानिधि भामिननयन चकोर॥ १॥

दोहरा–भाग्यवान वृषभानु सुतासी को त्रियात्रिभुवन माहीं॥ जाको पति पति त्रिभुवन पति पति दिये रहत गलबाहीं॥ ह्वै अधीन संगहि सँग डोलत जहाँ कुँवरि चलजाहीं॥ रसिक लख्यो जो सुख वृंदावन सो त्रिभुवनमें नाहीं॥ १॥

दोहा–ठाढ़ी रहु लाड़िली गैलमें मैं माला सुरझाऊं॥
एरी टेढ़ीचाल छोड़दे मैं सूधी चलन सिखाऊं॥
वृंदावन हित रूप फूल की माल रीझ जो पाऊं॥१॥

सवैया–सूकर ह्वै कब रास रच्यो अरुवामन ह्वै कब गोप नचाई॥ मीन ह्वै कौनके चीर हरे अरु कच्छपह्वै कब बीन बजाई॥ ह्वैके नृसिंह कहो हरिजू तुम कौनके

छतियन रेख लगाई ॥ वृषभानु सुता प्रगटी जबते तबते तुम केलि कलानिधि पाई ॥ १ ॥

गति-थेई ततःतत थेइया थेइ ततःतत थेइया ॥

देखोरी या मुकुट की लटकन ॥ टेक ॥ नृत्य करत राधे संग प्रीतम वैजंती वनमाल छिनकाछिन ॥ घुँघरूकिधमकदेखमेरीसजनीकैसोशब्दपैरकीपटकन॥ सूरश्यामप्रभु या छबि ऊपरभूलोज्ञान योगकी भटकन॥

दोहा-गहवर से दोनों चले, हरि राधा लिये साथ ॥
मंदिरको चले जात हैं, गहे हाथ सों हाथ ॥ १ ॥

दो०-छत्तेदार छबीली जुलफैं मुख उपर लटकारी हैं ॥
रतन जडित चूडा हाथों में दामिन दमक उजारी हैं ॥
जरीदार शिरपेंच पागकर तापर कँलगी न्यारी हैं ॥
ललित किशोरी लाल तुम्हारी लटक चाल पै वारीहैं॥
मोरपंख पै डोलै कँलगी पुतली लै बरजैहैं ॥
रूप कहर दरियाव नाव जिम धरम किये लरजै हैं ॥
सोना सामल नागर सागर वन मुरली धुन गरजै हैं ॥
बालम रसिक लहर तानन सुर आवत गावत परजै हैं॥

दो०-बांकी पाग चंद्रिका तापै तुर्रा ररक रहोहै ॥
अलबेली लट छूटी अलकैं चितवन चित्त हरोहै ॥

दोहा-महली की गति महली जानै लखै न बाहर वारो॥
नृपकी रहन सहन क्या जानै भेड़ चरावन हारो॥
वर शिर पेच माल उर बांकी पटुका छिटिकि रहा है॥

बाँके नयन मैन शिर बाँके वैन विनोद महा है।
बाँके की बाँकी झाकी कर बाँकी रहा कहा है॥
दोहरापं०इश्कदिलांदे नाल असांदे महबूबांदी गल्लां।
औरोंसेती अरदा परदा भीतर हल्लम हल्लां॥
लाखों बीच एक रस साजे औरै ढोवैं पल्लां।
सभी राजी सभी खुशी यक बालम रसिकमुहल्लां॥
सवैया-सोन जुहीकी बनी पगिया औ चमेलीके गुच्छ रह्यो झुक न्यारो। दोदल फूल कदम्बके कुंडल सेवती को झगा घूमघुमारो। नवतुलसी पटुका घनश्याम गुलाब इजार नवेली बनारो। देख सखी कैसो चित्र बनो आज कैसो शृँगारो है प्यारी ने प्यारो॥ १॥

नृत्यगति प्रियाजी वचन।

सो मेरी आली थेईततःताताथेइयाथेईथेईथेईततःताता थेईयाथेई थेई नाचत मदनगोपाल सोथेइततातातथेईया

श्रीठाकुरजीवचन।

एहां! थेइ ततःताता थेईया थेइ थेईया ततःताताथेई थेई नचत लाडिली हिलमिल हिलमिल सुलभ गति लेई थेई तत थेइ थेइया॥ १॥

कवित्त-भ्रुकुटी तनीको नकबेसर बनीको लटनगन फनीको लख फूल्यो कंज फीको है॥ मनकी मनीको नैन बानको अनीको जोखें तैनरजनीको हौसहुनस

नहींकोहै । रूपरमनीकोकैरमारमनीको गजगतिग-
मनीको कैधौंसिंधुसुरजोकोहै ॥ बेनीबंदनीकोमृदुहा-
सफंदनीकोमुखचंद्रहूते नीकोवृषभानुनंदनीकोहै १

स०–मंडल रास बिलास महारस मंडन श्रीवृषभानु दु-
लारी ॥ पंडित कोक संगीत भरी गुण राजत कोटिक
गोपकुमारी । प्रीतमके भुज दंडमें शोभित संगमें
अंग अनंगन वारी । तान तरंगन रंग बढ्यो ऐसे
राधिका माधवकी बलिहारी ॥ २ ॥

जामा बन्यो जरीतासको सुंदर लाल लगे बंद जर्द
किनारी ॥ झालरदार बन्यो पटुका अरु मोतिन की
छबि जात कहांरी ॥ जैसी चाल चले गजराज कहै
बलिहारी है मौज तिहारी ॥ देखत नयनन ताक र-
ही झुक झांक झरोखन बाँके विहारी ॥ ३ ॥

क०–सुंदर सुजान कान्ह सुंदरही पाग शीश सुंदर से
नयन अधर सुंदर बांसुरिया ॥ सुंदर भ्रूकुटी कमान
सुंदर पलकनके वान सुंदर मुसकान मंद चितवन
चित हरिया ॥ सुंदर बाजू बिराजैं सुंदर वनमाल सा-
जे सुंदर गलहार मोती जामा जो केसरिया ॥ सुंदर
कंकन अमोल सुंदर कुंडल कपोल सुंदर नारायण
बोल दीन दरह हरिया ॥ ४ ॥

वार डारौं शरद इंदु मुख छबि गोविंद पर दिनेशहू

को वार डारौं नखन छटान पर ॥ कोटि काम वार डारौं अंग अंग श्याम लख वार डारों अलिन अलि गुंजत लटानपर ॥ नयनन की कोरन पै कंजहू को वार डारौं वार डारौं हँसहू को चाल लटकान पर ॥ देख सखी आज ब्रजराज छबि कहा कहूं कामधेनु वार डारौं भ्रुकुटी मटान पर ॥ ५ ॥

नयनन चकोर मुख चंद्र हू को वार डारों वार डारों चित्त मनमोहन चित चोरपै ॥ प्राणहूको वार डारौं हसन दशन लाल हेरन कुटिल वाले लोचन की कोरपै॥ वार डारों मनहिं रंग अंग अंग श्यामा श्याम हिलन मिलन रस रास की झकोर पै ॥ अति ही सुघर बर सोहत त्रिभंगी लाल सर्वस मैं वारौं वाकी ग्रीवाकी झकोर पै ॥ ६ ॥

मुकुट के रंगन पै इंद्रको धनुष वारौं अमल कमल वारौं लोचन विशाल पर ॥ कुंडल प्रभा पै कोटि प्रभाकर वार डारौं कोटिक मदन वारौं बदन रसाल पर ॥ तनुकी तरुण पै नीरद सजल वारौं चपला चमक उर मोतिन की माल पर ॥ चालपै मराल वारौं मन हूं को वार डारौं और कहा वारौं छबि नंदके कुमारपर ॥ ७ ॥

राग जैजैवंती ।

आवरी बावरी ऊजरी पाग पै मेलके बाँध्योहै मंजु-

ल चोटा ॥ चंचल लोचन चाल मनोहर अबहीं गहि आन्योहै खंजन जोटा ॥ देखत रूप ठगोरी सी लागत अैन मैन मानो कमल के जोटा ॥ नंददास रस रास कोटिन वारौं आज बन्यो ब्रजराजको ढोटा ॥ १ ॥

राग बिलावल।

आली री रासमंडलमध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार लाडली रूप निधान ॥ चरण चारु हँसत भेद मिलवत गति भाँति भाँति भ्रू विलास मंद हास लेत नयनन ही में मान ॥ दोऊ मिल राग अलापत गावत होडा होडी उघटत दे कर तारी तान। परमानंद निरख गोपी जन वारतहैं निज प्रान ॥ १ ॥

(परस्परलालजीका वचन)

थेई थेई मेवारी श्रीतता ता मेवारी श्रीतता ताता थेई थेई
दोहा–मेरी प्यारी लाडली, मोमन रही समाय ॥
जो निशान आगे धरैं, पीछेसे फहराय ॥ १ ॥

श्री राधिका वचन।

कर मुरली लकुटी गहे, घूँघरवाले केश ॥
हरि हमरे नयनबसैं, श्याम मनोहर वेष ॥ २ ॥

ललतासखी वचन।

मोहनि मूरति श्याम की, मो मन रही समाय ॥
ज्यों मेंहदीके पातमें, लाली लखी न जाय ॥ ३ ॥

विशाखा सखी वचन ।

हाथ जोरि विनती करूं, सुनो गरीबनिवाज ॥
अपनीहीं करि राखिये, बाँहगहेकी लाज ॥ ४ ॥

श्रीठाकुरजी वचन ।

एरी प्यारी लाड़िली, मेरी ओर तु देख ॥
मैं तोहिं राखौं नयन में, काजरकीसी रेख ॥ ५ ॥

श्री राधिका वचन ।

तू घरनी घर नंदके, मैं बेटी वृषभान ॥
तू तो सुंदर साँवरो, मैं हूं चतुर सुजान ॥ ६ ॥

ललतासखी वचन ।

दधिसुतके नीचे बसै, मोती सुतके बीच ॥
सो माँगतिहै राधिका, करौ श्याम बखशीश ॥ ७ ॥

विशाखा सखी वचन ।

मेरे प्यारे मोहना, वंशी नेक बजाय ॥
तेरी वंशी मेरो मन हर्यो, घर अँगनान सुहाय ॥ ८ ॥

श्री ठाकुरजीका वचन ।

गोरे मुखपर तिलबनो, ताहि करों परणाम ॥
मानो चंद्र बिछायकै, सोये शालग्राम ॥ ९ ॥

श्रीराधिका वचन ।

मोर मुकुट की लटक पर, अटक रहे दृग मोर ॥
यमुनातट बंशीनिकट, विहरत नंद किशोर ॥ १० ॥

ललतासखी वचन।

वृन्दावनके वृक्षको, मर्म न जानै कोय ॥
डार पात फल फूल में, राधे राधे होय ॥ ११ ॥

विशाखा सखी वचन।

मेरे प्यारे मोहना, मेरे चितके चोर ॥
तेरे मुख देखे बिना, दीखत नाहिं कोइ ठौर ॥ १२ ॥

श्रीकृष्ण वचन ।

राधे जूके बदनपै, बेंदी अति छबि देय ॥
मानो फूली केतकी, भ्रमर वासना लेय ॥ १३ ॥

ललतासखी वचन।

राधा तू बड़िभागिनी, कौन तपस्या कीन ॥
तीन लोक तारण तरण, सो तेरे आधीन ॥ १४ ॥

विशाखासखी वचन ।

मेरे प्यारे मोहना, मो मन गयो समाय ॥
तेरे मुख देखे बिना, मोहिं न कछु सुहाय ॥ १५ ॥

श्रीठाकुरजी वचन।

लट छूटी त्रिय शीश से, रही कपोलन छाय ॥
मानो छौना नागको, पी पी अमी अघाय ॥ १६ ॥

श्रीराधिका वचन ।

लट छूटी मेरे शीशसौं, कहा पड़ो है तोय ॥
मेरी लट नागिन भई, लपकत आवत सोय ॥ १७॥

ललतासखीवचन ।

वृंदावनके बागमें, भ्रमर करत गुंजार ॥
दुलहनप्यारी राधिका, दूल्हो नंदकुमार ॥ १८ ॥

विशाखासखीवचन ।

ब्रजचौरासी कोशमें, चारगाम निज धाम ॥
वृंदावन अरु मधुपुरी, वरसानो नँदगाम ॥ १९ ॥

श्रीकृष्णवचन ।

प्यारी जीके वदनपै, वसत चलीसौ चोर ॥
दश सारस दश हंसहैं, दश चातक दशमोर ॥ २० ॥

श्रीराधिकावचन ।

प्रीतम मन मेरे बसैं, ज्यों गुड्डी में डोर ॥
प्रेमकि डोरी खैंचके, करती रहूँ मिरोर ॥ २१ ॥

ललतासखीवचन ।

श्रीपतिके करमें बसै, पांचहरफ गनिलेव ॥
पहलो अक्षर छोड़कै, बचै सो हमको देव ॥ २२ ॥

विशाखासखीवचन ।

येरे छलिया नंदके, यह तेरे छलछंद ॥
मनगहि नीके राखियो, भुजके बाजूबंद ॥ २३ ॥

श्रीकृष्णवचन ।

ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ॥
इन्हें न नेक बिसारिहौं, मोहिं नँदबबाकी आन॥२४॥

श्रीराधिकावचन ।

प्रीतम मेरे दृग बसैं, ज्यों मेहँदी में रंग ॥
जैसे छाया जीवकी, तजत न नेकोसंग ॥ २५ ॥

ललतासखीवचन ।

मुरली मदन गुपालकी, बाजत अति गंभीर ॥
कृष्णदास बाजत सुनी, कालिंदीके तीर ॥ २६ ॥

विशाखासखीवचन ।

वृंदावन से वन नहीं, नंदगामसों गाम ॥
वंसीवटसों वटनहीं, कृष्ण नामसों नाम ॥ २७ ॥

श्रीठाकुरजीवचन ।

ब्रज तज अंत न जाइहौं, मेरी है यह टेक ॥
भूतलभार उतारिहौं, धरिहौं वेष अनेक ॥ २८ ॥

श्रीराधिकावचन ।

चलौ सखी तहँ जाइये, जहाँ मिलैं ब्रजराज ॥
गोरस बेचत हरि मिलैं, एक पंथ दो काज ॥ २९ ॥

ललतासखीवचन ।

मान सरोवर प्रेमकी, भरी रहै दिन रैन ॥
जहँ प्रिय प्यारी पग धरैं, लाल धरत दोउ नैन ॥ ३० ॥

विशाखासखीवचन ।

जलमें बसै कुमोदनी, चंदाबसै अकाश ॥
जो जन जाके मन बसै, सो जन ताके पास ॥ ३१ ॥

मृदंगबोलगति ।

धाधिननक धाधिननक धिनक धिनक तिटकत्ता गिदिगिनागिना निटतत्त । किटतकत्ता तिट तिट धिधिन तकत्तागि धिगिनाधा तत्ताधिधनत धिधनत-तिटकिट तागिदितिटकत्ता धिधिनत्तागिधिगिनाधा कत्ताधाधि नतागिधिगिनाधा ॥ ३२ ॥

धीधक धिंना धीधी न तक तक तक धिंनाकताधिं तकधिंनाधिं धिंनात्तक धिंना कत्ता० ॥

धिंना धितक धितक तक तक तक धितकधितक त-क तक तक धिताता धिताताधिताता धागे धींधाधिंधा धागो धिंधाधिं धागेधिंधा धिंधागेधिंधाधि तक धिंधिताधि॥३३॥

धधूमकिट धधुमकिट धुमकिट तकधिरकिट तक धिरकिट धुमकिट तीराग्डां तीरग्डां तकदागिडिनता तिरकिट कितगी धिगिनधा गिडनिकतिरकिट कित्ता गिधिगिनधागिडनिकतिरकिटकित्तागिधिगिनाधा०

तरांग तिकविकथै तरांग तिकतिकथै तरांग तिक थै॥तिद्धा तिद्धा तत तिधिततथै तिद्धा तिद्धा तत तिदी ततथै तिदिततथै तिद्धिततथै तिदिततथै तिधिततथै त धीततथै तकतक तरांग तातो तरांग तक थुंथुं तिद्धा तिक तिक थै तिद्धा तिक तिकथै तिद्धा ॥

पद नृत्यवादलीलाके।

सखिन संग नाचत कृष्ण गोपी ॥ टेक ॥ छुमछुमछु-मछुम छननननन तमूरा मँजीरा वीना झाँझमुहचंग बाजै अबीरा उडावै गावै रागरंग मृदंगठुकतठुमठ ननन । सारङ्गी सरस अरु खंजरी रबाबबाजै मधुर मधुर रविर्नान्दनी का नीर बाजै चलत पवन सुमसररररर भौंरा उडत भुम भननन ॥ पनघट अँगनाकी सुरति बिसरगई आगे सब पक्षी प वन चकृतभये बाँसुरीबजाय ब्रजनारी सब मोहिलई घुंघुरू करत घुमघनननन ॥ राधा देती तारी ताल मोगरा चमेलीकी गुलाब सेवतीकी माल कहत बरेली वालो लालदास कृष्णपद पायल बजत छुमछननन नचत कृष्ण गोपी ॥

इति श्रीनृत्यकृतरासविलास बाबू श्यामलाल बाजपेयी विरचित संपूर्ण ।

अथ श्रीकृष्णजन्मबधाई ।

रागआसावरी—ब्रजभयो महरिके पूत तबै यह बता सुनी॥सुनी आनन्दे सब लोक गोकुल गुनित गुनी । अति पूरव पूरे पुण्य रूप कुल अटलथुनी। ग्रह लग्न नक्षत्र बल शोधि कीन्ह वेदधुनी । धुनि सुनि धाई ब्रजनारि सहज शृँगार किये । तनुपहिरि नूतन

चीर कज्जल नयन दिये। कसिकंचुकि तिलक लिलार शोभित हारहिये। कर कंकण कंचनथार मंगल साजलिये। शुभ श्रवणनि तरल तरवना वेणी शिथिलगुही। सुखवर्षत सुमन सुदेश मानों मेघ फुही। उर अंचले उड़त न जानहिं सारी सुरंग सुही। मुखमंडित रोरी रंग सेंदुरमांग छुही। ते अपने अपने मंदिरसे निकसी भाँति भली। मानो लाल माणिन की पाती पिंजर चूरि चली॥

वार्तिक।

अरीवीर! तैंने कछु सुन्योहै; हम्वैभैना नेककहौतौ सही; अरी भैन यशोदाने ढोटा जायोहै हम्वेवीर! सबनको बोलै वधावा लेकरचलैंगी॥

मंगल।

कृष्ण जन्म जब भयो बधावा लेचली। गावत मंगलचार तहाँ हमहूं चली॥ लेचल तेलिनि तेल तमोलिनि बिरवा॥ मालिनि ले चल हार कन्हैयाको जन्म भयो॥ धन्य यशोमति भाग्य धन्य वहि रोहिणी। धन्यरी भादोंकी राति कृष्ण जीको जन्म भयो। हैं नंद द्वारे ठाढ़े लुटावैं संपदा। याचक भै हैं निहाल अयाचकहोय चले॥ धन्य यशोदा भाग्यजो गोद खिलावहीं॥ हुलस हुलस जीया होय तो क्षीर

पियावहीं ॥ जे यह मंगल गाव औ गाय सुनावहीं ॥
सूरदास बलि जाऊँ परम फल पावहीं ॥ १ ॥

गुण गावत मंगल गीत मिलि दश पंच अलि। मानो भोर भये रवि देखी फूली कमलकली। पियसे पहिलहि पहुँचीं जाइ अति आनंदभरी। लई भीतर भवन बुलाय सबै शिशु पाँयपरी। इकवदन उघारि निहारे देहिं अशीश खरी। चिरंजीवो यशोदानंदन पूरण कामकरी। धनि धन्य महरिकी कोखि भाग सुहागभरी जिन जायो ऐसो पूत सबै सुख फलनि फरी। थिर थाप्यो परिवार सबनकी शूल हरी। सुनि ग्वालिन गाय बहोरि बालक बोलि लये। गुहि गुञ्जा घसि धातु अंगना चित्रठये। शिरदधि माखनमाट गावती गीतनये। कर झाँझ मृदंग बजावत आनंदभवन गई। मिलि नाचत करत कलोल छिरकत हरदिदही ॥

(रागकान्हरा) गोपी गावहिं मंगलचार बधावो ब्रजराजके। अब भयो अमर सब काज बधावो ब्रजराजके। बहुत नारि सुहाग सुन्दरी और गोपकुमारि। सजन प्रीतम नाऊँ लै लै देहि परस्पर गारि। आनंद अतिशय भयो घर घर निर्त्तत ठाँवहिं ठाँवहीं। मानों वर्षत भादोंमास नदी घृत दूध बही। जहाँ जहाँ चितजाइ कौतुक तहीं तहीं। सब आनंद मगनगोपाल काहू वदतनहीं। इक धाइ नँदनपै जाहीं पुनि पु-

नि पाँयपरैं । एक आप आपही मांझ हँसि हँसि अंक-
भरै । यक चन्दन सकल उतारि देत नहिं शंककरै । य-
क दधि अरु दूध सबनिके शीशधरैं । तब न्हाइ नन्द
ठाढे भये अरु कुश हाथ लिये । घसि चन्दन चारु मँगाइ
विप्रन तिलक किये । नांदीमुख पित्र पुजाय अंतर शो-
चहरे । गुरुजन द्विज पहिराय सबनिके पाँयपरे । गइ-
यां गनी नजाहिं तरुणि सवत्स बढी । ते चरहिं यमुनके
कच्छ दूनेदूधचढी । खुर तांबे रूपे पीठ सोने सींग मढी ।
ते दीन्हा द्विजन अनेक हरषि आशीष पढी । सब अप-
ने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलिलये नन्दद्वारे भेंटलैलै
उमड्योहै गोकुलगांवये । साथिये श्यामा देहिंद्वारे सा-
तसीक बनाय । नवकिशोरी मुदितह्वैह्वै गहति य-
शोदाजूके पाँय । चौकचंदन लीपके आरतीधरी सं-
जोय । कहति गोप कुमारि ऐसो आनंदजो नितहो-
य ॥ करिकरि अलंकृत गोपिका पहिरे अभूषण चीर ।
गाय वत्स सँवारिल्याये ग्वालनिकी भईभीर । मुदित
मंगलसहित लीला करहिं गोपीग्वाल । हरद अक्षत दूब
दधिदै तिलक करहिं ब्रजबाल । एकहेरी देहिं गावहिं
एक भेंटहिं धाय । एक एक न गनत काहुहि एक खे-
लावत गाय । एक वृद्ध किशोर बालक एक यौवन यो-
ग कृष्णजनम सु प्रेमसागर क्रीडत सब ब्रजलोग ।
प्रभुमुकुंदके हेत नौतन होहिं घोष विलास । देखि ब्रज-

की सम्पदाको फूलेहैं सूरदास ॥ मथि मृगमद मलय कपूर सबनिके तिलकदये । उरमाला पहिराय वसन विचित्र ठये । दान मान परिधान पूरण काम किये । वर मागध बन्दी सूर आँगने भवनभरे । ते बोलहिं लैलै नाम कोऊ न बिसरिपरे ॥ जिनि जो याचेउ जाय रसनंदरायलेरे।मानों वरसत मास अषाढ दादुर मोररेंं । तब अम्बर और मँगाय सारी सुरंगघनी । तेदीन्ही बधुनि वुलाय जैसी जाहिबनी । अति अनन्दते बहुरी निजगृह गोपघनी । निकसी देत अशीष रुचि अपनी अपनी घर घर भेरि मृदंग पटह निशान बजे । तबबांध्यो बन्दनवार ध्वजापर कलशसजे । ता दिनते लोग सुख संपति न तजे । कहिसूर सबनिकी यह गति जे हरिचरण भजे ॥

वार्तिक नाइन नाऊकी ।

सुनियोजी हौं एक बात नई सुनि आई; अरीहम्बैकहितौसही ! अहो यशोदाने ढोटो जायोहै, हम्बै ! मेरे भाग्य खुलगये. नंदके पचासी बरसकी उमरमें ढोटाभयो बडो आनंदभयो अबतो मनमाने सोलेऊँगो, अबतो मन माने सोलेउँगो अबतो मनमाने सो लेउँगो ॥

पद ।

हों इक नई बात सुनि आई । महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर होत बधाई । द्वारे भीर गोप गोपिनकी महिमा

वरणि नाजाइ। अतिआनंद होत गोकुलमें रत्न भूमिनिधिं छाई। नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीचमचाई।सूरदासस्वामी सुखसागर सुन्दर श्याम कन्हाई॥

वार्तिक।

(ढाढ़ी वचन)

नंदबाबा जी बधाई है बधाई है ॥

दोहा—श्रीमद्गुरु गोविंद पद, मंगलको कर ध्यान॥
मंगल श्री ब्रजराज घर, जो पाऊं सन्मान ॥

नन्दजु मेरे मन आनंद भयोहो गोवर्द्धनते आयो। तुम्हरे पुत्र भयोहो सुनिके अति आतुर ह्वैधायो। बंदी जन अरु भिक्षुक सुनि जहाँ तहाँते आये ॥ यकपहिलेही आशा लागी बहुत दिननिके छाये। ते पहिरे कंचन मणि भूषण नाना वसन अनूप। मोहिं मिले मारगमें मानौ जात कहूँके भूप। तुमतो परम उदार नन्दजी जिन जो माँग्यो सो दीन्हो। ऐसो और कौन त्रिभुवनमें तुमसरि साटो कीन्हो। कोटिदेहु तो परेउ रहेगो बिनदेखे नहिं जैहौं। नन्दराय सुनि विनती मेरे तबहिं विदा भले ह्वै हौं। दीजै वेगि कृपाकरिमोको जोहौं आयो माँगन। यशुमति सुत आपने पाँयन चलि खेलत आवै आँगन॥ १॥

मैं हूं घरको ढाढ़ी यहिते मोसरी करै नआन। सोईले हौं जोई मनभाई नन्दमहरकी आन। धन्यनन्द धनि

धन्य यशोदा धनि धनि जायो पूत। धन्य तुम ब्रजवासी धनि धनि आनँद करत अकूप। घर घर होत अनँद बधाई जहँ तहँ मागधसूत ॥ मणि माणिक पाटम्बर अंबर लेत नबनतबहूत। हय गय सहस्रभंडार दिये सब फेरि भरे सौभाँति। तबही देत तबहि फिर देखत संपति घर न अमाति। तेमोहिं मिले जात घर अपने मैं बूझी तबजाति।हँसि हँसि दौरि मिले अंकमभरिहम तुम एकै ज्ञाति। सम्पति देहु लेहु नहिं एको अन्न वस्त्र केहि काज॥ जो मैं तुमसों माँगन आयो सोई लेहों नन्दराज ॥ अपने सुतको वदन देखावहु बडेमहर शिरताज। तुम साहिब मैं ढाढी तेरे प्रभु मेरे ब्रजराज। चंन्द्रवदन दरशन संपतिदे सो लेके घर जाउँ ॥ जो संपति सनकादिक दुर्ल्लभ सो सब तुमरे ठाउँ। जाको नेति नेति नितगावत तेइ मंगल पद ध्याऊं। हौंतो तेरे जनम को ढाढी सूरदास मोनाऊं ॥

भाँडबधाई–रागकाफी।

बाजे बधाइयां वे नंददेदरबार ॥ हुआसुत सोहना वे मनदा मोहना सुकुमार ॥ आइ सुनि गोपियाँ वे हिलमिल गावती खुशियाल ॥ जुरे सब लोक मंगलहो गुणी गुण बोल दैदैताल॥गुणी दैदै ताल नाचैं॥ बाबा जी ॥ आँगन यह पटनाचै ॥ बाबा जी ॥ नंदका लालाजीवौ ॥ बाबाजी ॥ दुधा अमृत पीवौ ॥ बाबा जी ॥ खुशीदिलपा मारुमा ॥ बाबाजी ॥

लालादो तूनीचूमा ॥ बाबाजी ॥ देउ सदा मंगल गावा ॥ बाबाजी ॥ दान दुपट्टा पावा ॥ बाबाजी ॥ पट दान मोती वे जामा दिल फुल दै घर माँह। असा डा हत्थटोड खो बाजुबंद झुलदे बिच बाँह ॥ तुझ पर घोलियां वो यशोदा बोलियां दै सुनाय धनि धनि आजदा दिन वोदै दीदान क्योंन मँगाय ॥ महरने दान मँगाया ॥ बाबाजी ॥ कंचन झर बरसाया ॥ बाबाजी ॥ है बड़ भागिन तूरी ॥ बाबाजी ॥ करी मुरादा पूरी ॥ बाबाजी ॥ बीच खुशी दिब गोद मंगल मुखी तुसाठे ॥ बाबाजी ॥ जनम जनम गुण गावा ॥ बाबाजी ॥ नगर दर्शन पावा ॥ बाबाजी ॥

नकल ढाढी व गान।

मोहि नंदघर लै चलौ ढाडिनियां मचलरही ॥ टेक ॥ पुत्र भयो सब जगने जानौं तैंने मोसे नाय कही ॥ मोहिं मिलैगो नख शिख लौ गहनो लाऊं तौ बातसही। जरदोजी के वस्त्र मिलैंगे फरिया चोलि नई ॥ कृष्णजिवन बिन सब जग सूनो जिन मेरी बाहिंगही ॥ नक्कल गोपसभामें आये भावडे सबकी नकल बनावै। जैसो जाको होवै मौडो ताको ताहि दिखावै ॥ नंदके आनंद भये जय कन्हैया लालकी ॥ हाथी दिये घोड़ा- दिये और दीनी पालकी ॥ नंदके आनंद भये जय कन्हैया लालकी ॥ शाल दिये दोशाल दियो वहभी नई

मोलकी ॥ नंदक आनंद भये जय कन्हैया लालकी ॥ पाट दिये पटम्बर दिये वहभी सवालाखकी । नंदके आनंद भये जय कन्हैया लालकी ॥ वहली और छकडे दिये वहभी नये हालकी । वाहवाजी वाहवाजी वाहवाजी वाहवाजी ॥

इति श्रीढाढीलीला समाप्ता ।

भाटबधाई नंद बाबाजी, बधाईहै बधाईहै ॥

कवित्त–विष्णु आज बालभयो लोकपाल पालभयो देवन कृपालभयो सुखमाको थालहै । मुनि मन भालभयो राधा उरमालभयो रूप तिहु लोक में सो ताल भव बिसालहै ॥ ग्वालकवि गौअन को अदभुत-ग्वालभयो गोपिन के नेहको सो भालभव विशालहै । ब्रज एक लालभयो यशुदाके बालभयो लालकेभयेसे नंदसुख खुश लालहै ॥

सूनौके परम पद ऊनौके अनंद मद नूनौ कर नदीश नद इंदुरा धुरैपरी ॥ महिमा मुनीशनकी संपदा दिगीशनकी ईशन की सिद्ध ब्रज बीच बिथुरे-परी ॥ भादौं की अँधियारी आधीरात मध्यके पथ आई मनोरथ देव देवकी दुरै परी ॥ पारावार पूरण अपार पारब्रह्म राशि यशुदा के पौर एक बारही कुरैपरी ॥ २ ॥

देवन को दुःखदंद देवकीको कटो फंद कंसमति

मंदकी जमींहै नीव कालकी ॥ ब्रज वासिनके हियेकी भईसो बातही पसंद रूपकी अमनराशि खुलपरी ख्यालकी ॥ ग्वालकविगौवनको कंदसुखछंद भयो मोहन वलवंदभयो मूरत रसालकी ॥ ब्रज एक चंद भयो यशुमति को नंदभयो नंद के आनंद भये जयकन्हैया लालकी ॥ ३ ॥

पूत सुपूत जन्यो यशुदा इतनी सुनकेवसुधासबदौरी। देवनको आनन्द भयो सुन धावत गावत मंगल गौरी। नंद कछु इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुकी मति बौरी ॥ मोहिं देखत ब्रजहिं लुटाय दियो न बची वछिया छछिया न पिछौरी ॥ ४ ॥

फूलगये गोप गृह गोपिनको भूलगये हुलसी मचाई माते प्रेमकी सरसाईमें ॥ कींच मची दधिकी अधिक गैल गैलनमें कीकन दे गई आनंदकी वधाईमें ॥ छोटीसी चोटी कछोटी कटि मोटी भई फैलगई थोन बड़े वेद की अर्वाईमें ॥ राजीदिलमोदन विनोदन बिहँस नंद नाचे आज आँगन कन्हाई की बधाइ में ॥ ५ ॥

॥ रेखता ॥

नाचत छली छबीलो नंदका कुमारहै ॥ गल बाहिं दे पियाके सुंदर शृँगार है॥ फूलन की गुथी वेणी शोभाअपार है॥ उत मंद मंद झीनी नूपुर अवाजहै ॥ उत पायजेब पायल घनकीसी गाजहै॥ कट काछनी स चोली पट

का किनारका ॥ दामिनसुरंग सेला कीरति कुमारका । गुंजा गले गुणीके तरु गुंजमालहै ॥ अँखियाँलगीं लला-ते बंशीरसालहै ॥ कानो जडाऊ झूमका गल हीर हारहै ॥ मोतिनकी माल सुंदर शोभा अपारहै ॥ पगियाकसी कुँवरके शिरपेच लालहै ॥ भ्रुकुटी लसी लगोहीं प्यारीके भाल है ॥ नासाबुलाकबेसरमाथेपै मुकुट सोहै ॥ प्यारी कि रेख नथपै रवि कोटि मदनमोहै ॥ दोनों झुके पर-स्पर छवि बेशुमारहै ॥ केशव खडा विलोकै प्राणन अ-धारहै ॥ इति श्रीजन्मवधाई संपूर्णा ॥

अथ महादेवलीलाप्रारम्भः ।

मैं योगी यश गायारे बाबामैं योगी यशगाया । ते-रे सुतके दर्शन कारण मैं काशीसे धाया । पारब्रह्म पू-रण पुरुषोत्तम सकल लोक जामाया । अलख निरंज-न देखन कारण सकल लोक फिर आया ॥ धनि २ ते-री भाग्य यशोदा जिन ऐसो सुतजाया । गुणन ब-ड़े छोटे मतभूलो अलख रूप धर आया । जोभावै सो लीजे रावरे करो आपनी दाया । देहु अशीश मेरे बा-लकको अविचल बाढ़ेकाया । नामैंलेहों पाट पटम्बर नामैं कंचनमाया ॥ मुख देखूं तेरे बालकको यह मेरे गुरुने लखाया । कर जोरे विनवै नन्दरानी सुन योगि-नके राया । मुखदेखन नहिं देहों रावरे बालक जात डेराया । काला पीला गौररूप है बाघम्बर ओढ़ाया ।

कहुं डायनकी दृष्टि लगे कहुँ बालक जात दिठाया।
जाकी दृष्टि सकल जग उपजै सो क्योंजात दिठाया।
तीनलोकका साहेब मेरा तेरे भवन छिपाया॥

महादेवकाध्यान।

दिलदां मेरा सामला यार दरश दिखाजा॥ टेक॥
जांघनि काछनि क्रीट पितंबर श्रवण कुंडलन शीश मोर
मुकुट घूंघरवाली अलकैं झलकैं नयनों में समाजा॥ बं-
शी ध्वनि यमुनातीर सुनत मन हो अधीर स्वप-
ने में दरश देत मेरे सकल दुख मिटाजा॥ जानकी
दास भयो उदास निकसत नाहीं पापी श्वास
साँवरी सूरत माधुरी मूरत मेरे हियमें समाजा॥ १॥
बोलत क्यों नहीं रे मिजाजी॥ टेक॥ शिर तेरे
ककरोली चीरा गल मोतियन की माल रे। हाथमें
दुधारा खाँडा मारता क्यों नहींरे॥ इश्कके दरियाव
पास खड़ा मुझे लगी प्यास प्रेमका प्याला तू पिलाता
क्यों नहींरे॥ ईस्ताब में व्याकुल शरीर दिलको नहीं
आती धीर करुणा नदी कटाक्ष में डुबाता क्यों
नहींरे॥ ऐसा दिलगीर सो बेपीर हो चुप रहा परमहंस
स्वामीके निकट आता क्यों नहीं रे॥ २॥

रागबिलावल।

काहू योगिया की लागी नजर मेरो बारो कन्हैया
रोवैरी॥ मेरी गली जिन आउ योगिया अलख

अलख कर बोलैरी ॥ घर घर हाथ देखावैं यशोदा बारबार मुख जोवैरी ॥ राई लोन उतारत छिन छिन सूर का प्रभु सुख सोवैरी ॥ १ ॥ नन्दद्वारे यक योगी आयो सिंगीनाद बजायो ॥ टेक ॥ शीश जटा शशि वदन सोहाये अरुण नयन छविछायो । रोवत खीझत कृष्ण साँवरो रहत नहीं दुलरायो ॥ लियो उठाय गोद नँदरानी द्वारे जाय दिखायो ॥ २ ॥

वार्तिक–अरी ललता व विशाखा चंपकलिता रंगदेवियो नेक देखियेतो सही मेरे लालाको कहा होयगयो कि ऐसो रोये खीझे है, हंवेवीर लालाको कहाहोगयोहै? अरीवीर! वो जो योगी आयोथो वाहिने कछुक टोनो करगयोहै हंवेवीर वाको टेरले हंवेवीरजाउहूं ॥

चलरे योगी नंदभवनमें यशुमति तोहिं बुलावै ॥ लटकत लटकत शंभू आवे मनमें मोद बढ़ावै ॥ सात बैर पैकरमा करके राइ नून करलीनो ॥ हाथ फेर लालाके ऊपर कछुक मंत्र पढ दीनो ॥ विथा हुई सब दूर बदनकी किलक उठे नँदलाला । सुखीहुई नंदजूकी रानी दीन्हीं मोतिन माला ॥ रहुरेयोगी नंदभवनमें हमपर कृपाजु कीजे । जबजब मेरो लालारोवै तब तब दर्शनदीजै ॥

वार्त्तिक ।

अरीयशोदा! नेक लालाकोलैयोतोसही दरशन करलें ।

ओं फेर कैलासकोजाउँगो॥ कृष्ण लालको लाई यशोदा कर अंचल मुख छाया। कर पसार चरणन रजलीनी सिंगीनाद बजाया। अलख अलखकर पायछुयेहैं हँसिबालक किलकाया। पाँच बेर परिकर्मा करके अति आनन्द बढ़ाया। हरिकी लीला हरमन अटक्यो चित नहिं चलत चलाया। अलख ब्रह्मके नायक कहिये नंद घरहि प्रगटाया। इन्द्र चन्द्र सूरज सनकादिक शारद पार नपाया। श्रवणनलाग मंत्रदीनोहँसि हँसि बालकमुसकाया। कौनदेशके योगीहो तुम कौन नाम धरवाया॥ कहाँवास यह कहत यशोदा सुन योगिनकेराया॥ तुमहीं ब्रह्मा तुमहीं विष्णु तुमहीं ईश कहाया। तुम विश्वम्भर तुम जगपालक तुमहीं सृष्टि बचाया॥ चिरंजीविहो महरि तिहारो हौं योगी सुखपायो। सूरदास रमि चला रावरो शंकरनाम बतायो॥

इति श्रीमहादेवलीलासंपूर्णा।

रेखता

हर एक तरफ़ चमन् में कैसी बहार छाई। चल देखिये छबीली गुलशन् की खुश नुमाई॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या मालती निवाई। फूलोंके भार सेती क्या नर्गिसी सुहाई॥ सखियन के संग में जाके देखी विपिन की शोभा। नागर नवल छबीली छबि देख मन लोभा॥ वेणी गुथी सुहावन क्या वेसरहु बनाई। हँस हँस ललित किशोरी उर कंठसे लगाई॥

अथ पाँडेलीला ।

रागधनाश्री–महराने ते पाँडे आयो ॥ ब्रज घरघर,बूझत नंदरावर पुत्र भयो सुनके उठिधायो ॥ पहुँच्योआय नन्दके द्वारे यशुमति देखि अनंद बढायो । पांय धोयभीतर बैठारेउ भोजनको निज भवन लिपायो ॥ जो भावै सो जेंवनकीजै विप्र मनहिं अति हर्ष बढायो । बडीबैस विधिभयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुतजायो ॥ धेनुदुहाय दूध ले आई पाँडे रुचिकरि खीर चढायो । घृत मिष्टान्न खीर मिश्रितकर परुसि कृष्णहित ध्यानलगायो । नयन उघारि विप्रजो देखे खात कन्हैया देखन पायो । देखहु आय यशोदा सुख कृत सिद्ध पाक यह आनि जुठायो ॥ महरि विनय करि दोउ कर जोरे घृत मधुपय फिरि बहुत मँगायो । सूरश्याम कत करत अचकरी बार बार ब्राह्मणहिं खिझायो ॥

रागरामकली–पाँडेभोग न लागनपावै । करिकै पाक जबहिं अरपतुहैं तबहिं ताहि छुइ आवै ॥ इच्छा करि मैं ब्राह्मण निवत्यो ताको श्याम खिझावै । वह अपने ठाकुरहि जेंवावै तू तबहीं छुइ आवै ॥ जननी दोष देति कत मोकों विधि विधान करि ध्यावै । नयन मूँदि कर जोरि नाम लै वारंवार बुलावै ॥ कहि अंतर क्यों होय भक्तको क्यों मेरे मनभावै । सूरदास बलि बलि ताकी जो जन्म पाय यश गावै ॥

रागबिलावल ॥ सफल जन्म हरि आजु भयो। धनि गोकुल धनि नन्द यशोदा जाके हरि अवतार लयो ॥ प्रगट भयो अब पुण्य सुकृतफल दीनबंधु मोहिं दरश दयो। बारंबार नन्दके आँगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो बिनजाने को जाने केहि बेष जयो। सूरदास प्रभुजगतहेत वश यशुमतिहित अवतारलयो ॥

इति श्रीपाँडेलीलासमाप्त।

रेखता।

मोहन पिय प्यारे टुक मेरे ढिग आव। वारी गई सूरतके बदन मो दिखाव ॥ तरसगए अंग अंग गरमें लपटाव। तेरी मैं चेरी मुझे मरन सों जियाव ॥ वही रूप वही अदा दीने जिन लाव। प्यारे हरिचन्दही फिर आज भी दरशाव ॥ १६२ ॥

अथ द्वितीय पाँडेलीला प्रारम्भ।

राग बिलावल।

पाँडे एक गोपाल उपासी। दिन देखन आवे ब्रजवासी ॥ यशुमति सुन्यो नग्रमें आयो ॥ न्योतो दे मंदिर पधरायो ॥ १ ॥ आसनदे बैठायो पांडे। तौलौ तुरत खटाए भाँडे ॥ चूल्हो चौका सुंदर कऱ्यो। सीधा सुंदर तहँले धऱ्यो ॥ २ ॥ चोखा चावल तुरत मँगाए। सुंदर दारि करे मनभाये ॥ मेवा मिश्री उज्ज्वलखरी। घीकी ले गागारि भरिधरी ॥ ३ ॥ बहुरो सामग्री सब आ-

नी । तेल फुलेल तपायो पानी ॥ पाँडे न्हाय पाकको सरक्यो । चौका देखतही मन हरष्यो ॥ ४ ॥ भाग्य बडो आयो यह नगरी । नंदरायके नौनिधि सगरी ॥ जाके यशुदासी ब्रजरानी । सरधासों सामग्रीआनी ॥ ५ ॥ इनके आजु गोपाल जिवाऊँ ॥ तापाछेहूं जूठनि पाऊँ ॥ पाँडे पहले पूजा ठानी । जैसे पंचरात्रि विधिजानी ॥ ६ ॥ छत्र चमर सिंहासन छाजे । बालमुकुंद श्री तहां विराजे ॥ भाउ भक्ति उर अंतर आने । करि षोडश उपचारहिजाने ॥ ७ ॥ खारिक दाख खोपरा केरा । दधिकी वस्तु अमिरती पेरा ॥ पेठा गोदातिनगनीमांगी । चारु चिरोंजी मिसरी पागी ॥ ८ ॥ अंब खाँड खरबूजे आये । बालभोगको महारि मँगाये ॥ माखन मिश्री पहले धरयो ॥ ता पाछे भोजन को करयो ॥ ९ ॥ तुरत रसोई कीनी पाँडे । लुचई लपसी घेवर माँडे ॥ पुवा पाक पूरी करि लीनी । पापर बरी कचौरी कीनी ॥ १० ॥ सेव लड्डुवा खरे विराजे । दही बड़ा अरु खुरमा खाजे ॥ मोदक हरिके मोद बढावे । यादव नित्त भोरही पावें ॥ ११ ॥ फेनी अति उज्ज्वल उत्तागी । मिसिरीके बूरामें पागी ॥ पाँडे तुरत जलेबी जाई । सघन शीत सीरेमें प्याई ॥ १२ ॥ मालपुआ अरु मनहर गोटा । मीठे मीठे सदलसे मोटा ॥ गोविंदभट्ट कोई से कीने । डाला सेव घने रँग कीने ॥ १३ ॥ हँडिया बहुत दुधकी

कीनी । मिसरी मिरच सुहाती दीनी ॥ महरि बोलि-
के आदर दीनो । अहो पाँडे कछु लेनको कीनो ॥१४॥
बरे चारि भाँतीके सीजे ॥ राई कढ़ी दही में भीजे ॥ बे-
सनके सालन बहु कीने ॥ सरस किये अरु कढ़िमें दी-
ने ॥ १५ ॥ तीनि भाँतिके किये करेला । तुरई ढेंढस औ-
र मुरेला ॥ भाजी भावक कोरे तरे । दूध माँडके सुं-
दर खरे ॥ १६ ॥ बथुआ साग दहीमें दीनो । पोई-
को खाटो करिलीनो ॥ आदो सोंठि चनाकी ताटी ॥
सबही भाँति भरहरी खाटी ॥ १७ ॥ कुंदमाँ परवर
घने सुधारे । बहुत मिरचदे घीमें तारे ॥ व्यंजन घ-
ने सूंगके भासे ॥ लौंग मिरच कर्पूरसों बासे ॥ १८ ॥ बा-
वन बेसन बनाई कढ़ी । जैसे पाक रसोई चढ़ी ॥ पहि-
ती करि अरु भात पसायो । सेर पाँच ले माखन ता-
यो ॥ १९ ॥ परम प्रवीण पाक करि लीनो । ब्रजराय-
को आयसु दीनो ॥ चोखा अरु बासोंधी लावे । सरब-
त सिखरन सबै मँगावै ॥ २० ॥ पनवारो परस्योहै सभू ॥
जेंवो जगजीवन मेरे प्रभू ॥ परोसे पाँड़े मनमें मोद ॥
यशुमति ले बैठी गिरिधर गोद ॥ २१ ॥ पनवा-
रे की रचना करी । बहुत भाँति दोना की धरी ॥
नींबू पाँच कागदी आने । दोना बीसक धरे
सँधाने ॥ २२ ॥ सबै सामग्री परोसी पाँडे । लुचई
लपसी घेवर माँडे ॥ अर्घ्य धूप दीपादिक दीनो ।

मूलमंत्र पढि सुमरन कीनो ॥ २३ ॥ आँखि मूँदि पट तिरछो दीनो । गिरिधर लालको सुमिरन कीनो ॥ पांडे ज्ञान ध्यान चितलायो । मोहन सरकि पाकमें आयो ॥ २४ ॥ विरसिर पनवारो गये । कौर चार विनु साने लये ॥ भायो सो वामें ते खायो । कछु इक मुख कछु उर लपटायो ॥ २५ ॥ अंतरपट ज्यों न्यारो धरे । बालक बैठ्यो भोजन करे ॥ पाँडे देखि रिसानो भारी । अहो यशोदा बाट कहा पारी ॥ २६ ॥ कौन सयान महरि तुम कीनो । लरिका पठै पाकमें दीनो ॥ हमरी सेवा अपरसकीजे । तब बालमुकुंदे भोजन दीजे ॥ २७ ॥ मैं करि सिद्धि रसोई धरी । क्षण इकमें इन जूँठी करी ॥ महरि सकोच हियेमों आन्यो । यह लरिका मैं जात न जान्यो ॥ २८ ॥ पालागें भाषो जिन ऊनो ॥ सीधो बहुत देउँगी दूनो ॥ चूल्हा चौका तुरत बनाऊँ । बासन और अनेक मँगाऊँ ॥ २९ ॥ अपने बालमुकुंद जिवाओ । ता पाछे तुम जूँठनि पाओ ॥ होहु प्रसन्न त्रास कह कीजे । यह लरिकाको दोष न दीजे ॥ ३० ॥ यह बालक मैं पुण्यनि पायो । करहु विप्र मेरो मन भायो ॥ मेरे एको बात न ऊनी । दक्षिणा बहुत देउँगी दूनी ॥ ३१ ॥ जबहिं नाम दक्षिणाको लयो । तब पाँडे शीतल ह्वै गयो ॥ पाँडे बहुरि पाक विस्तारे । मनमें श्रीगोपाल

विचारे ॥ ३२ ॥ आजु अबार भई मेरे प्यारे । पाक पत्र कीये सब न्यारे ॥ यह दो याम दिवस बढि आयो । बड़े प्रातही माखन खायो ॥ ३३ ॥ मैंहयां आनि दुखारे कीनो । बड़ी बार भइ भोजन दीनो ॥ शोचि पलक यों मनमें ठयो । अपरसह्वै चौका में गयो ॥ ३४ ॥ तुरत रसोंई कीनी पांडे । लुचई लपसी घेवर मांडे ॥ खीरसिंघाडे किये नियोना । मिसिरी कनी धरे बहु दोना ॥ ३५ ॥ व्यंजन और विचित्र बनाये । सागु व सबजी जीतक पाये ॥ सालन और बहुत करिलीनो । सबही मिरच अलसमों दीनो ॥ ३६ ॥ रोटीरवा चुपरिकै धरी । अरु द्वै चारि मुगेंनी करी ॥ हाउ भाउ करि भोग लगायो । टहेल करि हरि नाम बुलायो ॥ ३७ ॥ गिरिधर यशोमति गोदमें लयो । अंचल ढांपि वदन स्तन दयो ॥ श्यामें घंटा बाजत जान्यो । अति आवेस महरको आन्यो ॥ ३८ ॥ जब पांडे शंखोदक दयो । कोजाने क्यों भीतर गयो ॥ बिगासिर पनवारे गये । कौर चारि बिन सानेलये ॥ ३९ ॥ मोहन जब फेरयो पनवारो । आँखि उघारि कियो पट न्यारो ॥ भायो सो वामें ते खायो । कछुइक मुख कछु उर लपटायो ॥ ४० ॥ अंतरपट ज्यों न्यारो धरे । बालक बैठो भोजन करे ॥ पांडेदेखि रिसानेखरे । अहो महरितैं हम

खेलकरे ॥ ४१ ॥ द्विज चोडोलखांधि धरिलीनो । पनवारो हरिनामेंदीनो ॥ चल्योविप्र तजिकेजुरसोई । हयांब्राह्मण आये भ्रष्टबुद्धिहोई ॥ ४२ ॥ इन हमसों भ्रष्टता चलाई । मेंड मरयाद सबै मिटाई ॥ ब्रजके लरिकन ते अतिड-रों । याके भोजन कबहुँ न करों ॥ ४३ ॥ इनके याको जूंठोखैयो । ऐसी बात न हमपै पैयो ॥ यशुदा दौरि निहोरो करे । बार बार पाँयन शिरधरे ॥ ४४ ॥ अबकी बखसो मेरे पांडे । इन लरिकन हम बहुते भांडे ॥ उरहन जित तित हम सब लीने । इन लरिकन हम ना-हक कीने ॥ ४५ ॥ यशोदा जी की श्याम सब जानी । तब बोले सुंदर अमृत वानी ॥ अरि मैया मोहिं किते रिसावे । कहा करों मोहिं यहै बुलावे ॥ ४६ ॥ जा जनको मन देखों सांचो । ता जनतेहों खरोइ कांचो ॥ जनको जिवायो हूं जेऊं । जनको प्यायो पानी पीऊं ॥ ४७ ॥ जोजन कहै सोई हौं करों । जन कारण औरन सों लरों ॥ जनकी ढिग तजि कहूं नजाऊं । जन हित स्मृति विषम कहाहूं ॥ ४८ ॥ जन कारण युग युग वपु धरों । जोजन कहे सोइ हूं करों ॥ जन कारण मैं भारत मथ्यो । जन कारण हरणाकुश हन्यो ॥ ४९ ॥ जन कारण रावण संहारयों । जन कारण शंबरासुर मारयों ॥ जन हित निज परतिज्ञा टारी । जनहित त्रिया ताड़का मारी ॥ ५० ॥ कहां कहां जनहित ना करयो ।

जन कारण तुम्हरे अवतर्यो ॥ ऐसे मन मोहिं भावे मैया । ऐसोही तू नवल बलभद्रभैया ॥ ५१ ॥ सुनत वचन विस्मय भइ भारी । तब पांडे मन बात विचारी ॥ वेद पुराणनि लीला गाई । हूंजानत हों इने बनाई ॥ ५२ ॥ यह ब्रज यह नंद यशुदा माता । यह श्रीकृष्ण यह बलदेव भ्राता ॥ अक्षर पढ़े ब्रह्म जोरहें । तत्त्व वचन गर्गऋषि कहें ॥ ५३ ॥ ताऊपर श्रीकृष्ण अविनासी । सदा रहें इनके घरवासी ॥ पांडे कहे सो यशुदा जान्यो । यशुदा कहे सो पांडे मान्यो ॥ ५४ ॥ पाय प्रसाद मोद मन कीनो । जीवन जन्म सफल करिलीनो ॥ ह्वै प्रसन्न आशिषा सुनाई । माणिक मोती दक्षिणापाई ॥ ५५ ॥ माणिक मोती यशुदादीने । पांडे पसरि गोदमें लीने ॥ पांडे चल्यो आपनो गाऊं । लेकरि बालमुकुंदको नाऊं ॥ ५६ ॥ जो यह लीला सुने अरु गावे । सो हरि नाम परमफल पावे ॥ ५७ ॥

इति श्रीपांड़ेकीरसोईलीला समाप्त ।

रेखता ।

धीरे चलौ चमनमें क्या गुलबहारहै ॥ क्या खूबखरी रंगत बूबेशुमारहै॥ १॥रोसें किनार सबजी क्या बेलदारहै। सुर्खी सुहाग सुंदर शोभा अपारहै ॥२॥ चंपा तुरा जुही का क्या खुश विचारहै ॥ प्यारीकि नजर पड़ती फूल-नकि डारहै ॥ ३ ॥ गुंजा गुलाब गुलका क्या बेकरारहै ॥

दिल्दार यार बुलबुलके इंतिजारहै ॥ ४ ॥ देखे निकुंज कैसी सुंदर सुठारहै ॥ छज्जै बबुर्ज मेहदीके दर दिवार-है ॥ ५ ॥ देताहै मदन मुझको फूलनकि मालहै ॥ केशव कहैं किशोरी कीजै विहारहै ॥ ६ ॥

अथ श्री दधिमथन लीला ।

अहो दधि मथति गोपकी रानी ॥ टेक ॥ दिव्य चीर पहिरे दक्षिणको कटि किंकिणि रुन झुन वानी । सुतके गुण गावति अनंदभरि बालचरित जनि जानी ॥ श्रम जल राज बदन कमल पर मनहु शरद वरषानी । पुत्र सनेह चुचात पयोधर प्रमुदित अति हरषानी ॥ गोबि-न्द घुटरुन चलि आये पकरी लइ मथानी । अहो दधि मथति गोपकी रानी ॥ १ ॥ मोहिंदधि मथनदे बलिगई ॥ टेक ॥ जाउँ बलि बलि बदन ऊपर छांडु मथनी रई।लाल देहुँ नवनीत लौंदा आरि कित तुम ठई ॥ सुते हेतु विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई । ले उछंग लगाय उरसों प्राण जीवनजई ॥ बालकेलि गोपालकी व्रजआश करण नित नई । मोहिं दधि मथन देबालि-गई ॥ २ ॥ नंदजीके बारे कान्ह छांड़िदे मथनियां । बार बार कहै माता यशुमति नँद रनियां ॥ नेकरहो माखन देहों मेरे प्राण धनियां । आरिलाल जिन करो बलि गई हों न्योछनियां ॥ सुर नर मुनि जाको ध्यावैं

पावैं गति जानियां। सूरश्याम देखि सब भूलीं गोप धनियां॥ ३॥

वार्तिक—यशोदा वचन॥ अरे लाला मोहिं दधि मथनेदे देखु वह कैसो चंद्र दिखैहै॥

कृष्णवचन॥ हूं हूं॥ अरी मैया मैं चंदा लौंगा, हूं हूं॥

बार बार यशुमति सुत बोधति आउ चन्द तोहिं लाल बुलावे। मधु मेवा पकवान मिठाई आप खात पुनि तोहिं खवावे॥ हाथहि पर तोहिं लीने खेले नेक नहीं धरणी बैठावे। जलपुट आनि धरणि पर राखे गहि आन्यो वह चन्द्र दिखावै॥ सूरदास प्रभु हँसि मुसकाने बार बार दोऊ करनावै॥ ४॥ ल्योंगोरी मैया चन्द्रहि ल्योंगो॥ टेक॥ कहा करौं जलपुट भीतरको बाहिर लपकि गहोंगो। यहतो कलमलात जल महिंआ कैसे करजु गहोंगो। वह तो निपट निकट ही देखत बरजेहू न रहोंगो। तेरे प्रेम उदित भयो माता बौराने नाहिं बहोंगो॥ सूरश्याम कह कर गहि ल्याऊं शशि तनु ताप दहोंगो॥ ५॥

वार्तिक—यशोदा वचन॥ अरे लाला मनसुखा नेक इतैआ देख तो सही कि लाला कैसो चन्दाके लिये खीजै है याको चन्दालादे॥

मनसुखावचन॥ हम्बैमैया कलमैं गोवर्धनको गो चरावन जाऊंगो वहां बहुतसे चरैहैं दो तीन गोझेमें डार लाऊंगो॥

कृष्णवचन॥ हूं हूं मैं चन्दाही लूंगो॥

चंद्र खिलौना लेहौं मैया मेरी चंद्र खिलौना लेहौं॥

सुरभी को पय पान न करिहौं वेणी शिर न गुथैहौं ॥ मोतिन माल न धरिहौं उरपर झंगली कंठ न लैहौं ॥ जैहौं लोट अबै धरणी पै तेरी गोद नऐहौं ॥ लाल कहैं हौं नंदबबाको तेरो सुत न कहै हौं ॥ ६ ॥

वार्तिक–यशोदावचन ॥ अरे लाला नेक इतै तो आ मैं तुझसे एक बात कहूंगी ॥

कान लाय कछु कहै यशोदा दाऊ नाहिं सुनैहौं ॥
चंदाहूसे अति सुंदर तोको नवल दुलहिनी ब्यहिहौं ॥

वार्तिक–कृष्णवचन ॥ अरी मैया कै मोको चंदालादे कै मोको दुलहिनलादे ॥

यशोदावचन॥अरे लाला ना घरमें नंद बाबा हैं ना कोई बराती हैं ॥

तेरीसौं मेरीसौं मैया अबहिं बिवाहन जैहौं ॥ सूरदास सब सखा बराती युवतिन मंगल गैहौं ॥

यशोदावचन ॥ अरे लाला मैं तोसों एक कहानी कहूं हूं तू कान लगाकर सुन ॥

कृष्णवचन ॥ हम्बै मैया कहो ॥

यशुमतिलै पलिका पौढ़ावति ॥ टेक॥ मेरे आजु अतिहि बिरझानो यह कहि मधुर सुरनसों गावति ॥ पौढ़िगई आपुन हावे कारि अंग मोरि तब हरि जमुहाने । करसों ठोंकि सुतहि दुलरावति लट पटाय बैठे अतुराने ॥ पौढ़हु लाल कथा यक कहिहौं अति मीठी श्रवणनिको प्यारी ॥

श्रीकृष्णवचन ॥ अरी कह ॥

यह सुनि सूरश्याम मन हर्षे पौढ़गये हाँसि देत हुँकारी ॥ १ ॥ सुन सुत एक कथा कहों प्यारी ॥ टेक ॥ कमल नयन मन आनँद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुँकारी ॥ नगर एक रमणीक अयोध्या बड़े महल जहां अगम अटारी । बहुत गली पुर बीच बिराजत भांति २ सब हाट बजारी ॥ तहां नृपति दशरथ रघुवंशी जाके नारि तीनि सुखकारी । कौशल्या कैकयी सुमित्रा तिनके जनमत भे सुतचारी ॥ चारि पुत्र राजाके प्रगटे तिनमें एक राम व्रत धारी । जनक धनुष प्रण कियो जानकी त्रिभुवनके सब नृपति हँकारी ॥ राजपुत्र दोउ ऋषिले आये सुनत जनक पन तहां मगधारी ॥ धनुष तोरि मुख मोरि नृपनको जनकसुता तिनवरि वरनारी ॥ पग अंगुठा जब पीर नृपतिके तब कैकयी सुख बोलि निवारी । वचन मांगि नृपसों यह लीनों रघुपति कैअभिषेक सम्हारी ॥ तात वचन सुनि तज्यो राज जिन भ्राता घरनि सहित वनचारी । उनके जात पिता तनु त्यागो अति व्याकुल करि जीव विसारी ॥ चित्रकूट गये भरत मिलन वन पग पाँवरि देकरी कृपारी । युवती हेतु कपट मृग मारेउ राजिव लोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरण कियो सीताको सुनि करुणामय नींद निवारी । सूरश्याम तब रटत चापको लक्ष्मण देहु जननि भ्रम भारी ॥ १ ॥

इति श्रीदधिमथनलीला समाप्ता ।

रेखता ।

महबूब खूब प्यारे चेटक चितै कियो है । सोहै बसंती चीरा छबिपेच ललित हीरा झूमै अधरकी मोती अद्भुत छबी दियोहै ॥ चलता अजूब चालैं लोचन अरुण तलालैं जोवन जुलुम बिहारी टोना स क्या कियोहै । घूमत फिरैं दिवाने साधू सबै लुभाने नयनों जड़ी खुमारी प्याला प्रेमका पियोहै ॥ १ ॥

अथ प्रभातलीलाप्रारम्भ ॥

मोहन जागि हों बलिगई । ग्वाल बाल सब द्वार ठाढे बेर बनकी भई ॥ पीतपट करि दूर मुखते छांडिदे अरसई । अति अनन्दित होत यशुमति देखि द्युति नितनई ॥ जागे जंगम जीव पशु खग और ब्रज सबई । सूरके प्रभु दरश दीजै अरुण कीरण छई ॥ १ ॥ जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई । उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर घटो प्रगटे सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनँद कंद गगन चंद मंद मंद प्रगटयो आकाशभानु कमलनि सुखदाई । सिंगी सब पुरतवेनु तुमबिना नछुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुन्दर बरराई ॥ मुखते पट दूर कियो यशुदा को दरश दियो अरु दधि सब मांगि लियो विविध रस मिठाई । जेवत दोउ राम श्याम सकल मंगल गुण निधान थारमें कछु जूंठरही सु मानदास पाई ॥ २ ॥

कृष्णवचन ॥ मैया नेक माखनदे ॥

माखन तनिक देरी माय ॥ टेक ॥ तनिक करपर तनिक रोटी माँगत चरण चलाय ॥ कनक भुवपर तनिक रेखा करन पकरे धाय। कंप्यो गिरि अरु शेष शंक्यो दाधि हेतु अकुलाय ॥ मेरे मनके तनिक मोहन लागे मोहिं बलाय। तनिक मुखपर तनिक वतियां बोलतहैं तुतराय ॥ यशुमतिके प्राणजीवन धन लियो उर लपटाय। नन्द कुँवर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥ ३ ॥ कहनलागे मोहन मैया मैया ॥ टेक ॥ बाबा कहत नन्दराईसों अरु हलधर-सों भैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया। परमानन्ददासको ठाकुर ब्रज जन केलि करैया ॥ ४ ॥ कमल नयल हरि करो कलेवा ॥ माखन किसामिस उज्ज्वल मिश्री खुरमा गरी बदाम। सफरी सेव छोहार सिंघारे जे खरबूजानाम ॥ अरु मेवा बहु भाँति भाँतिके षटरसके मिष्टान। सूरदास हँसिकरयो कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥ ५ ॥ सिखवत चलन यशोदा मैया ॥ हरबरात कर पाणि गहावति डगमगात धरणीधर पैया ॥ कबहुँक सुन्दर वदन विलोकति उर अनंद भरि लेत बलैया। कबहुँक बलको टेरि बोलावति यहि अँगना खेलहु दोउ भैया ॥ सूरदास स्वामी सुखसागर अति प्रताप बलकत नंद-रैया ॥ ६ ॥ मैया मोहिं बड़ो करि लेरी। दूध दही घृत

माखन मेवा जब मांगों तब देरी ॥ कछू हौस राखहु जिनि मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचेरी । होहुँ सबल सब हिन महँ जैसे सदा रहों निरभेरी ॥ रंगभूमि महँ कंस पछारों घीसि बहाऊं नेरी । सूरदास स्वामी की लीला राख्यों मथुरा जेरी ॥ ७ ॥

यशोदावचन ॥ अरे लाला खेलिआ ॥

कृष्णवचन ॥ खेलन अबमेरी जाय बलैया । जबहीं मोहिं देखत लरिकनसँग तबहिं खिजत बलभैया ॥

यशोदावचन ॥ अरे वह तोसों कहा कहे है ॥

कृष्णवचन ॥ कहत तात वसुदेवको जायो देवकी तेरी मैया । मोललयो कछु दै वसुदेवहि करि करि यतन बड़ैया । अब बाबा कहि कहत नन्दसों यशुमति सों कहै मैया ॥ ८ ॥

यशोदावचन ॥ हम्बै आ लाला मैं तोपे चटर मटर होय जाऊं आनेदे बलको देखु कैसा बनाती हूं ॥

इति श्रीप्रभातलीला संपूर्णम् ।

अथ हाऊलीलाप्रारम्भः ॥

वार्तिक—यशोदावचन ॥ अरे लाला दूर खेलने नहिं जैयौ ॥

कृष्णवचन ॥ च्यों मैया (य० व०) हाऊ आय जायँगे (कृ० व०) तो वह क्या करेंगे ॥

यशोदावचन ॥ कानकाटलेंगे ॥

कृष्णवचन ॥ हम्बै मैया नहीं जाऊंगा ॥

दूरि खेलने जनि जाउ ललन मेरे हाऊ आयेहै। तब हँसि बोले कान्हरि मैया इनको किन्हे पठाये॥ यमुना के तट धेनु चरावत जहां सघन बनझाऊ॥ पैठि पताल व्याल गहि नाथ्यों तहां न देखे हाऊ॥ अब डर-पत सुनि सुनि ये बातैं कहत हँसत बलदाऊ। सप्त रसातल शेषासन रहि तब की सुरत भुलाऊ॥ चारवेद लैगयो शंखासुर जल में रहेउ लुकाऊ। मीन रूप धारि कै जब मारेउँ तबहिं रहें कहँ हाऊ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदिर जलहि खसाऊ॥ जब हिर-णाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरबाऊ। धरि वाराहरूप रिपु मारेउ लै क्षिति दन्त अगाऊ॥ विकट रूप अवतार धरेउ जब सो प्रहलाद बताऊ। धरि नृसिं-ह जब असुर विदारेउ तहां न देख्यो हाऊ॥ वामन रूप धरेउ बलि छलि कर तीन परग वसुधाऊ। श्रम जल ब्रह्म कमंडलुराख्यो दरशि चरण परसाऊ॥ मारेउ मुनि विनहीं अपराधहि कामधेनुलै आऊ। इक-इस वार क्षत्रिविन भू की तहां न देख्यो हाऊ॥ राम रूप रावण जब मारेउ दशशिर बीस भुजाऊ॥ लंक जराय क्षार जब कीनों तहांरहे कहँ हाऊ॥ माटीके मिस वदन बिकासेउ जब जननी डरपाऊ। मुखभी-तर त्रयलोक देखायो तबहुँ प्रतीत न आऊ॥ नृपति भीम सों युद्ध परस्पर तहँ वह भाव बताऊ। भक्तहेतु अ-

वतार धरेव सब असुरनिमारि बहाऊ । सूरदास प्रभु की यह लीला निगम नेति कहिगाऊ ॥

इति श्रीहाऊलीला समाप्ता ।

अथ प्रथम माखनचोरीलीला ॥

मैयारी मोहिं माखन भावे । जो मेवा पकवान कहत तू मोहिं नहीं रुचिआवे ॥ ब्रज युवती इकपाछे ठाढ़ी सुनति श्यामकीबात । मनमन कहति कबहुँ अपने घर देखौं माखन खात ॥ बैठेजाय मथनियाके ढिग मैं तबरही छिपानी ॥ सूरदास प्रभु अंतरयामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ १ ॥ गये श्याम तब ग्वालिनिके घर ॥ टेक ॥ देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर ॥ हरि आवत गोपी जब जान्यो आपुनरही छिपाय । मूनेभवन मथनियांके ढिग बैठिगये हरषाय ॥ माखन भरी कमोरी देखत लैलै लागे खान । चितैरहे मणिखंभ छांहतन तासों करत सयान ॥ प्रथम आजु मैं चोरी आयो भलो बन्यो है संग । आपु खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत का रंग ॥ जो चाहौ सब देउँ कमोरी अति मीठो कत डारत । तुमहिं देखि मैं अति सुखपायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुनि सुनि बात श्यामके मुखकी उमँगिहँसी सुकुमारी । सूरदास प्रभु निरखि ग्वालिमुख तब भजि चले मुरारी ॥ २ ॥ फूली फिरत ग्वालि मनमेरी । पूंछति सखी

परस्पर बातें पायो परेउ कछुक कै तेरी ॥ पुलकित रोम रोम गदगद मुख वाणी कहत न आवै। ऐसो कहा लहा सो सखीरी मोसों क्यों न सुनावै। तनु न्यारोजी एक तिहारो मारो हम तुम एकै रूप। सूरदास योंकहै ग्वालिनी सखी देख्यों रूप अनूप ॥ ३ ॥ राग गूजरी ॥ आजु सखी मणिखंभनिकटवीर जहँ गोरस की खोरी। निज प्रतिबिंब सिखावत यों शिशु प्रकट करै जिन चोरी ॥ अर्द्ध भाग आजुते हम तुम भली बनीहै जोरी। माखनखाहु कतहि डारतहो छांड़ि देहु मति भोरी। हिस्सा लेन सबै चाहत हौ इहू बात है थोरी। मीठो परम अधिक रुचिलागै तो भरिदेउँ कमोरी। प्रेम उमँगि धीरज न रहेउ तब प्रकटहँसी मुखमोरी। सुरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ द्वितीय माखन चोरी लीला।

ग्वालिनी घर गये श्याम सांझकी अँधेरी। मंदिर में गये समाय श्यामबदन लखि न जाय देह मेह रूप कहौ को कहे निवेरी ॥

(स० व०) अरी बीर ! देखुतो सही यह कौन मेरे घरमें घुसो है (स० उ०)चार भुजाका आदमी (स० व०) हम्बै सखी ! दिया बारले ॥

दीपक गृह दान करेउ भुजा चार प्रकट धरेउ देखत भई चकृत ग्वालिन इत उतको हेरी। श्याम हृदय

अति विशाल माखन दधि विंदु जाल मनमोहेउ नन्दलाल बालकही बेरी। युवती अति भइ विहाल भुजा देखि अंकमाल सूरदास प्रभु कृपाल डारेउ तनु फेरी। करसों कर लै लगाय महरि पगई लिवाय आनँद उरमें न समाय बातहै अनेरी॥ यशुमति तू देखि आनि आगेही ह्वै छपानि बहियां गहिल्याई कुँवर आनि है कि तेरो॥ अबलों मैं करी कानि सही दूध दही हानि अजहूं जिय जानि मानि कान्ह है अनेरो। दीप-कहौं धरेउ बारि देखत भुज भई चारि हारीहों धरति करति दिन दिन को झेरो। दिखियत नहिं भवन माँझ तैसोई तनु तैसी साँझ छलसों कछु करत फिरत मह-रिको जठेरो। गोरस तनु छीटिरही शोभानाहिं जात-कही मानों जल यमुनबिंब उडगणपंथफेरो। उरहन नहिं देहु काहि काहि तू इतनों रिसाय नाहीं ब्रजबासी सुत ऐसी विधि मेरो॥

वार्तिक अरी सखी तोय कछु दीखैहै कै नाहिं यह मेरो लालाहैकै काहूकी कुँवरि पकर लाई तेरी हीये कपारकी फूट गई अरी बीर ! मैंतो लाला ही को लाईथी बीचमें लाली होय गई तौ मैं क्याकरूं॥

यशुदा निरखे कुमार गोपी वरणे विहार भूली भ्रम रूप मानों आनि कोउ हेरो। मनमें बिहँसत गोपाल भक्तपाल दुष्टशाल जानेकोसूरदास चरित कान्ह केरो॥

इति द्वितीय माखनचोरी लीला समाप्त।

अथ तृतीय माखन चोरी लीला ।

वात्तिक–अरी वीर ! कबहुँ हमारेहु भाग्य होंगे कि श्री ठाकुरजी महाराज हमारे घर आवेंगे, अरी वीर ! तू उनका भजन उपासना करैगी तो वो क्यों नहीं आवेंगे ॥

सखीरी मोहिं हरि दरशनको चाउ । वा सांवरो सों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव । श्यामसुंदर कमल-लोचन अंग अंग नित भाउ । सूर हरिके रूप राची लाज रहे कै जाउ ॥ १ ॥

कवित्त ।

धेनु के चरैया भैया बलभद्र जूके नंद के ललैया तू हमारे घर आउरे । दही दूध बहुत प्याऊं माखन घनो सो लाऊं मीठी मीठी तान नेक गाय के सुनाउरे । याछबि ऊपर कोटि काम वारि डारों मंद मुसकाय मुख कमल दिखावरे ॥ मोर मुकुट पीताम्बर धारे दयासखी हिल मिल हिल मिल हिय रे लगाउरे ॥ १ ॥ आयो कर सांवरे इन गलियों में झूम झूम सांझ औ सबेर कभी दरश देखाया कर ॥ जायाकर यमुना पुलिन रोज रोज प्यारे बांसुरी अनोखी यक लहजे सुनाया कर ॥ कादर कहे छायाकर नयनों बीच मेरे आय रूखा सूखाथाल हम गरीबोंका पायाकर । खायाकर माखन मलाई दधि लूट लूट कर हाव भाव मेरे हियेमें

समाया कर ॥ २ ॥ चीरे की चटक औ लटक रवि कुंड-
लकी भौहौं की मटक मोहिं आंखन देखाउरे । जा-
दिन सुजान गुण रूपके निधान कान्ह बांसुरी बजाय
तनु तपत सराउरे । एहो वनवारी बलिहारीहैं तेरी आज
मेरी कुंज आउ नेक मीठीतान गाउरे । नंदके कि-
शोर चित चोर मोर पंखवारे वंशीवारे सांवले तू मे
री गली आउरे ॥ ३ ॥ युगताक्षर ध्यान रहे जिनको
तपसी तनु गारके खाक रमावे ॥ चारो वेद न पावत
भेद बड़े तिरवेदी नहीं गति पावै । स्वर्ग मृत्यु पातालहू
में जाके नाम लियेते सभी शिरनावे । चरणदास कहे
ताहि गोप सुता कर माखनदेदे नाच नचावे ॥ ४ ॥
शंकर से मुनि जाहि रटैं चतुरानन चारों ही आनन
गावै । जो हिय नेक सुनी नहिं आवत मति मूढ महा
रसखान कहावै । जापर देव अदेव भुजंगम वारत
प्राणन वार न लावे । ताहि अहीरकी छोहरियां छछि-
याभर छाछपै नाच नचावे ॥ ५ ॥ ब्रह्माहूके ध्यानमें न
आवें कभू एक क्षण शंकर समाधि लाय ध्यान धरत
गाढ़ेहै । ऋषि और मुनि जाको रैनि दिन धरैं ध्यान
ध्यानमें न आवै कभू तासों हेतबाढ़ेहै । सोई हैनिरं
जन जाकी माया को न आदि अंत ध्यानी ध्यान लाय
रहत सहत धूप जाडो है ॥ वहीनन्दवारो यशुमतिकोदु-
लारोकान्ह गोपिनको प्यारो नेक दधिकाज ठाढोहै ॥६॥

बंसी वारे तू मेरी गली आजारे । तेरे बिन देखे कल ना पड़त है टुक मुखडा दिखलाजारे ॥ चरणदास सुख देव दयासों मेरो हि माखन खाजारे ॥

वार्तिक-(प्र०) अरी ललता सखी (उ०) कहा कहो हो श्रीठाकुरजी महाराज (प्र०) गैयन पैसे आयेहैं वेर होयगई है भूख लगरही है नेक माखन होयतौ दीजो (उ०) आइये बैठिये विराजिये माखन लीजिये मिशिरी लीजिये जो चाहो सो लीजिये (प्र०) अरी सखी! यहतौ खट्टो है नेक और दीजो, लीजे-नेक और दीजो, अब एक बात पूछ लूंगी तब दूंगी, सखी पहले देदे पीछे एक बातके बदले दोबात पूछलीजो नहीं महाराज पहले पूछ लूंगी पीछे दूंगी. अच्छो खाते जायँगे और तू पूछती जाय, अच्छो लालजी महाराज! यशोदा मैया गोरी नंदबाबा गोरे बलदाऊ भैया गोरे तुम कैसे अँधियारी कोठरी के समान पैदा हुये, सुन सखी तेरी मा कारी तेरो बाप कारो तेरो भैया कारो तेरो ताऊ कारो तेरी सासु कारी तेरो ससुर कारो तेरो खसम कारो तू कैसी चंदाकीसी उजरी पैदाहुई है. जाउ महाराज अब नहीं दूंगी, अच्छो सखी देखलेंगे, अरी विशाखासखी! कहा कहो हौ श्रीठाकुरजी महाराज! अरी गैयन पैसे आये हैं भूख लगरही है नेक माखन हायतौ दीजौ, अजी श्रीठाकुरजी महाराज मेरी सासु साठि लोंदी गनके रख गई है तो उन मेंसे थोड़ी देदे; महाराज मेरी सासु लंडेगी, अच्छो ठगो यह सब माल चोरीमें जायगो, अरी चंपकलता! कहा कहौ हौ श्रीठाकुरजी महाराज! गैयन पैसे आयेहैं भूख लगरही है नेक माखन होयतौ दीजौ, महाराज मेरी तौ गाय उटक गई है बछरा छूट गयोथो श्रीप्यारीजीकें पाससे लेआओ. अच्छो ठगो जो प्यारीजीके पास लै आवैंगे तौ तेरो कहा एहसानहोगो, महाराज मैंने बताय दियो अजी श्री प्रियाजी! कहा कहोहौ लालजी महाराज! गैयन

पैसे आयेहैं भूख लगरहीहै जो नेक माखन होयतौ दीजौ, आइये बैठिये विराजिये माखन लीजिये मिसरी लीजिये जो चाहिये सो लीजिये ॥

राधासों माखन हरि माँगत। औरिनके मटकी को चाख्यो तुम्हरो कैसो लागत ॥ लै आई वृषभानुनंदनी सदलोनी है मेरी ॥ लै दीन्हो अपने करसों हरि मुख-खात अल्प हँसि हेरी। सबहिनसों मीठो यह दधिहै यह मधुरे सुर कहउ सुनाई। सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रज ललना मनभाई ॥

वार्तिक-अजी प्यारी जी नेक और दीजो ? अब नाचौगे गावोगे तब मिलैगो, अच्छो प्यारीजी ॥

आज नटवर नाचत संगीत ॥ विविध भाँत गत नई नई बजत मृदंग सरस भेदनसों तक्किट धुमकिट तक्किट तकाकिट, तकिधिलंग तक धुमकिट धिधिकिट धा धिधिकट धाधिधिकट, किटधा किटधा थेई थेई। तापर पगनूपुर धुनि बाजत थिर्रे थिर्रे थिङ थिङ निङ निङ निङ निङ निङ निङ निङ फिर चितवत आनन्द मई। अवलोकन मुसकान परस्पर दिग दिग दिग तान तान थो दिग दिग दिग तान तान थो दिग तान दिग दिग दिग दिग थेई थेई ॥ ८८ ॥

वार्तिक-जय जय श्रीठाकुरजी महाराज अब आप नाच चुके अबनेक गैयो तौ सही, जो हुकुम श्रीप्यारीजी ॥

साँवरो मुरली अधर धरे। नृत्यकरत छुम छननन नननन नटवर वेष करे। साँवरो मुरली अधर धरे। सारीगमपधनिसा धा धा धा धा निसा पा मा गामा रेसा गा गा गा गा गरे। साँवरो मुरली अधर धरे ॥ नृत्य करत छुम छननननननन । नटवर वेष करे॥

वार्तिक–जय जय श्रीठाकुरजी महाराज! बहुत अच्छो गायो, अब आपप्यारीजी गाइये अच्छो॥

चतुरँगरस गुणियन गाइये चतुरँग रस गुणियन गाइये॥ गाइये बजाइये सबनके आगे बड़े गुणनकी बातरे। चतुरँगरस गुणियनगाइये॥ सारी गमपधनिसा स स स मगा रेसा सारी गा मा पा रे सा ऐ चतुरँगरसगुणियनगाइये॥

वार्तिक–जय जय श्री प्यारी जी महाराज! खूबगायो,

इति तृतीय माखन चोरी लीला सम्पूर्ण।

अथ चतुर्थ माखन चोरी लीला।

वार्तिक–अरे मनसुखा मनसुखा! ओ लालजी महाराज! अरे इतै आइयो, कहा कहोहो श्रीठाकुरजीमहाराज! अरे सारेसुन एकबातकहें हैं, कहो श्रीठाकुरजी महाराज! चोरी करने चलैंगे, घासारे यह बात तौ मेरे बाप दादा से नहीं हुई अब जो करैंगे तौ यामें कहा होय है अरे सारे बड़े बड़े माल चुरावैंगे खायँगे फूल फूल कै कुप्पाहोयँगे पिटे तौ नाहैं, अरे सारे हाथ आय गए तौ पीटेहु जायहैं, तौ जा सारे हम नायें जायें हैं, अरे चलसारे पीटें नाँयजायगो, तौ पहलेवट करले; अच्छो सुन सारे, अरे नौबटकरैंगे आठ हम लेंगे एक तोकूं

देइँगे, जा सारे हम नाइजायहैं, अच्छो सारे, तू करले, चार वटकैंगे साढ़े तीन मैं लूंगो आधो तोकूं देंगे, जासारे, अच्छो नायँ जितनोमों सों खायो जायगो इतनो खायलौंगो बाकी बचैगो तौ लडकेबालों को लेतो आऊंगो.अरे तेरे लडके बाले कहां हैं?यह सब बैठेहैं, अच्छो पहले देख आ सखी सोतीहैं कै जागतीहैं, अच्छो महाराज ! काना बातु तू। कानावातु तू, अजी श्रीठाकुरजी महाराज ! कहाकहे है रे अजी श्रीठाकुरजी महाराज सब सखी सोतीहैं तौ अब चल छीं-अबतौं ना जाऊँगो, च्यों सारे, छींक हुई है, अच्छो सारे फिर देख आ, टिर फिस भैंयटेंय टेंय फुर्र, अरीसखी देखतो घरमें कौनहै और कहा गिरोहै, अरी वीर कछु नाय है सेवाकुंजको नकटा बंदर होगो, सारी सेवा कुंजको नकटा बंदर नाय है हौंतो तेरो खसमहूं धक बिडांग धक बिडांग हो हो हो, अरे सारे का भयो है श्री ठाकुरजी महाराज कछु पूछो नायँ, अरे कहुरे धक बिडांग २ मेरे पीछे पर गई है, अच्छो सारे फिर देख आव; अच्छो महाराज टिर फिस भेंय २अजी श्रीठाकुरजी महाराज, महाराज। बडो भारी शकुन भयोहै,कैसे, पहले जो मैं गयो थो तो वायें ओर से एक तीतरी यों क़ह रहीथी कि पिटैगो २ मैंने कह्यो मैंतो नहीं पिटौंगो तूही पिटैगी फिर मैं जो सुर साधिके गयो तौ दहिने ओर से एक तीतर यों बोलै है फतेहै फतेहै, मैंने जी में यों कह्यो कि मेरीतो सदाही की फते है, तौसारे चल, अच्छो चलो, झुनझुन, अजी श्रीठाकुरजीमहा राज! मैं तौ नाय चलोहूं, च्यों सारे, यह जो तुम्हारे पैरकी पैजनियां बाजै हैं तौ इनकी आवाज सखियनके कान में पड़ेगी सखियां जाग उठेंगी पकड जाउँगो तौ पिटौंगो इनको पहले उतार डारो, सारे दबाय रक्खौं गो, अच्छो चलौ।

माखन की चोरी रे दैया माखन की चोरी रे दैया०। तुम करन लगे चित चोरी रे दैया माखन की चोरी रे। तुम करन लगे बरजोरीरे। माखन की चोरीरे॥

समाजी वचन।

कवित्त–सखी कोई कहे नेक लाला नाचमेरे आगे नोन मिली छांछ दूंगी अच्छी सी घुआरकै। भोर भयो वाके गयो वासों मोसों वैरभयो धीगी सी गूजरियाने आय लियो धायकै। खिर्क सब तोड डारे बासन् सब फोर डारे दूध ढरकाय दियो बँदरा बोलायकै। नंदरानी मुसकानी कछू कछू सकुचानी सूरश्याम धाय लियो मूंडपै चढ़ायकै॥ २॥

योगी जन जाको ध्यानधरैं तपसी वन जाकर भस्म रमावैं॥ चारहु वेद लहैं नहिं भेद न शेष सहस्रन सों कहि आवैं॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक जाको ध्यान धरैं सो ध्यान् न आवैं। ताहि अहीरकी छोहरियां चुरुआभर छांछपै नाच नचावैं॥ रेदैया माखनकी चोरीरे तुम करन लगे बरजोरीरे माखनकी चोरीरे। तुमसीखेहो बरजोरीरे माखनकी चोरीरे। दैया माखनकी चोरीरे॥ दोहा॥ योग ध्यान आवैं नहीं, यज्ञ भाग ना लेंय। ताको ब्रजकी गोपिका हँसि हँसि माखन देंय॥ दैया माखनकी चोरीरे तुम करनलगे बरजोरीरे माखनकीचोरीरे॥

वार्त्तिक–अरी सखी! कहा कहै है सखी, घरमें कछु भांडे गिरै हैं, अरी सखी देखले; अच्छो सखी. अरी सखी, कहाभयो। सखी मेरो तौ घर-

लूट गयो, कैसो, जितने दूध दहीके भाडे हैं फूट गये और दही दूधकी कीच मचरहीहै, अरी सखी मैंनेतौ संतोष करलियो, संतोषी सदा सुखी, अरे लाला मनसुखा तैंने दहीको दहीखायो भांडे कहा कियो अरीसखी ! भांडेतौ पेटमें गये, अरे दरिद्री तैंने भाँडेहू खाय डारे अरीसखी ! जितनो तेरे माखनमें स्वाद नहीं आयो थो, उतनो भाडों में स्वाद आयोथो, सो सखी याहीको पकरले अच्छो सखी, ऐसो मनसुखा भोरो है जो तू पकर लेगी 'पकड़ गयो' अच्छो अब दे दे, का सखी 'मटुका' 'कैसै सखी' 'गटुका' अरेदारीके मटुका, अच्छो सखी नेक सोय रहेने दे, अच्छो सोय रहु, अरे उठ मनसुखा भोर होय गयो है 'राम राम जपना पराया माल आपना, २ लाव सखी मेरी काठकी माला मारे भजनके ढ़ेर करौं; अरे दारीके पहले मटुका देदे, अरी सखी वही बात बतादे, कौनसी. अरी सखी तू कहती नहीं थी कि आउ लाला मनसुखा २ तोसों एक बात कहूंगी. अरे दारीके मैंने कहा कह्यो थो, अरी सखी तैंने नाँय कह्यो थो आलाला मनसुखा २ अपनी छोटी बहनकी सगाई करदूंगी सो करदे. ऐसो छैल हैना, सुन सखी ! दुनियामें चार हिस्सा खूबसूरती है उस में साढे तीन तौ मैंहूं और आधे म सारी दुनिया है. अरे दारीके मटुका दे दे अजी सब भाइयो लोगो देखियो तो सही याके यहां व्याह सगाई मत कीजो याके यहां सगाईम तो चोटी ब ै हैं और व्याहमें गलो बाँधैंगी; अरे दारीके अपने हिमाइती को बोलाव, मेरी हिमाइतिन तौ तूही है. अरे दारीके ठाकुरजीको बोलाव. अजी श्रीठाकुरजी महाराज २ अरे कहा कहैहै मनसुखा ! अजी ठाकुरजी महाराज वोजो वरसानें बारियोंको माखन चोर २ खायोथो सो मेरी चोटी बाँधरही हैं, तो सारेमैं कहा करूं, अरे सारे छुड़ायलै यहां कुटंत विद्या होरही है तौ सारे छूट आव अपने बलसे बड़ो चोर चोरके माखन

खायोहै, तेरी नानीको खायो है, सारे मैंने जो पहले कह्यो थो मैंने नायँ कह्योथो मैंनाय चलौं गो; अच्छो सखियाओ याको छोड़देव अपने मटका लैजाव ॥ इतिश्री चतुर्थ माखन चोरीलीला सम्पूर्णा ॥

अथ पांचवीं माखन चोरी लीला।

वार्त्तिक–अरीसखियो नंदगाम वरसाने होडिलवालियो मैं परिक्रमाको जाऊँ हूं नेक मेरो घर दिखेरैहो, अच्छो सखी जो कोऊ आवैगो वाको मने ना करौंगी; अरी दारियो ऐसो ना कीजो जो कोऊ आवै वाको आवने मति दीजो. अच्छो सखी वैसेही करौंगी ॥

पद।

ब्रजवनिता वन करने कूं जाई ॥ श्रीयमुना विश्रांत नायके नीके नेमनिवाई ॥ मथुरा देवी दरशन करके महाप्रभू दरशाई ॥ १ ॥ मधुवन ताल कुदर बहुलावन सांतन कुंड में न्हाई ॥ राधाकुंड और कृष्णकुंडकी महिमा वरणि न जाई ॥ २ ॥ गोवर्द्धनकी दै परिकरमा मानसी गंगा न्हाई ॥ परमदयालु आदि बदरी साकरी खोर में आई ॥ ३ ॥ कामा काम कामना पूरण यह वन अति सुखदाई ॥ बरसाने वस नंद गामको कोकिला दाहिने लाई ॥ ४ ॥ बट संकेत खिद्रवन वसकर लीने चरण पुजाई ॥ शेषनाग छाया हरि दरशन जहाँ पौढे यदुराई ॥ ५ ॥ खेलन वन और चीर घाट पै नंदघाट दरशाई ॥ बलभद्र भांडीर सकल वन मानसरोवर न्हाई ॥ ६ ॥ कर विश्राम लोहवन बस कर बलदाऊ परसाई ॥ गोकुल और महावन कीन्हो नारदह्न ना

गाई ॥ ७ ॥ धन धन मथुरा धनि वृंदावन धन्य यशोदा माई॥ जिनकी महिमा को कवि वरणै प्रगटे कुवर कन्हाई ॥ ८ ॥ बारौ वन चौवीसौ उपवन लीला गाय सुनाई। सूरदास भगवंत भरोसे चित चरणनमें लाई ॥

वार्तिक–सखी वचन श्रीठाकुरजीप्रति–अजी श्रीठाकुरजी महाराज कहा कर रहेहो, अरी सखी कछु नायँ कर रह्योहों दहीमें चींटियां ह्वै गई सो निकारि रह्योहों ? अच्छो महाराज ! तुम्हारे मुखारविंद म दही कैसो लग्यो है; अरी सखी वंदरों ने छीके पर सों जो दही गेरो वाकी छींटी पडगई. अच्छो महाराज! मुख में कैसी दही कीसी वास आवै; अब महाराज मैंने आपको पकड लियो है अब मैं आपको नहीं छोडौंगी आपको बांधौंगी. अच्छो सखी बांध, अरी सखी तोको हाथ बांधनो आवतो नहीं मैं तोको बांधिकै देखाऊं हूं. तब सखीको हाथ बांधि अच्छी तरहसे माखन खायो इतने में सखी परिक्रमा करके आई ॥ ४ ॥

इति पांचवीं माखन चोरीलीला समाप्त।

अथ उरहिनो लीला।

वार्तिक–अरी सखी? कहा कहै है, अरी वीरचलौ श्रीठाकुरजीकेदरशन कर आवैं और यशोदा मैया पै उरहिनों दे आवैं ? हम्बै वीर चलो, अरी यशोदा २ यह कौन है मेरे पिछवारे पहरुआसी दे रही है! हम्बै वीर ! तेरे पिछवारे तौ नायहूं हौंतौ तेरे अगवारे, कहु बीर कहा कहे है! अरी तू अपनो गाम ले हम नायँ रहैं तेरे गाम ! च्यों वीर ! सुनु–

रागदेश।

रानीजू लीजिये यह गाम।

टेक ॥ एजी दीजै हमको विदा राम रामहै जो

हमारी॥ वस हैं अनतहि जाय बात लखि लई तिहारी॥ आपजुनाहीं नहीं करत हौ सुतको देहु पठाय ॥ तीस दिनाकी बात अहौ कहौ कैसे सहिये जाय॥ रानीजू० १॥ मेरे शिरपै बसो गाम काहेको छोरो ॥ श्याम आपनो जान मान लेहु मेरो निहोरो ॥ कहाजु तुमसों सुत कह्यौ मोसों कहि समझाय॥ मैं नहिं जानूं बात कछु कहौंजु सौगंधखाय॥ ग्वालिन गामको मति छांडो॥ २॥ काल्ह तीसरे पहर श्याम गये भवनन माहीं ॥ कीनों जो कछु ज्यान आवत मुखसों कहि नाहीं ॥ बछरा खोले खिरकसेहो बाँधनको नहिंजाय ॥ सखाभीरलै पैठो घर वह दूध दहीको खाय ॥ रानीजू० ॥ ३ ॥ कितनों खायो दही दूध लेओ करलेखो ॥ एजी चौगुण नौगुण सौगुण मोते लेहु विशेखो ॥ मांटभरे दधि दूधके चाखत घरमें नाहिं ॥ बडी भली यह बात जो वह पावत तुम घर जाहि ॥ ग्वालिन० ॥ ४ ॥ काहेकूं घरछिये जो लोंकहुँ मिलै परायो ॥ अपनो सुंदर माल काहुपै जात लुटायो ॥ आप खायतौ भलेहो मरकट देत खवाय । वे नहिं कोई चाखहीं तौ देय भूमि ढरकाय॥ रानीजू०॥ ॥ ५ ॥ ऊंचे छींके धरो क्यों नहीं दूध दहीको ॥ बीच अँधेरे सुघर ग्लालिनी मनकरि नीको ॥ रखवारीहू कीजिये हो अपने घर ब्रजनारि ॥ बरजो क्यों नहिं श्यामको तुम अब कहा कहौ पुकारि॥ ग्वालिन०॥ ६ ॥

एजी ऊखल पीठा धरै चढ़ै छेदै मटकीको ॥ दूध दही नवनीत खवावत खाततहीको ॥ मणिमय भूषण पहरके करत अँधेरो छीन ॥ कहांधरे हम बालकनवा पकरत हम दीन ॥ रानीजू० ॥ ७ ॥ अबलैओं कर पकर करूंगी जतनजु याको ॥ अपने घरही जाय सदा रहियो तुम ताको ॥ आज जानदेहु ग्वालिनी मोसों हों जुचिताय ॥ अब नहिं चोरी करैगो तुम रहौ जु धीरज लाय ॥ ग्वालिन० ॥ ८ ॥ बोले लालन माय नहीं जानत गुण इनके॥झूंठ लगावत दोष कहौं मैं कारन उनके ॥ कितमें है इनको जुघर मैं नहिं जानत माय ॥ उनमादीयोहीं फिरें यह तनक नहीं सरमाय- ॥ रानीजू० ॥ ९ ॥ गई ग्वालिनी घरन सबेरे पकडे लालन ॥ अब कहाँ जै हौ छूट बजावे तहांजु गालन ॥ कह्लाछांछ कियो दृगन रहि गई मीडत पान ॥ गुण मंजरी मनहू लियो नागर चतुर सुजान ॥ १० ॥

अपनोगांव लेहु नन्दरानी ॥ टेक ॥ बड़े बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढावति बानी । सखा भीर लै पैठत घरमें आपुखायतो सहिये । मैं जबचली समूहें पकरन तबके गुण कह कहिये ॥ भाजि गयो मोहिं दूरि देखकर मैं घरपौढी आई ॥ हौरे हौरे बेनी गहि पीछेसों बांधे पाटीलाई ॥ २ ॥

(य० व०) अरे लाला ये का कहे हैं॥

(कृ० व०) सुनुमैया याके गुण मोसों इन मोहिं लयो बुलाई। दधिमें परी सेतकी चींटीं मोपै सबै कढ़ाई। टहल करत याके घरकी मैं यह पतिसंगले सोई॥ सूरवचन सुनि हँसी यशोदा ग्वालिरही मुँहगोई॥

(ग्वा० व०) अरी वीर जो तू ढोटा की पक्ष करेगी तो हम गारी देंगी॥

(य० व०) अरी गारी जनि दीजियो गरीबिनीको जायोहै॥ यतो यतो ज्यान कियो सोतौ मोसों आन कह्यो दहीकी मटुकिया लै अँगनामें आन धरी तौल तौल लीजो जाको यतो यतो खायो है॥ गारी जिनि दीजियो गरीबनीको जायोहै॥ दश कातिक नौमाघ नहायों मैंने बड़ो सुकृत फल पायो॥ सूरदासयों कहति यशोदा बारंबारबतायो है॥

वार्तिक—(ग्वा०व०) अरी वीर तू दही के बदले दही देदेगी, दूधके बदले दूध देदेगी, लेहगोंके बदले लेहगों, फरियाके बदले फरिया देदेगी, चोलीके बदले चोली देदेगी, यह तौ तू सब देदेगी अरी वीर! यह जो मेरे कोमल कोमल से बदन चोंटे हैं याके बदले क्या देगी जब मैं अपने बापकी जब जहां जहां उसने मेरे एक एक जगह चोंट्यो है मैं चार २ बार चोंटलूंगी (य० व०) अरी वीर ऐसो ना कीजो—

रेखता।

सुनिये यशोदाकानदैअरजीयहीहमारी। हमछोंडिजायँब्रजकोमरजीयहीतिहारी॥ नितघाटबाटनटखटजेहरझडाकपटकै॥ बहियांमरोरैझटपटछातीसों

हारझटकै ॥ करकोपकरकन्हाई घूंघटसँभारखोलै ॥ ठोढीसोंकरलगाकैरसकीसीबातबोलै ॥ निजदृष्टिबाणकरकै भौंहें कमानतानै ॥ चोरीसिवायरसकेअरुवोकछूनजानै ॥ कोईसखीअकेलीघरमेंबगरमें पावै ॥ कसकैशरीरमसकैचोटैंदयानआवै ॥ हमबारबारतुमपैकरतीपुकारहारी ॥ तुमनेदयाहमारीकबहूंनहींविचारी ॥ कीजैकृपासितावीहमगोपकीकुमारी ॥ दीजैनिकासदेखूं कैसोहै रसिक विहारी ॥

ब्रज में कैसे बसैंरी माइ ॥ आस्ताई ॥ जहँ नित प्रति उत्पात करत है तेरो कुवँर कन्हाई ॥ भोरहि में सोवत अँगना में अचकहि आय जगाई ॥ उठरी सखी तोहिं द्वारे पै टेरत कोऊ एक लुगाई ॥ मैं तो द्वार पै देखन निकसी कोहै कहांते आई । पीछेते इन घर भीतर सों सांकर तुरत लगाई ॥ मैं बाहर ये भवन माहिं मन मानत धूम मचाई ॥ बासन फोरि तोरि सब छींके दधि गोरस ढरकाई ॥ यह कौतुक सुनिकै ब्रज वनिता निरखन को सब धाई ॥ हँसि हँसिके मिलि बूझत मोसों कहा लीला फैलाई ॥ भाँति भाँति की बोली बोलत जो जाके मन भाई ॥ मैं अपने मन कहूं नारायण यह कहा कुमति कमाई ॥

(ग्वा०व०) अरी यशोदा (य०व०) कहा कहे है वीर (ग्वा०व०) तेरो लाला मेरे घर गयोथो (य०व०) हम्बेतेरे घरभी गयोथो ॥

तेरोरी कन्हैया बलको मैयारी यशोदा मैया आज मेरे घर आयोरी मैया ॥ दधि मेरो खायो मटुकि मेरी फोरी रह्यो सह्यो ढरकायोरी मैया ॥ जो बरजौं तौ आँख दिखावै नेकौ नहिं सकुचायोरी मैया ॥ सूरदास कबलौं निबहौं मैं पूत अनोखो जायोरी मैया ॥

(कृ० व०) अरी मैया अभी याके घर गयो है (य० व०) च्यों लाला खायोहै-

(कृ०व०) मैयारी मैं नहिं माखन खायो ॥ भोर भयो गैयनके पीछे मधुवन मोहिं पठायो ॥ चार पहर वंशीवट भटक्यो साँझ भयो घर आयो । मैयारी मैं नहिं माखन खायो । मैं बालक बहियन को छोटो छींको केहिविधि पायो ॥

(य० व०) अरेलाला तेरे मुखमें दीखैहै-

(कृ० व०) ग्वाल बाल सब वैर परे हैं बरबश मुख लपटायो ॥ तू जननी मनकी अति भोरी इनके कहे पतियायो । यह ले अपनी कारी कमरिया बहुतक नाच नचायो ॥ सूरदास तब हँसी यशोदा लै उर कंठ लगायो ॥

इति उरहिनो माखनचोरीलीला सम्पूर्ण ॥

अथ यमलार्जुन लीला ॥

अरे लाला मोकों दधिविलोवनेदे-

दधि कैसेकै बिलोवै कान्हा गहि लीन्ही है मंथनियां ॥ छोटे छोटे हाथ पैर छोटीसी अँगुरियां ॥ छोटे छोटे

पग धरैं छोटीसी भुजनियां ॥ छोटे छोटे बाल सोहैं छोटेसे मुखारविंद नाकमें बुलाक सोहै पैर पैंजनियां ॥ सूरदास हरिके गुण गावैं ऐसे नँदरानियां—

(ग्वा० व०) अरी यशोदा तेरो दूध उफनाय रह्यो है ? हम्बै वीर ! देखूंहूं. अरे लालाने सब बरतन फोर डारचो है(य०व०) अरेदारीके मेरे पचासी वर्षको माट फोरडारचो—

ऐसी रिसमें जो धरिपाऊं ॥ टेक ॥ कैसे हालकरों धरि हरिके तुमको प्रगट दिखाऊं । सँटिया लिये हाथ नँदरानी थरथरात सब गात । मारेबिना आजु जो छांड़ो लागे मेरे तात । यहि अन्तर ग्वालिन यक औरै धरे बाँह हरिल्यावति । भ्रुकुटी मोरि मिरोरि गात निज रिसकै रोष जनावति ॥ भली महरि सूधो सुत जायो जानि जननि अभिलाष । सूरश्याम भुजगहे यशोदा अब बांधों कहिभाष ॥ १ ॥ बांधों आजु कवन तोहिं छोरे॥ टेक ॥ बहुत लँगरयो कीन्हीं मोसों भुजगहि रज्जु ऊखल सों जोरे । जननी अतिरिस जानि बँधाये चिते वदन लोचन जलधो रे । यह सुनि ब्रजयुवती सब धाईं कहति कान्ह अब क्यों नाहिं चोरे । ऊखलसों गहि बांधि यशोदा मारनको सांटी करतोरे । सांटी देखि ग्वालि पछितानी विकलभई जहँ तहँ मुख मोरे ॥ सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सुत बांधति माखन दधि थोरे । सूरश्यामको बहुत सतायो चूकपरी हमते यह भोरे ॥ २ ॥ महरि तू बड़ी कृपिणि री माई । दूध दहीहै विधिको दीनो सुत

डर धरत छिपाई । बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवर-कन्हाई । सोऊ तो घरही घर डोलत माखन खात चुराई । वृद्ध बैस पूरे पुण्यनते तैं बहुतै निधि पाई । ताहूके खैवे पीवेको कहाइती चतुराई । सुनहु न वचन चतुर नागरके यशुमति नन्द सुनाई । सूरश्यामको चोरी के मिस देखनको यह आई । कमलनयन माखनके कारण बांधे ऊखल लाई । जो संपदा देव मुनि दुर्ल्लभ स्वपन्यहुँदे न दिखाई । याहीते तू गर्व भरीहै घरबैठे निधिपाई । तब काहूको सुत रोवत सुनिकै दौरि लेति हियलाई । अब काहे घरके लरिकासों करति इती जड-ताई । बारंबार सजल लोचन भरि रोवत कुँवरकन्हाई॥

वार्तिक-(ग्वा० व०) अरी यशोदा तू लालाको छोड़देयतो तेरो नुकसान कियो हो सो मोपै से लैले (य० व०)जाउ दारियो बडी देनेवारी हुई पहले तो रोज २ उरहिनों लातीथी अब बोलती हौ मोपैसे लैले (ग्वा०व०) अरी यशोदा मैं तौ नहीं मानौंगी छोरदूंगी (य०व०) अरी तोकूं याही की सौं हैं जो छोरे ॥

कहाकरों बलिजाउँ छोरती तेरी सौंह दिवाई । जो मूरति जल थलमें व्यापक निगम न खोजतपाई । सो यशुमति अपने आँगनमें दै करताल नचाई ॥ सुरपालक सब असुर संहारक त्रिभुवन जाहि डराई । सूरदास प्रभु की यह लीला निगम नेति नित गाई॥ ३ ॥

ऐसी रिस तोको नँदरानी । भली बुद्धि तेरेजिय उपजी बड़ी बैस अब भई सयानी । ढोटा एक भयो

कैसेहुँ करि कौन कौन कर वर विधिहानी । कर्म धर्म करि अबलै उबरेउ ताको मारि पितर दे पानी । को निर्दयीरहै तेरे घर को तेरे संग बैठे अब आनी । सुनहु सूरकहि कहि पचिहारीं युवतीसबै घरन विरुझानी ॥ ४॥ हलधरसों कहि ग्वालि सुनायो ॥ टेक ॥ प्रातहिते तुम्हरो लघुभैया यशुमति ऊखल बांधि लगायो । काहूके लरिकहि हरि मारेउ भोरहि आनि रोवत गुहि-रायो । तबहीते बांधे हरि बैठे सो हम तुमको आनि जनायो । हम बरजी बरज्यो नहिं मानति सुनताहिं बल आतुर ह्वै धायो । सूरश्याम बैठे ऊखल ढिग माता डर तनु अतिहि त्रसायो ॥ ५ ॥ यह सुनिकै हलधर तहँ आये । देखि श्याम ऊखलसों बाँधे ॥ तबहीं दोउ लोचन भरि आये । मैं बरज्यो कइ बेर कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाये । अजहूं छांडहुगे लँगराई दोउ कर जोरि जननि पै आयो। श्यामहिं छोरि मोहिं बरु बांधो निकसत शकुन भले नहिं पायो । मेरो प्राणजीवनधन कान्हा तिनके भुज मोहिं बँधे दिखायो । मातासों कहा करों ढिठाई शेष रूप कहि नाम सुनायो। सूरदास तब कहति यशोदा दोउ भैया तुम एक ह्वै आयो॥ ६ ॥

(ब०व) अरी मैया तू मैयासी लगे है नहीं तौ मैं शेषावतार एक फुंकारमें पृथ्वीको भस्म कर डारौं ॥

निरखि श्याम हलधर मुसकाने । को बांधै को छोरै

इनको यह महिमा येही ये जाने । उत्पति प्रलय करत हैं येई शेष सहस मुख सुयश बखाने । यमलाअर्जुन तोरि उधारण कारण करत आप मन माने ॥

(व०व०) अरे लाला तोकों कौन बांधनेवालेहै और कौन छोरने वारोहै मैं जानूहूं तूने यह यमलार्जुनके उद्धार करनेके लिये बँधायो है सो इनका उद्धार करु ॥

असुर संहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत बाने । सूरदासप्रभु भावभक्तके अतिमाति यशुमति हाथ बिकाने ॥ ७ ॥हरि चितये यमला अर्जुन तन । अबही आजु इनहिं उद्धारों ये दोऊ हैं मेरेनिजजन । इनके हेतु भुजा बँधवाई अब विलम्ब नहिंलाऊं । परशकरौं दो तरुहि गिराऊं मुनिवर शाप मिटाऊं ॥ येसुकुमार बहुत दुख पाये सनकादिक सुतचारों । सूरदास प्रभु कहत मनहिं मन करबन्धन निरवारों ॥ ८ ॥ तबहिं श्याम एक बुद्धि उपाई । युवती गईं घरन जब अपने गृह कारज जननी अटकाई । आपु गये यमला अर्जुनतर परशत पात उठे झहराई । दिये गिराय धरणिदोउ तरुवर द्वै कुबेरसुत प्रगटे आई । द्वै करजोरि करतदोऊ स्तुति चारि भुजा तिन्ह प्रगट दिखाई । सूर धन्य ब्रज जनम लियो हरि धरणीकी आपदा नशाई ॥ ९ ॥ धनिगोविंद धनिगोकुल आये ॥ धनि धनि नन्द धन्य निशि वासर धनि यशुमति जिन गोद

खिलाये ॥ धनि वह बालि केलि यमुना तट धनि वन सुरभी वृन्द चराये । धनि यह समय धन्य ब्रज वासी धनि धनि वेणु मधुर धुनिगाये ॥ धन्य मूर ऊखलतरु गोविंद हमहिं हेतु धनि भुजा बँधाये ॥ १० ॥

वार्तिक-अरे तुम कौनहो? महाराज हम कुबेरके पुत्रहैं. तुम्हारो नाम कहा है? मेरो नाम नलकूबर याको नाम मणिग्रीव है. अरे तुम जड क्यों होगये? महाराज एक समयके विषेमें हम दोनों जने जलमें अपनी२ अप्सराओंके साथ नंगे जलक्रीडा कररहेथे और श्रीनारद मुनि भजन करते २ हमारी ओर निकसे हमने उनको मारे गर्वके कछु ख्याल नहीं कियो तौ उन्होंने आनकर हमको शापदियो तुम्हारी जडबुद्धि है सो तुम जड हो जावोगे, महाराज ! हमने हाथ जोडके कह्यो जो तुमने शापदियो सो तौ हमारे मस्तकपर है पर हमारो उद्धार कैसे होगो तब उन्हों ने कह्यो तुमजाकर नंदके आँगनमें वृक्षहो जब नंदके यहां भगवान् अवतार लेंगे तब वह तुम्हारा उद्धार करेंगे सो महाराज उन्होंने तो हमको शाप दियोथो पै हमको वरदान होकै लग्यो ॥

स्तुतियमलार्जुन ॥

छंद हरिगीतिका ॥

अनुसारि अस्तुति युगल प्रेमानँद मगन सन्मुख खरे। जय जय भगंत हित सगुण सुंदर देह धरि ध्यावत हरे ॥ जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे । सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उरधरे ॥ धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही ।

धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही ॥
धनि धनि उरहनो देत नितउठिधन्य अनख बढावहीं।
धनि सो जननी बांधि राखति जाहि वेद न पावहीं ॥
धन्य सो तृण जासुकी रजु श्याम भुजन बँधायऊ ।
धन्यसो तरु जासु ऊखल धनि सुजन गढ़िल्यायऊ ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दीन्हो अति अनुग्रह सो कियो।
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दरशन दियो ॥
अब कृपाकरि देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै ।
जहां जन्महिं कर्म्मवश तहँ एक तुम्हरी रति रहै ।
दीनबंधु कृपालु सुंदर श्याम श्री ब्रजनाथजू ।
राखिये निजशरण अब प्रभु करिय हमहि सनाथजू ॥
दो०—बारबार पद नायशिर, विनती प्रभुहिं सुनाय ।
प्रेममगन निरखत वदन, हर्ष सहित दोउ भाय ॥

अरे हम तुमपै बहुत प्रसन्न हैं मांगो जो तुमको चाहिये। महाराज यही मांगते हैं यह जो नेत्र हैं सो आपकी माधुरी मूर्तिको दरशन किया करैं और हाथ हैं सो आपका शृंगार किया करैं और पैर आपकी परिक्रमा किया करैं (जावो हमने तुमको दियो)

सो०—साधु साधु कहि नाम, भक्तिदान तिनको दियो ।
बिदाकिये घनश्याम, हर्षि गये निज पुर युगल ॥

(स० व०) अरी यशोदा देखो तो लाला को कहा होय गयोहै हम्बै बीर! देख तौ बड़े २ पुराने वृक्ष गिर पड़े हैं, हम्बै ! ना नंद बाबा घर में हैं यशोदा मैया ने लालाको बांध रक्खो थो (स०व०) नंदबाबा २ देखो लाला को ऊखलमें बांधो है (न० व०) अरी

महर कहा तोकों होय गयोथो (य०व०) याने मेरो पचासी वरसको माट फोर डारो है और सबोंके घर जायहै, हम्बै ! माटके लिये बांधो है. तेरी पचासी वरस येऊं गये ॥

अब घर काहूके जनिजाहु ॥ टेक ॥ तुम्हरे आजु कमी काहे की कत्त तुम अनतहि खाहु । जैर जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ महराय ॥ नन्द मोहिं अतित्रासत हैं तूं बांधे कुँवर कन्हाय । बलि जाऊं अपने हलधरकी छोरत है तब श्याम । सूरदास प्रभु खात फिरोजिनि माखन दधि तुम धाम ॥

इति श्रीयमलार्ज्जुनलीला समाप्त ॥

अथ प्रथम स्नेह लीला ।

(कृ०व०)अरी तुम कौनहौ और कहा तुम्हारो नाम है ॥

बूझत श्याम कौन तू गोरी । कहां रहति काकीहै बेटी देखी नहीं कहूं ब्रजखोरी । काहेको हम ब्रज-तन आवति खेलति रहति आपनी पोरी । सुनति रहतिं श्रवणनि नँदढोटा करत रहत माखन दधि चोरी। तुम्हरो कहा चोरि हमलैहैं खेलनचलो संगमिलि जोरी। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातनि भुरै राधिका भोरी ॥ १ ॥ प्रथम सनेह दुहुँन मन मान्यो ॥ टेक ॥ नयन सैंन बातैं हँसि कीन्ही गुप्त प्रीति शिशुता प्रग-टान्यो। खेलन कबहुँ हमारे आवहु नन्दसदन ब्रजगाँव। द्वारे आय टेरि मोहिं लीजो कान्हाहै मो नाँव ॥ जो

कहिये घर दूरि तुम्हारो बोलत सुनिये टेर । तुमहिं सौंह वृषभानु बबाकी प्रात साँझ यक फेर। सूधे निपट देखियत तुमको ताते करियतु साथ । सूरश्याम नागर उत नागरि राधा हरि दोऊ मिलि गाथ ॥ २ ॥ खेलनके मिसि कुँवरि राधिका नन्दमहरिके आईहो । सकुच सहित मधुरे करि बोली घर हौ कुँवर कन्हाई हो। सुनत श्याम कोकिल ध्वनि बानी निकसे अति अतुराई हो ॥ मातासों कछु कलह करतरहे सो डारेउ बिसराई हो ॥

वार्त्तिक–(कृ०व०) अरी मैया तू इनको जानै है यह कौन हैं (य०व०)ना? (कृ०व)अरी मैया कल मैं भूल गयो थो सो यह पकर लै आई थी (य०व०) हम्बै! आ बेटी बैठ जा मैया सों कहा शरमैहै (रा०व०) अच्छो मैया बैठूं हूं–

मैयारी तू इनको चीन्हति बारंबार बताईहो। यमुनातीर काल्हि मैं भूल्यो बांह पकरि लै आई हो। अबतो इहां तोहिं सकुचतिहै मैं देउँ सौंह बुलाई हो । सूरश्याम ऐसे गुण आगरि नागरि बहुत रिझाई हो ॥ ३ ॥ नाम कहा तेरोरी प्यारी। बेटी कौन महरकी है तू को तेरी महतारी । धन्य कोख जेहिं तोकों राखो धन्य घरी जेहि तू अवतारी । धन्य पिता माता धनि तेरी छबि निरखत हरिकी महतारी । मैं बेटी वृषभानु महरकी मैया तोकों जानति । यमुना

तट बहु बेर मिलन भयो तुम नाहिंन पहिंचानति। ऐसी कहि वाकों मैं जान्यो वहतो बहु भरतारी। महर बड़ो लंगर सब दिनको हँसत देत मुखगारी। राधा बोलि उठी बाबा कछु तुमसों ढीठ्यो कीन्हों। ऐसे समरथ कब मैं देखों हँसि प्यारी उर लीन्हों। महरि कुँवरि सों यों करि भाषति आउ करौं तेरी चोटी। सूरदास हरषी नँदरानी कहति महरि हम जोटी ॥ ४ ॥ यशुमति राधा कुँवरि सँवारति। बड़े बार श्रीमन्त शीशके प्रेमसहित लैलै निरवारति। मांगपारि बेनीहु सँवारति गुंथति सुंदर भांति। गोरे भाल बिन्दु बन्दन मानों इन्दु प्रान्त रविक्रांति। सारी चीरनई फरियालै अपने हाथ बनाई। अंचलसों मुखपोंछिअंगसब आपुहि लै पहिराई। तिलचावरी बतासे मेवा दियो कुँवरिकी गोद ॥ सूरश्याम राधातन चितवत यशुमति मन मन मोद ॥५॥

वार्त्तिक–ए विधाता सहस्र कानदेके सुनियो यह बेटी मेरे कनुहांको मिलै, अरे प्यारे हम जायहैं; प्यारीजी जावहौ, हम्बै जावैहें, अजी प्यारीजी हमको नहीं भूलियो. हे प्रीतम तुमको मैं नयन नमें रक्खूंगी ॥

नयननहीं में राखौं पिया तोय नयननहींमें राखौं ॥ तेरे इक इक रोम रोम पर कोटि काम रति नाखौं। नयननहीं में राखौं० ॥ अंग अंग माधुरी विलोकों अधर सुधारस चाखौं। रसिक पितमकी प्यारी बातें ना काहू सों भाखौं। नयननहींमें राखौं,

पिया तोहिं नयननहीमें राखौं ॥ ६ ॥ बूझति जननि कहा हुति प्यारी ॥ टेक ॥ किन तेरे भाल तिलक रचि दीनो किन कच गूंथि मांग शिरपारी ॥ खेलनगई नंदके आंगन यशुमति कह्यो कुँवरि यहँ आरी ॥ तिल चांमरी गोद भरदीनी फरिया फारि नई दई सारी ॥ मेरो नाम बूझ बाबाको तेरो नाम पूँछ दई गारी ॥ मोतन चितै चितै ढोटासन कछु सवितासन गोद पसारी ॥

अरी सखी याने कहा मांगोहै ? अरी वीर वाके धनकी कमी नायहै, दूधकी कमी नायहै, वाके कोई बातकी कमी नायहै वाने तेरी कुँवरि माँगी है, हम्बै ! बीर मेरी कुँवरि मांगी है ? हम्बै !

यह सुनि सुनि वृषभानु मुदित चित हँसि हँसि बूझत बात दुलारी। सूर सुनत रससिंधु बढ़्यो अति दम्पति मनहीं मनहिं विचारी ॥ ७ ॥

अरी सखी देखु तौ कहां मेरी राधा चंदासी कहां कनुहां कारो मेरी वाकी कैसी जोड़ी मिलै है? अरी वह कारो नाय है जगत उजारोहै मेरे तो आंखोंके तारे हैं, और सबके प्यारे हैं, अरी सखियो पुरोहितानी जीको बोललै, अच्छो, येजी पुरोहितानी जी। तोकों कीरति बोलै हैं अच्छो; अजी पुरोहितानी यह सब सखी बोलैं हैं कि तिहारी राधिकासों कन्हुआ की सगाई करदे, सो सुन कहाँ मेरी चंदासी राधिका कहां कन्हुवां कारो यह जोडी कैसे मिलैहै अरी सुनु कीरति कहो पुरोहितानीजी मेरो पीहर होडिलमें है सो मैं पीहरसों अपने नैहरको जातीथी सो बीचमें छोटे २ छोरे जिनके छोटे २ से बार छोटी २ सी झुंगुलियां छोटी २ सी टोपीथीं

यों कहरहेथे "नंद महरघर ढोटा जायो, बरसानेते टीको आयो" मैंने कह्यो जो होनीहोयहै सो पहेलेहीसों दीखै है जाव तिहारे भी पचासी वर्ष चूल्हेमें गये अरी नहीं मानों तौ पुरोहितजीसों पूछले च्यों पुरोहित जी हम्बै! २।

रेखता–सुंदर अनूप जोरी अति मनकी भावती॥ देखी मैं आज मगमें कुंजनसों आवती॥सुंदर०॥अँग अंग देत शोभा भूषण जड़ाऊ आली। नयननमें सोहै काजर अधरनपै पान लाली॥ सुंदर०॥ प्रीतमके कांधे-कर धर प्यारी अनंदसों॥ हँसहँसके करत बातें मुख ललित चंदसों॥ सुंदर ०॥ पगधरत हौरे हौरे गति देख हँसलाजे। नुपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजे॥ सुंदर०॥ या भांतिसों मगन है क्रीड़ा करत हैं दोऊ॥ नारायण रसिकजनबिन यह रस न जाने कोऊ॥ सुन्दर अनूप जोरी अति मनकी भावती॥देखी०

इति श्रीप्रथम स्नेहलीला सम्पूर्णा।

अथ आँखमिचौलीलीला॥

बाबूश्यामलाल बाजपेयीविरचित।

वार्तिक–(कृष्णवचन) अरी मैया मैं आंख मिचौली खेलौंगो।

(यशोदावचन) अच्छो लाला तनसुखा मनसुखा और ग्वाल सखाओं को टेरले॥

(कृष्णवचन) अरे मनसुखा तनसुखाओ–

(मनसुखावचन) ओ लालजी महाराज कहा कहो हो–

(कृष्णवचन) सुन सारे आँखमिचौलीखेलैंगे,
(मनसुखावचन) अच्छो पहले दाँव को देगो,
(कृष्णवचन) अरे चल सारे मैया पै बूझ लेंगे,

(मनसुखावचन) अच्छो चलो, मैया मैया हममें चोर कोहै सो तू बोलदे, अंगुली चिटकायके बुझायो, मनसुखा चोरभयो, छिपगये, श्रीठाकुरजी चोर भये, अच्छो भैया तुम सब छिपो मैं दांव देउँगो, श्रीदामा चोर भयो, सब छिपनेगये श्रीठाकुर जी को कीर्ति रानीने बरसाने में देखलियो ॥

पद ॥

रागगौरी ॥ होप्यारी लगे ब्रजकी डगर ॥ टेक ॥
लुक लुक खेलत आँख मिचौली चरण पहारी बगर ।
सात पांच मिल खेलन निकसे कोकिला बनकी डगर ।
परमानंद प्रभुकी छवि निरखत मोह रह्यो ब्रजसगर ॥१॥
ढोटा कौनको यहरी ॥ टेक ॥ श्रुति मंडल मकराकृत कुंडल कनक कंठ दुलरी । घन तन श्याम कमल दल लोचन चारु चपल तिलरी ॥ इंद्र वदन मुसक्यान माधुरी अलकन अलकुलरी ॥ उरपरहार अधरपर मुरली गावतसुर गौरी ॥ पगनूपुर मणि जडित रुचिर अति कटिकिंकिणरौरी ॥ बालक वृंद मध्य राजत हैं छवि निरखत हैं सुररी ॥ सोई सजीवन सूरदासकी महर रहेउ उररी ॥

वार्तिक—अरी ललता विशाखा सखियो! कहाकहोहौ श्रीकीरतिमाय, देखियो तो सही यह लाला कौनको है. जाके कानों में कुंडल और

कंठ बीच दुलरी पहने हैं और सब छोरा न में अतिशय शोभायमान दीखैं हैं ? अरी माय तू इनको नाँय जानै है ? अरी सखियो मैं नाँय जानौहौं, हम्बै ! अरी मैया यह राधापति सुखदाई यशोदाके ढोटा हैं हम्बै ? यह वेही हैं. आउ लाला मैं अपने पै चटर मटर है जाउँ अरी मेरी सुधिपै गाज परे अरे लाला ना होरी आवौ ना देवारी आवौ तुमतो कोई तेवहार हूमें न आओ हो यह तौ तिहारो घरहै जैसे यशोदा मैया तैसेही मैंहूं अरी सखियो देखो लाला को बियारी कलेऊ तौ कराव.अजी लाला कछु बियारी करो लड्डू,खाजा, खुरमा, पापर, जलेबी, इमिरती आदि लेके आगे रक्खे, अरे लाला कछुजेवों यहांकी बातनको कछू बुरो मत मानियों ॥

गारियां ॥

यशोदाने कारी अँधेरी में जायो ॥ जासों कारो रूप हरिने पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये मुख चूमत मोद बढ़ायो ॥ रूप कि राशि मयंक मुखी मेरी राधाकोरूपलजायो । नामअनेकसुनेघनश्यामकेजबसे गर्ग घर आयो ॥ ना हमने वसुदेव सुने वासुदेव कहांते आयो ॥ गोरस सिंधु बहै घर भीतर दामर हाथ बँधायो॥ तनक दहीके कारण मोहन माखन चोर कहायो ॥ करम कि रेख मिटै ना सजनी वेद पुराणन गायो॥सूर दास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यशगायो॥ १ ॥ गारी गावैं दैदै तारियां ब्रजकी नारियां सुकमार ॥ नंद-के नंदनहो ब्रजके चंदन रसगार ॥ मिल वरसाने की गोरी ॥ गारी गावैं नवल किशोरी ॥ तुम सुनो नंदके

नंदा ॥ तुमको पूछैं हम ब्रजचंदा ॥ तेरी बहेन छैल छिन कारी ॥ हमारे श्रीदामा सौं यारी ॥ तेरी बड़ी बिनोदन ताई ॥ जाकी सब जग करत हँसाई ॥ नँदनंदन तेरी बूआ ॥ सो करत झूटके पूआ ॥ नँदनंदन तेरी काकी ॥ सो कामकलामें पाकी ॥ नँदनंदन तेरी मौसी ॥ सो रहतसदा मनहौसी ॥ नँदनंदन तेरी मामी ॥ सो सब ऐबन में नामी ॥ नँदनंदन तेरी नानी ॥ वाकी बात न हमते छानी ॥ नँदनंदन तेरी दादी ॥ सो सदा फिरै उन्मादी ॥ गोरे नंद यशोदा मैया ॥ तुम कारे कौनके दैया ॥ न्हाय शुद्ध यशोदा रानी ॥ काहू कारे ते रति मानी ॥ अपनी यशुमतिको गहि आनो ॥ सो आय मिलै वृषभानो ॥ यह नँद वृष भानु सनेही ॥ एक प्राण द्वै देही ॥ वै नंद गामकी बाला ॥ यह बरसानेके लाला ॥ गठजोरवा आन करावो ॥ हथफेरो हमैं दिवाओ ॥ यह रहस किशोरि दास गायो ॥ सो बास सदा ब्रज पायो ॥

वार्तिक-अरी मैया हमतो जायहैं, अरे लाल जावहो कछु बुरो तो नाय मान्यो, ना. लाला ससुरारीकी गारियोंको कोई बुरो नाय मानैहै लाला जैसे तिहारे नंद बाबा तैसे अपने वृषभानु और यशोदा मैया तैसें मैंहूं कछु बुरो मत मानियों ॥

परस्पर मनसुखा श्रीकृष्णवचन ॥

वार्तिक-अरे लाला यामें कहा बुरोमाननोहै देखो हिंदुस्तानी लोग बोलैं नाँय हैं कि ससुरारकी गाली और सोहारी खानेके लिये

बनाई हैं. सो यामें कहा दोष है जहां चार सुहारी खाईं तहां चार गारिहू खालीं. जहां वै हजम होंगी तहां ये भी हजम होजाँयगी जा सारे तैंनें, यहां लाकर गालीं खिलाई, अजी महाराज मोकों च्यों दोष देवोहो, आपको तो खानेकी रुचिथी नाँय तौ व्रज चौरासीकोश न थो ॥

यशोदावचन लालजी प्रति ॥

अरे लाला कहां गयोथो इतनी बेर भई तैंनें ना कछु बियारी करी ना कछु खायो है (कृष्णवचन)
अरी मैया बरसाने गयो थो, तौ हम्बै ! बड़ी बड़ी बात लायो होगो,

राग काफी ॥

भूषण अपने लेरी मैया ॥ मोर कि चंद्रिका कांचकी मणियां गुंजाफल मोय देरी ॥ रत्न जड़ित आभूषण भूषण सोतू अपने लेरी । दुरादुरी खेलत सखन सँग खेलन मैं नाहिं पाऊं । मुख शशि प्रभा बारही राखूं इनको कहां दुराऊं ॥ आज सघन वृषभान गोप घर खेलन मैं जो गयो ॥ सगरे सखा आगमन भागे मोहीं चोर भयो ॥ जबहिं महर वृषभानु गोप घर गहि अंचल मोहिं राख्यो ॥ बदन चूम मिष्टान्न हाथ धर अंग अंग अवलोक्यो ॥ तब वृषभानु समाते आये नंदकुमार न होई ॥ परमानंद कुँवरिको दूल्हो कहत रहे सब कोई ॥

यशोदावचन लालजी प्रति ॥

वार्तिक–अरे लाला कहा चिंता है वहां तिहारी ससुरारहै वहां है

बातन को बुरो नहीं माननो उनीको बेटी से तिहारो सगाई हुई है तो मैया मोको ऐसी दुलहिन भावै है—

राग काफी ॥

मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावै॥ टेक॥ जैसे हो काह्नु की ढोटनियां रुनुक झुनुक चलि आवै ॥ कर कर पाक रसाल अपने कर मोहिं हँसि परस जिमावै॥ कर अंचल पट ओट बबाते ठाढी ब्यार ढुरावै ॥ मोहिं उठाय गोद बैठारे कर मनुहार मनावै ॥ अहो मेरे लाल कहो बाबाते तेरो ब्याह करावै ॥ नंदराय नँद-रानी दोऊ मिलि मोह समुद्र बढावै ॥ परमानंददासको ठाकुर वेद विमल यशगावै ॥

वार्तिक—अरेलाला ! वै ऐसीही हैं उनसे उज्ज्वल कोई नाय है।

इति श्री आँखमिचौली लीला संपूर्ण ।

अथ नागलीला लिख्यते॥

चलि चलिं सखी तहँ जाइये जहँ नन्दके बालक भये॥ धनि यशोदा भाग्य तेरे गोकुलाके दुख हरे १ कोइ गावै कोइ बजावै कोइ चर्चै चन्दना॥ कोइ सुहा-गिल सोंठि भूनै कोइ बांधैवन्दना॥२॥ बोलिये ब्रजराज पण्डित आ विचारै शुभघरी॥ आग लावो दियो जालो मुक्खदेखौ बंशको ॥ कंसमारण वंश तारण आय प्रकटे नरहरी॥ ३ ॥ मथुरामें हरि जन्म लीन्हो गोकुल लाल छिपाइयां॥ बजे नगारे मधुपुरीमें खबरि सब

असुरन भई ॥ ४ ॥ नाग के ढिग कृष्ण पहुँचे हाथ की दाबनदये ॥ नागने फुफकार छोंडी कृष्णश्यामल होगये ॥ ५ ॥ कृष्णने जब गरुड टेरो गरुड पहुँचे आयकै ॥ नागने जब गरुड देखे रहगये शीशनवाइकै ॥ ६ ॥

पद ॥

नंद केने कैसे कैसे नाथ्यो नाग ॥ टेक ॥ कदमवृक्ष तर बैठे साँवरो नाग नथनके काज ॥ १ ॥ नाग वाको सोवै नगिनवाकी जागै सोवत विषधर नाग ॥ २ ॥ अति विषधर ओ बडो भुजंगी विषकी डारै झाग ॥ एक पलकमें तोहिं डसि डारै जो मेरो जागै नाग ॥ ३ ॥ नागिन नाग जगाय दे अपनो कहु दह को तजि जाय ॥ तोहिं नाथ तेरे नागै नाथूं जब खेलौं बृज फाग ॥ ४ ॥ शंकर उठे सहस्रफन कीनो फन फन फूंकत आग ॥ सूरदास की यही वीनती धनि यशुदा के भाग ॥ ५ ॥

पद ॥

गेंद के सँग कूदि बालक यमुना जल पैठे धाइकै ॥ टेक ॥ नाग नागिन करत क्रीडा हरि उतरे तहँ जायकै ॥ कौन दिशासे आयेरे बालक कहाँ तुम्हारो ग्रामहै ॥ कौन सखीके पुत्र जु कहिये कहा तिहारो नामहै ॥ पूर्व दिशासे आयेरी नागिन गोकुल हमारो ग्रामहै ॥ मात यशोदा पिता नंदजू कृष्ण हमारो नामहै ॥ प्रभुजीके सन्मुख कहत नागिन जारे बालक भाजिकै ॥

तेरो रूप देखे दया उपजै नाग राजा जागिहै ॥ भाजे कुलकोदाग लागैअबभाजे कैसे बने ॥ होनीहोइसो होरी नागिन नागतौ नाथेबनै ॥ असुर राजा दुखी धरणी नृपचोर बनि आइयां ॥ कंस सेती द्वंद्व कीनो नाग नाथन आइयां ॥ कै बालक तुम मग जूभूले कैघर नारि रिसाइयां ॥ कै तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो बालक जूझन आइयां ॥ ना नागिन हम मग जू भूले ना घर नारि रिसाइयां ॥ ना हमरे मन क्रोध ऊपजो नाग नाथन आइयां ॥ लेबालक गलहार माला सवा लक्षकी बोरियां ॥ सोतो लै घर जाउबालक नागसे देउँ चोरियां ॥ कह करों गलहार माला कह करों लख बोरियां ॥ वृन्दावन में गड़ो हिंडोला नागकी करौं डोरियां ॥ चौंसठ चोप मरोरि नागिन नाग राज जगाइयां ॥ जागियो बलवन्त योधा बालक जूझन आइयां ॥ जब उठे प्रभु जलके राजा इन्द्र जल घहराइयां ॥ प्रभुजीके मुकुट को झपट कीन्हों शब्द ताल बजाइयां ॥ दोउन मिलके द्वन्द्व कीन्हौं शब्द ताल बजाइयां ॥ सहसफन पर निरत कीन्हों थेइ थेइ शब्द उचारियां (स्तुतिः) कर जोरि नागिनि करत अस्तुति कुटुम सह उठि धाइयां ॥ करु कृपा अपराध क्षमि प्रभु जासु हम पति पाइयां ॥ बावन रूप धरो बलिद्वारे हरि आप अकार बढाइयां ॥ कच्छ मच्छ वराह वपु धरि नरसिंह रूप

दिखाइयां ॥ हम जु दासी प्रभु तुम्हारी मति मारो छोडो नागको ॥ प्राण दान तुम देउ हम को राखो मेरे सुहाग को ॥ नंदनन्दन भये राजी दियो कालीत्याग को ॥ गरुड टेरत कौनहै क्यों पचै मेरे भागको ॥ कालीदह में नाग नाथ्यो मथुरा कंस पछारियां ॥ प्रभु मदन मोहन रहस मण्डल यही विधिसों गाइयां ॥ १ ॥

अथ चीरहरणलीला प्रारम्भः ॥

समाजीवचन ॥ दोहा ॥

ब्रज वनिता सब मिल चलीं, करन यमुन असनान ॥
नेम धर्म व्रत दृढ करत, पति चाहत भगवान ॥ १ ॥

सखीवचन वार्तिक—अरी सखी अरी वीर चलो श्रीयमुनाजीके स्नान कर आवें ।

समाजीवचन ॥ राग आसावरी ॥

गौरीपति पूजत ब्रजनारि नेमधर्मसों रहत क्रिया युत बहुत करत मनुहारि ॥ यहीकहत पति देउ उमापति गिरिधर नंदकुमार ॥ शरण राख लीजै शिव शंकर तनु तरसावत मार ॥ कमलपुष्प मातुल औ पत्र फल नाना सुमन सुवास ॥ महादेव पूजत मन वच कर सूर श्यामकी आश ॥ १ ॥

दोहा ॥

ज्ञान ध्यान व्रत नेम कर, पूजति श्री त्रिपुरारि ॥
हाथ जोर स्तुति करत, ब्रज की घोषकुमारि ॥

स्तुति ॥

करहिं अस्तुति गान बहुविधि पाणि पंकज जोरहीं॥
बार बार नवाय मस्तक प्रेम सहित निहोरहीं ॥
जगमहेश कृपालु शिव आनंद निधि गिरिजापते ॥
कैलास पति कल्याण अग जग नाथ सर्व नमामिते ॥
जटा जूट त्रिपुंड्र शशिकल गंग युत शोभित शिरे ॥
कमल नयन विशाल सुन्दर चारु कुंडल श्रुतिधरे ॥
नील कंठ भुजंग भूषण भस्म अंग दिगंबरे ॥
अर्द्धंग गौरि विशाल उर शिर माल धर करुणा करे ॥
कर्पूर गौर प्रसन्न आनन पंच वक्र त्रिलोचने ॥
कामप्रद सुखधाम पूरण काम शोच विमोचने ॥
दोहा-तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जन मन पीर ॥
अभय दान दीजै हमैं, सुंदर वर बलवीर ॥
यमुना तट पै चीर धरि, करन लगीं असनान ॥
ताही छिन नँदलाड़लो, गयो अचानक आन॥

रागबिलावल ॥

वसन हरे सब कदम चढ़ाये ॥ सूर हँसि २ गोप कन्यनके अंग आभूषण सहित चुराये ॥ अति विस्तारी लता तरतामें लैलै जहीं तहीं लटकाये ॥ मणि आभरन डार डारन प्रति देखत छबि मन हो अटकाये ॥ नीलाम्बर पाटंबर सारी श्वेत पीत चुनरी अरुनाये ॥ सूरश्याम युवती व्रत पूरण कदम डार फल पाये ॥

पद–जलते निकस बाहर सब आई ॥ दृष्टि पसारि लगीं सब देखन चीर दृष्टि नाहिं आई ॥ जलते निकस आय तट देख्यो भूषण चीर तहां कछु नाईं ॥ इत उत हेर चकित भई सुंदर सकुच गईं फिर जलके माईं ॥नाभि पर्यंत नीरमें ठाढीं थर थर अंगकंपत सुकुमारी॥ को लैगयो वसन आभूषण शूरश्याम उर प्रीति विचारी ॥

सखी वचन सखीप्रति–वार्तिक ॥

अरी सखियाओ श्री यमुना जीके तीर ते हमारे वस्त्र आभूषण कौन ले गयो अब हम तुम घरको कैसे चलेंगी ॥

दूसरी सखीको वचन–वार्तिक ॥

अरी सखी वे देखो नंदलाल हमारे चीर लैके कदंब पै बैठे हैं ॥

तीसरी सखी को वचन–वार्तिक ॥

अरी सखी अब जलते बाहर कैसे निखसें कैसे वस्त्रलें ॥

चौथी सखी वचन–वार्तिक ॥

सखी इनकी विनय करो तौ वस्त्र मिलें नहीं तौ ये कभू नदेंगे ॥

सखी वचन–राग रामकली ॥

हमारो अंबर देउ मुरारी ॥ टेक ॥ लैकर चीर कदम चढ बैठे हम जलमाहिं उघारी ॥ १ ॥ तट पर बिना वसन क्यों आवैं लाज लगे है भारी ॥ चोली हार तुमहिंको दीनें चीर हमाहिं देउडारी ॥ २ ॥ सुंदर श्याम कमलदललोचन हमहैं दासि तुम्हारी ॥ जो कुछ कहो सोई हम करिहैं चरण कमल पर वारी ॥ ३ ॥ अंग अंग कंपत मन मोहन

विनती सुनहु हमारी ॥ सूरश्याम कछु छोह करोजू शीत मरत वृजनारी ॥ ४ ॥

वार्तिक—अजी लालजी महाराज आप हमारे चीर देदेउ देखो हम अबला जात नंगी तुम्हारे पास कैसे आवेंगी और देखो शीतके मारे हमारे अंग थर थर काँपत हैं सो कृपाकरि हमारे वस्त्र देदेउ ॥

(श्रीकृष्णवचन) वार्तिक—अरी सखी हमने तुम्हारे वस्त्र नहीं लीने हैं ये जो कदंबपै तुम्हें कारे पीरे लाल हरे वस्त्र दीखें हैं सो तुम्हारे वस्त्र नहीं हैं येतौ हमारो कदम्ब फूल्योहै॥

(सखी वचन) वार्तिक—हे श्रीलालजी महाराज आप झूंठ क्यों बोलोहो हमारे ही चीरहैं कदंब नहीं फूल्यो है देखो कात्यायिनी देवी हमारी साक्षीहै याही से पूंछ देखो॥

(श्रीकृष्ण वचन)—अच्छो सखी कात्यायिनी देवी तेही पूछदेखौ

(सखी वचन) वार्तिक—हे देवी! हे अंबिका! हे महामाया! हेजगदंबा! तुम सत्य कहौ? या कदंबपै हमारे चीर धरेहैं कै श्री लालजी महाराजको कदंब फूल्यो है॥

कात्यायनी वचन॥

अरी सखीयाओ कदंब नाहिं फूल्यो है तुम्हारे ही चीर धरे हैं

(सखी वचन) वार्तिक—अजी श्रीलालजी महाराज देखौ कात्यायिनी देवीहू कहै है कि, हमारे चीर हैं॥

(श्रीकृष्ण वचन) अरी सखियो तुम याको नित्य न्हवावो हौ और धूप दीप चंदन अक्षत ते पूजन करोहो मेवा पकवान भोग धरो हो याते सखी येतौ तुम्हारी ही सी कहेगी और सखी ये कात्यायिनी देवी ना है याको नाम काठकानी देवीहै॥

(सखी वचन) वार्तिक—अजी महाराज आप देवी की नाहिंमानों तौ श्री महादेवजी कूं पूंछ देखौ ये सांची सांची कहिदेंगे॥

(श्रीकृष्ण वचन) अच्छोसखी श्री महादेव जीते पूंछ देखौ ॥
(सखी वचन) हे श्री महादेव जी! महाराज! हे शंभु! हे भोलानाथ! आप सांची कहिदेउ श्री लालजीको कदंब फूल्योहै के हमारे चीरहैं ॥

महादेवजी वचन ॥

अरी सखी कदंब नाहिंफूल्योहै तुम्हारेही चीर धरेहैं ।
(सखी वचन) अजीलालजी महाराज देखो श्रीमहादेवजीहू हमारेही चीर वतावें हैं अब आप हमारे वस्त्र दैदेउ ॥

(श्रीकृष्ण वचन) अरी सखी ! ये महादेवजी जा समय आक धतूरो खायके नसामें बैठे हैं और तुम इनका पूजन करिकै मिष्टान्न भोग धरोहो और इनको मीठे मीठे भोजन कराओहो याते येतौ तुम्हारी हीसी कहैंगे हम ऐसे बावरे की नाहिं माने सखी हमारे कदंब ते पूछौ ये सांची कहिदेगो–

(सखीवचन) हे कदंब देवता तुम सांची कहदेउ कै तुम्हारे ऊपर हमारे चीर धरेहैं कै तुमहीं फूलेहै ॥

(कदंब वचन) अरी सखी नाहीं नाहीं मैंहीं फूल्यो मैंहीं फूल्यौ ना सखी तुम्हारे चीर धरैहैं ॥

(सखी वचन) देखौ लालजी महाराज आपको कदंब हू कहे है कि, सखी तुम्हारे ही चीर हैं अब आप हमारे वस्त्र देदेउ ॥

सखी वचन रागरामकली ॥

मोहन वसन हमारे दीजै ॥ वारने जाँय सुनो नँद-नंदन शीत लगत तनुभीजै ॥ कौन सुभाव विना अन औसर इन बातन कस जीजै ॥ सुनि दुख पावैं महर यशोमति जाय कहैं अब हीजै ॥ सब अबला जलमाँझ

उघारी दारुण दुखकस दीजै ॥ सूरश्याम हम दासि तिहारी जो भावे सो कीजै ॥

श्रीकृष्णवचन–रागगूजरी ॥

जलते निकस तीर सब आवहु ॥ जैसे सविता सों कर जोरे तैसेइ जोर दिखावहु ॥

सखीवचन ॥

नव बाला हम तरुण कान्ह तुम कैसे अंग दिखावैं ॥ या जल हीमें बाँह टेक कै देखोश्याम रिझावैं ॥ जलते० ॥

कृष्णवचन ॥

ऐसे नहीं रीझि हों तुमसों तटही बाँह उठावहु ॥ सूरदास प्रभु कहत श्याम यों तबहिं वस्त्र तुम पावहु ॥ ३ ॥

सखी वचन–रागरामकली ॥

हाहा कहत घोषकुमारि ॥ शीत ते तनु कँपत थर थर बसन देउ मुरारि ॥ मनहिं मन अति ही भया सुख देखकै गिरिधारि ॥ पुरुष स्त्री अंग देखैं कहतदोष नभारि ॥ नैक नहिं तुम छोह मानत गईं हम सब हारि ॥ सूर प्रभु अति ही निठुर हो नन्दसुत बनवारि ॥

श्रीकृष्णवचन–रागबिलावल ॥

लाज ओट यह दूरे करो ॥ जोइ मैं कहों करो तुम सोई सकुचि बापुरो कहा करो ॥ जलते तीर

आय कर जोरहु मैं देखहुँ तुम विनय करो ॥ अब व्रत पूरण भयो तुम्हारो गुरुजन शंका दूर करो ॥ अब अंतर मोसों जिन राखो बार बार हठ वृथाकरो ॥ सूरश्याम कहैं चीर देतहू मोंआगे शृंगार करो ॥

(सखीवचन) हमारे देउ मनोहर चीर ॥ काँपत दशन शीत तनु व्यापत हम अति यमुना तीर ॥ मानेंगी उपकार तुम्हारो करहु कृपा बलवीर ॥ अतिहि दुखित तनु परशत मोहन प्रबल प्रचंड समीर ॥ हम दासी तुम नाथ हमारे विनती करत जल भीतर ठाढ़ी ॥ मानों विकस कुमोदिनि शशिसों अधिक प्रीति उरबाढ़ी ॥

(कृष्णवचन) जो तुम हमहिं नाथकरि मानों यह माँगे मम देहु ॥ जलते निकस आय तट ऊपर बसन आपने लेहु ॥

समाजीवचन–कर धरि शीश गईं सन्मुख हरि मनमें करि आनंद ॥ होय कृपालु सूर प्रभु सब विधि चीर दिये नँदनंद ॥ हमारे देउ मनोहर चीर ॥

इति श्रीचीरहरणलीला सम्पूर्ण ॥

अथ मगरोकनलीला प्रारंभ ॥

दोहा–प्रात समय ब्रज नागरी, सजि अपनो शृंगार ॥
गोरस बेचनको चलीं, गजगामिनि सुकुमार ॥ १ ॥

मगमें ठाढ़ो साँवरो, रौंकि सखनि की गैल ॥
रूपसिन्धु अरविन्द दृग, रसिक शिरोमणि छैल॥ २ ॥

(सखीवचन) जिला मूल तिताला ॥ जिन मग रौंको नंद किशोर ॥ टेक ॥ तोहिं उरझन की बानि परीहैसांझ तकत नाहिं भोर ॥ देर लगत मोहिं सासु रिसावै तुम्हैं छैल नित रारि सुहावै इन कुचाल कछु हाथ न आवै गागरिया दइ फोर ॥ तुम अति चंचल ढीठ बिहारी कैसे कोखि रहे महतारी इह मोको अचरज है भारी घर घर तेरो शोर ॥ नारायण अब क्यों इतरावो भई सो भई न बात बढ़ावो ॥ ताहीको तुम आँखि दिखावो जोहोय तेरी बंदोर ॥ ३ ॥

(सखीवचन) रागदादरा ॥ गैल जनि रौंको योवन मदमाते ॥ टेक ॥ इन बातन शोभा नाहिं पावो लाज भरी गारीगाते ॥ तुम जानत हमते यह डर-पत तासों बहुत इतराते ॥ नारायण हम यासों नबोलैं मानिकै जातिकै नाते ॥ ४ ॥ रागकालिंगडा ॥ मारग दीजै मोहन प्यारे ॥ टेक ॥ इन बातन शोभा नाहिं पावो तुमहो राजदुलारे ॥ बहुत हाँसी जनिकरो साँवरे सुनि हैं कन्त हमारे। तुमरो कोई कछु न करैगो हमैं मुँदैंगे तारे। देखे सुने नहीं हम कबहूं तुम सम झगरन हारे। नारायण क्यों रारि बढ़ावो रहै बापन वारे ॥ ५ ॥

रागसिंधु ॥

रोकै मेरी गैलवा मैं कैसे जाउँ पनियां ॥ टेक ॥ शीश मुकुट कंचन को झलकै भ्रुकुटि मनोहर कुंडल अलकै माथे खौर चंदन की राजै उर बैजंती माल बिराजै पीताम्बर कटि कस्योरी चौतनियां ॥ रोकै० ॥ अधर सुधारस बैन बजावे ग्वाल बाल लिये सँगही आवे कहेना मानै नंद महरको माखन खात फिरत घर घरको ऐसो निडर झकजोर मेरी बहिनियां ॥ कर किंकिणी यूगनू बाजै रुनक झनक बहुमुनि मन राजै पगबाजै पैजनियां ॥ रोकै० ॥ रूप मनोहर सुंदर साजै दरश देख दूरहिते भाजै अति चंचल अलबेली चितवनियां ॥ रोकै० ॥ गागर फोर मोर मुख हँसिके कर गहि निजकम्मरसे लचिके सूरश्याम प्रभु नागर नटके बरजे नहीं मानत नहिं हटके ॥ रोक० ॥ ६ ॥

ग्वालिन दान देत इठलावै ॥ टेक ॥ नितप्रातिही तू या मारगहै क्यों दधि बेचन जावै ॥ हमैं कहत तू दो बापन को अपने क्यों न गिनावै ॥ नारायण दै कोटिक ताने कर नहिं छूटन पावै ॥ ७ ॥ मल्हार तिताला ॥ योवन की मदमाती डोलेरी गुजरिया ॥ टेक ॥ अंग अंग योवन की उठत तरंग नई नई नयनाकजरारे वारी तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नकबेसरि करनफूल मुंदरी ललित छबि देत अँगुलिया ॥ अब लौं तोसी

नहिं देखी नारायण दधि की बेचनहारी नन्द की नगरिया ॥ ८ ॥

(सखीवचन) रागकलिंगडा ॥ लाल तुम काहे को इतरावो ॥ मोरपंख उरसे पगिया में यापै बड़े कहावो ॥ जबते प्रकट भये तबहीं ते घर घर धूम मचावो ॥ माखन छाछ चुराय हमारी मिलि गोपन सँग पावो । फटीपुरानी कामरि ओढे वन वन धेनु चरावो ॥ नारायण तुम कौन भरोसे एते गाल बजावो ॥ ९ ॥

श्रीलालजीवचन–ठुमरीखम्माचका जिला ॥ आज तू नवेली दधि बेचबेकूं आईरी ॥ टेक ॥ योवन की उमंग सों झूमत चलत गज मत्तहू की गति तैं लजाईरी। नैनन के बान भौंह तान कै कमान कहो कौन पै यह करीहै चढाईरी ॥ रूपकी निकाई सुघराई नारायण कहां लगि करूंमैं बड़ाईरी ॥ १० ॥

(सखीवचन) रागईमनकल्याण ॥ मनमोहन मोसों मति अटको । झटकौ न चीर मटको न छैल दधि की न गैल पटको मटको ॥ टेक ॥ जैसे कछु तुम हौसब जानूं तुम्हरे गुण अब कहा बखानूं तनक तनक रस काज राज रस भवन निशिदिन भटको ॥ को तुम कबके ब्रज में भये दानी रोकत हौ मग नारि बिरानी दधि गोरस की लूट मचाई तुम्हैं न काहू को

खटको ॥ नारायण अबहूं कही मानो औरन की सम मोहिं न जानो निकसि जायगी सब लँगराई चलौ हटौघरको सटको ॥ ११ ॥

(रागदादरा) प्यारे जिन मेरी बाँह गहौ ॥ टेक ॥ मारगमें सब लोग देखत हैं दूरी क्यों न रहौ । मन में तुम्हारे कौन बातहै सोई क्यों न कहौ ॥ कहि हौंजाय-आज यशुमतिसे हमरी बाट रोकत हौ । इतने पै नहिं मानत आनँद घन लरिकाई तुमहौ ॥ १२ ॥ छांडो लंगर मेरी बहियां गहोना ॥ टेक ॥ मैं तो नारि पराये घरकी मेरे भरोसे गोपाल रहोना ॥ जो तुम मेरी बहियाँ गहत हौ नयना मिलाय मेरे प्राण हरोना । वृन्दा-वन की कुंजगलिन में रीति छोंड़ि अनरीति चलोना ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण छोंड़ि अब नेक टरोंना ॥ १३ ॥ रागकालिंगडा ॥ छांडो मेरी गैल नतो गारी मैं सुनाऊंगी ॥ टेक ॥ औरौं के भूले से कहूं मोसों जनि अटकौ अभी यशुमति पै पकरि लैजाऊंगी ॥ पहि ले ही सों अपनि बड़ाई कहा करूं मैं देखियो तो कैसी तुम्हैं नाच नचाऊंगी ॥ जो मैं तोहिं सूधो न बनाऊं नारायण तोमैं निज बापकी न आजसों कहाऊंगी॥ १४॥ रागमलार ॥ क्योंरे छैल मेरी मटुकिया पटकी ॥ टेक ॥ करिकै ढिठाई मग दधि बिथराई सब चूरा मुरकाई सुकुमार बहियाँ झटकी ॥ अबहीं यशोदा ढिग पकरि

लै जाऊं तोहिं एक न सुनूंगी तेरि बात नटखटकी। बदलो लेऊंगी न टरूंगी नारायण कौनसी गरज मेरी तोसों अब अटकी॥ १५॥ छाया॥ अँगुरी मेरी मरोर-डारी छीन दधि लीना॥ साँवर हौं जात कुंज दधि बेचन बीच मिलो गिरिधारी। अगर सुने मेरी बगर सुनेगी लाल सुनै देगी गारी॥ चंद्रसखीभज बालकृष्ण छबि चरणकमल बलिहारी॥ १६॥ राग कल्याण॥ नट नागर चित चोर गेंद तकि मारी समलिया॥ टेक॥ भयो निशंक अंक भरलीनो भृकुटी नैन मरोर॥गेंद०॥ कहा करूं कछु वश नहिं मेरो ऐसो जालिम जोर॥ गेंद०॥ रसिक हठीलो जिय तरसावै मानत नहीं निहोर॥ गेंद०॥ १७॥ रागकल्याण॥

नयनोंकी मारी कटारी मेरे॥ सुनयोरी मेरी यार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी॥ नयनों॥ यमुनाके तट भेंट भईरी मोसों छैल बिहारी॥ नयनों०॥ सास बुरी घर ननँद हठीली देवर सुनै दे गारी॥ मधुर अली घर जात बनै ना पीर उठी अति भारी॥ १८॥

धारि धरिके अवतार भार पृथ्वीको हरैया मैंहींतोहूं। भक्तहेतु अवतार लेत असुरनको छरैया मैंहींतोहूं॥ मथुरामें लियो जन्म ब्रज मंडलको बसैया मैंहींतोहूं॥ नंदको छैया गोद यशुदाको खिलैया मैंहींतोहूं॥ प्रबल पूतना तृणावर्त शकटाको हनैया महींतोहूं॥ कागाको

मारके चोंचको फरैया मैंहींतौहूं ॥ चोर चोर गोपिनके घर माखन को खवैया मैहींतौहूं ॥ ऊखलसे बाँध्योमात पै हाथ बँधैया मैंहींतौहूं ॥ १ ॥ वत्सासुरको पटक अघाके प्राणकढैया मैंहींतौहूं ॥ दावानलको पानकरो सो तुम्हैं दिखैया मैंहींतौहूं ॥ केशीको हनैया देखि बलवीर को भैया मैंहींतौहूं ॥ क्यामंझ धारके बीच गजकी टेरसुनैयामैंहींतौहूं ॥ २ ॥ गोवर्धन नख- धरयो इंद्रको गर्वहरैया मैंहींतौहूं ॥ मायामें भुलानों नागकाली को नथैया मैंहीं तौहूं ॥ चीर चोर चढि गयो कदमपर युवतिन को छैया मैंहींतौहूं ॥ सप्तसुर- नसों रागगाय वंशीको वजैया मैंहीं तौहूं ॥ ३ ॥ रज- क मार फिरकर शृँगार गजदंत तुरैया मैंहींतौहूं ॥ धनुषतोडके थाप मल्लनमें जमैया मैंहीं तोहूं ॥ बली- कंसके केशपकड छाती पै कुदैया मैंहीं तोहूं ॥ उग्रसेनको राज्य मथुराको दिवैया मैंहीं तोहूं ॥ कुंदन विप्र यों कहै एक राधेको रटैया मैंहीं तोहूं ॥ ४ ॥

ख्याल–यमुना जल भरने चली अली वृषभानु कुमरिअलबेलीरी ॥ अद्भुत अनूप रँग रूप सुघर सुन्दर सुजान सुकुमारी ॥ सारी सुरंग शिर मांग भरी मोतिन सों तुरत सँवारी ॥ लट नागिनसी रही छिटक कपोलन काली और घुंघुरारी ॥ मग डरत डरत पग धरत लुकी सी परत लाज की मारी ॥

दो०-अंगन सुगंध गति न्यारी॥गजकी चलन मतवारी। सोनेकी झारी हाथ संग गोकुलकी नारि नवेली॥ १॥ दृग हैं मन्मथके बाण बंक भौंहैं कमान मुलतानी॥ दाडिमहैं दशन हँसन शोभा रसना नहिं सकत बखानी॥ बीडी मुख माल भाल बेंदी रति देख अधिक सकुचानी॥ कोकिला कंठ लखि लजै मधुर बोलन प्रिय सरस रसानी॥ दो०॥ नासा बेसर मल कारी॥ कुंडलकी हलन लगै प्यारी॥ रही सोनजुही सी फूल मदन यौवन गुण गर्व गहेली॥ २॥ फूलनके गजरे गले कंठमें चंपकली रुचि राजै॥ हाथनमें कंकन कड़ा भुजग में बाजूबंद विराजै॥ अँगुरिनमें मुँदरी जटित बनो हीरा पन्ना पुखराजै॥ कटिमें किंकिणि है सुवरणकी पग पायल रुनझुन बाजै॥ दो०॥ जंघा जों कदली सोहैं॥ कवि वर्ण सकै अस कोहैं॥ नख चंद मधुर मकरंद खिले जैसे बागन बीच चमेली॥ ३॥ जावक मँजीठ मेहँदी रचाय चरणन पैं रुचिर लगाई॥ तरवन की लाली देख अरुण कमलनकी कांति दुराई॥ वृंदावनमें निजकुंज विपिन में विहरत कुवँर कन्हाई॥ ललतादिक सखी बुलाय श्यामने राधे लेन पठाई॥ दो०॥ आई शरद रैनि सुख दाई॥ आनँद नहिं उरमाहिं समाई॥ सब सखी कहैं समझाय जनार्दन चरण शरण चलिहेली॥ ४॥

॥ चौपाई ॥

लैगागर घरसे निकसी यमुना जल आइयां हम भरने॥ वासुदेव वसुदेवको नंदन मोहिं मजाक लग्यो करने ॥ गाय चरावै राखै हियरा कौन गुमान लग्यो करने ॥ महबूब खबर होय कंसरजापै सुनत नंद लाग्यो डरने ॥१॥ समझ मालिनी मुखमें बोलौ अबलन आइयां तैयारी॥ मारचपेटा तेरी बेसर तोरौं पकर मरोरौं तेरी बैयारी ॥ अँगिया फारूं चीर लपेटूं कूक सुनायके जइयारी ॥ महबूब जोर नहिं मानो कोई कंस पछारूं मैं मारी॥ २॥ कहै ग्वालिनी सुनिये कान्हा मति कोइ और सुनै सीवे॥ नलियां सावै करै मुजाका देश निकाला देसीवे॥सासुल आगे जाय पुकारूं राजा धौस चढ़ै सीवै ॥ महबूब खबर होय कंसराजाको देश निकाल देदेवे ॥३ ॥ कहैं श्यामजी सुनो गुवाली इनबातन ना कछु सरई ॥ कहा बापुरो कंस रजाहै धरि मारों सकि को रखई ॥ ४ ॥

राग गौरी ॥

करत अचगरी नन्दमहरको ॥ सखा लिये यमुना तट बैठ्यो निबहत नहिं सब लोग डगरको ॥ कोउ खीजौ कोऊ किन बरज्यो युवतिनके मन ध्यान ॥ मन क्रम वचन श्याम वर्तत हैं और न दूजो ज्ञान ॥ सुरतरु कामधेनु सुख त्यागो ब्रज युवतिनके हेत ॥ सूर भजे जेहि भाव कृष्णको ताको सोइ फल देत ॥

राग झंझोटी ॥

बड़ो ढोटा खोटा नंदको आली जाको नाम कहत वनमाली ॥ मिल्यो यमुन तट हँस हँस मटकत लपट झपट मटकी पटकी चट दधिगट नटखट कठिन हियो मोहिं देत चल्यो गयो गाली ॥ माथे पै मुकुट धरे कानन कुंडल पहरे भालपर तिलक गोरोचनको करे गल बैजंती मुक्तामाल आली मुखतमोल की लाली ॥ कटि पीत वसन मानो घनदामिन नूपुर बजत वरणे छबिको कवि देखत ही मनहर्‌यो युगल प्रभु तिरछी चितवनशाली ॥ तब हँसि ग्वालिन दियो दान ॥ अति प्रेम नेम पहिंचान ॥ इति मगरोकन लीला समाप्त ॥

अथ प्रेमपरीक्षा लीला ॥

छंद ॥ श्रीसुमति निधान गणेश ॥ अति कीजे बुद्धि प्रवेश ॥ कछु राधापति गुण गाऊं ॥ यह सिद्धि शिवा सुत पाऊं ॥ १ ॥ हरि कथा कल्पतरु गावें ॥ सो मनवांछित फल पावें ॥ वृषभानुलाड़िली राधा ॥ अति प्रगटी बुद्धि अगाधा ॥ २ ॥ इक बोलि सखी सँग लीनी ॥ अति वचन रचन परवीनी ॥ सुनि सखी विचक्षण मेरी ॥ परतीत महा मन तेरी ॥ ३ ॥ सुनि सजनी मन उजियारी ॥ चलिये जहँ कुंजविहारी ॥ यह सुनो हमारी शिक्षा ॥ हम कीजे प्रेम परीक्षा ॥ ४ ॥ हमको हरिको

हित जेसो ॥ सब समझि परेगो तेसो ॥ हमसों हरी कहत सयाने ॥ हम दूजी नारि न जाने ॥ ५ ॥ ताते सजनी यह करने ॥ यह बार बार कह वरने ॥ मोक-दम ओट बैठैयो ॥ तुम कुंजकुटी ह्वै जैयो ॥ ६ ॥ अति वचन चातुरी कीजो ॥ मति नाम हमारो लीजो ॥ कहियो यक गोपसुता है ॥ सो दरशरावरे चाहै ॥ ७ ॥ तहां गई सखी ले साथा ॥ जहां बैठे गोकुलनाथा ॥ यहि कदम ओट बैठारी ॥ आपुन हरि निकट सिधारी ॥ ८ ॥ अति प्रेमकथा विस्तारी ॥ कह सुनिये मदन मुरारी ॥ इक गोप कुमरि चपलासी ॥ हरि दरश परशकी प्यासी ॥ ९ ॥ वाके मनमाँझ छपेहो ॥ किधौं स्वपने सदन गएहो ॥ तब ताहि कछु नहिं भावे ॥ वह कान्ह कान्ह रटलावे ॥ १० ॥ तादिन ते पान न खाई ॥ भोजन की कहा चलाई ॥ वहि कदम ओट बैठारी ॥ छवि रूप चतुर दई वारी ॥ ११ ॥ वह चंद्र वदन मृगनयनी ॥ कल चंपक तनु पिकबयनी ॥ वह षोडश बरस भई है ॥ नित यौवन ज्योति नई है ॥ १२ ॥ वारों तीये कमलासी ॥ अरु कोटि कोटि राधासी ॥ नहिं कबहूँ देइ दिखाई ॥ सो तुम कारण यहँ आई ॥ १३ ॥ अब तुम साँचे बड़भागी ॥ वहि महाकुँवरि अनुरागी ॥ घर बैठेही निधि पाई ॥ उठि मिलिये कुँवर कन्हाई ॥ १४ ॥ अब ताहि जाइ सनमानो ॥ अरु जन्म सफल करि जानो ॥

जब निकट तासुके जैहौ ॥ तब निरखि निरखि सुख पैहौ ॥ १५ ॥ यह सुनी सखीकी वानी ॥ हरि महा निठुरतई ठानी ॥ ये तुम अपराध लगाओ ॥ मति ऐसे वचन सुनाओ ॥ १६ ॥ यह बात मनहिं नहिं आनो ॥ मैं दूजी नारि न जानो ॥ वृषभानु कुँवरि जब देखौं ॥ तब जन्म सफल करि लेखौं ॥ १७ ॥ श्रीराधाहीको गाऊं ॥ श्रीराधाहीको ध्याऊं ॥ राधा राधा लव लाऊं ॥ क्यों दूजो नाम धराऊं ॥ १८ ॥ राधा सोवत राधा जागत ॥ राधाही सों मन लागत ॥ १९ ॥ राधा राधा मुख जपनो ॥ राधा विनु तनको तपनो ॥ २० ॥ श्रीराधा मेरी संपति ॥ श्रीराधा मेरी दंपति ॥ २१ ॥ श्रीराधा मेरी शोभा ॥ श्रीराधासों चित चोभा ॥ २२ ॥ जो राधा नाम कहायो ॥ सो मोहिं महामन भायो ॥ जो राधा राधा गावें ॥ तहां सुनिबेको हम आवें ॥ २३ ॥ राधा जहँ चरचा कीजै ॥ तहँ प्रथम मानि हम लीजै ॥ यह सत्या अचल हमारी ॥ क्योंहीं यह टरत न टारी ॥ २४ ॥ उनही पर फेरि सिधावो ॥ मत भूल भरोसो लावो ॥ विनती करि पाँयन परियो ॥ अपराध क्षमा यह करियो ॥ २५ ॥ यह फेरि कुवँरि पर आई ॥ फिरि कुवँरि सखी समझाई ॥ मनमोहन पर फिरि जैयो ॥ विनती करिकै समझैयो ॥ २६ ॥ फिरि गई सुनतहीं ऐसी ॥ मन मोहनके ढिगवेसी ॥ फिरि सुंदरि

कह्यो सँदेशो ॥ सुनिये करुणामय केशो ॥ २७॥ करुणा मय नाम तिहारो ॥ अब ता तनु क्यों न निहारो ॥ उत्कंठाकै त्रिय आवें ॥ जो नायक फेरि पठावें ॥ २८ ॥ ताको अपराध महाहो ॥ तुम समझत कहत कहाहो ॥ हरि ऐसी करै न कोई ॥ यह पुरुष धर्म नहिं होई ॥ २९ ॥ मनमोहन सों रति मांडे ॥ कै मान तुरतहीं छांडे ॥ वाको तो स्वपनो प्यारो ॥ तुम नाहीं नेक निहारो ॥३०॥ ये सखी वचन सुनि काना ॥ हरि बोले शील निधाना ॥ मति बेर बेर यहँ आओ ॥ मति बिनु अपराध सताओ ॥ ३१ ॥ संकेत सहज यह मेरो ॥ मग जोवत प्यारी केरो ॥ ता कारणही ह्यां आयो ॥ तुम तो विन काज सतायो ॥ ३२ ॥ कहूं प्यारी आन परेगी ॥ तब मोसों मान करेगी ॥ तब पाँइन परत मरोंगो ॥ कैसे कै धीर धरोंगो ॥ ३३ ॥ दूतीके अँग अँग फूले ॥ जब हरि देखे अनुकूले ॥ दूती उनही लै आई ॥ हरि नीचे नारि नवाई ॥ ३४ ॥ हरिको सुंदर टकटोरे ॥ हरि निरखि निरखि शिररोरे ॥ हरि लोचन पलक न खोले ॥ हरि त्राहि त्राहि करि बोले ॥ ३५ ॥ तब दूती प्रेम बढायो ॥ हँसि मंगल वचन सुनायो ॥ हरि सुनो यही राधा है ॥ जा मिलिवेकी साधाहै ॥ ३६ ॥ नहिं हरिहि भरोसो आयो ॥ तब प्यारी वचन सुनायो ॥ हरि आतुर ह्वै उरलाई ॥ हरि मनहु

रंक निधि पाई ॥ ३७ ॥ राधा मुख चंद्र नवीनो ॥ सुख श्याम चकोरहि दीनो ॥ सब हियकी तपत बुझानी ॥ तनु पुलकित गदगद बानी ॥ ३८ ॥ मनु महा मोहि मनरंजा ॥ हँसि देत परस्पर पंजा ॥ प्यारी ये वचन उचारे ॥ सुनि प्राण अधार हमारे ॥ ३९ ॥ मनमें ये वचन धरोंगी ॥ कबहूं नहिं मान करोंगी ॥ ४० ॥ अब रीझि कहा हम देही ॥ तनु प्राण तुम्हारे देही ॥ हरि राधा वृंदा कानन ॥ सुख लगे परस्पर मानन ॥ जो चारि पदारथ चाहें ॥ सो ये हरि गुण अवगाहें ॥ ४१ ॥ अरु एक एक फल भोगी। कबहूं नहिं होत वियोगी। धनि धनि धनि नवल किशोरी ॥ श्रीकृष्ण कुँवरि की जोरी ॥ प्रभु धन्य गरुडके गामी ॥ बलि जै जै अंतर्यामी ॥ गुण गावे नायक दासा ॥ हरि बालकृष्णकी आसा ॥ ४२ ॥

इति प्रेमपरीक्षा लीला सम्पूर्णम् ॥

अथ पटविनी लीला ॥

श्यामल तनु परम सुशीला ॥ लाई पटविनि रचि जु चुटीला ॥ द्वारपाल भीतर मोहिं जानदे -तजिदे हठ जु हठीला ॥ १ ॥ टेक ॥ देखी नई निपट चंचल-सी तोहिं जान नहिं देहों ॥ है दुनिया ऐसी क्यों तेरो वचन मानिहों लेहों ॥ २ ॥ मोसीहूको नाम धरतु है किन तोहिं सीख सिखाई ॥ तनक दया करि दई सँवरे बड़ी आश करि आई ॥ ३ ॥ नाम सुशीला धरयो

विप्रकिन कहति आतुरे बैना ॥ ले भाजेगी वस्तु राजकी मैं परखे तो नैना ॥ ४ ॥ रावर माहिं जाति है रूरी किनि है तोहिं बुलाई ॥ ताहूपै इतराति गाँठिकी खरचति है चतुराई ॥ ५ ॥ उधरि बैठि धीरज धरि मनमें जो तो माहिं भलाई ॥ बरजोरीसी करत विना समझे तैं धूम मचाई ॥ ६ ॥ कै आज्ञा कीरति जू देहै कै कीरतिकी जाई ॥ भीतर जान देहुँगो तबहीं मोहिं वृषभानु दुहाई ॥ ७ ॥ नृपकी देत दुहाई एहो भीरपरी कहा तोकों ॥ अबला जानि तापै व्यापारिनि क्यों अटकावतु मोकों ॥ ८ ॥ राजभवनकी पटविनि औरे तू कोऊ जु छलीसी ॥ चट चट वचन कहत मोसन मुख निपट वेखुनीली दीसी ॥ ९ ॥ हैं कोऊ तू नंदगांमकी याते दीठ खरी है ॥ समझि समझि कै मैं याहीते तोसों रवई करीहै ॥ १० ॥ कैसो है नंदगाम घर बसे काहे दोष लगावैं ॥ धन्य पौरि पालक तू नृपके इनगुण क्यों मन भावैं ॥ ११ ॥ बड़ी बड़ाई जाननदेहो फिरि जैहों तूपाछे ॥ जो सुनि पावें मानसुता बुलवाहि लेहिंगी आछे ॥ १२ ॥ इतनेहि चित्रा बूझति आई तू जु कहाँते हेरी ॥ मोसों कहदे सुंदरि ब्योरो तोहिं चलों सँग लेरी ॥ १३ ॥ होंहूं गहनो पोहनहारी सब वनितनकी प्यारी ॥ गनि गनि नाम धरतु मोको यह पौरीको अधिकारी ॥ ॥ १४ ॥ गहनो पोहि जडाऊं सूचति दीसति

चतुर महाई ॥ हौं निकसी याही कारज को भली भई तू पाई ॥ १५ ॥ जो चोखी मखतूल जु तोपे अरु रेसम अति रूरो ॥ लेहि चाहिकरि सबहिन चहियत केश बांधिबे जूरो ॥ १६ ॥ सैनन माहिं बतायो गठरी माहिं सबै मोपेहों ॥ पौंरि नघाइ लेचली जोपै बलि बलि हौं तोपेहों ॥ १७ ॥ लेचली बहुत वानदे वाहीं तब वहि किन्हूं नटोंकी ॥ हरिको हिय शीतल भयो चौकी बैठी प्रिया विलोकी ॥ १८ ॥ झोरीते कर काढ़ि चुटीला ले भई आगे ठाढ़ी ॥ देखि देखि ताकी बहु रचना नागरि अति रुचि बाढ़ी ॥ १९ ॥ नीची ग्रीवा छबिकी सीवा कछु चितवत तिरछोहीं ॥ संगति भली भलो कुल पै यह दीसत निपट लजोहीं ॥ २० ॥ आज्ञा करी बैठ तू सुंदरि लाई भेंट भलीहै ॥ पटविनि तो तू कहति लगति मोहिं मानो नृपति ललीहै ॥ २१ ॥ लायक तुम कहो बात बड़ीही मो बिसाति नहिं एती ॥ आशा लागी फिरों नगरमें घर घर फेरी देती ॥ २२ ॥ सासु ननँद कैसी है तेरी कैसी द्योर जिठानी ॥ कैसो पति परिवार मिल्यो है कहिदे सांची वानी ॥ २३ ॥ सांच कहों निंदासी लागे सासु ननँदहै ऐसी ॥ पानी माँगत पाहनपाहें करों बड़ाई कैसी ॥ २४ ॥ पति मेरो मन लिये चलतु है ओजु पिवावे पानी ॥ स्वारथको परिवार सबै अभिमानी द्योर जिठानी ॥ २५ ॥ हँसि हँसि सबै लगीं

झुकि अंकनि पटविनि मिली खिलौना ॥ आपुसमें सब कहति परस्पर ऐसी बात कहोना ॥ २६ ॥ बात कहत देखो प्यारी जू छिनमें भई पराई ॥ काको विलग मानिये अपनी हाँसी मैं जु कराई ॥ २७ ॥ सखी करो जिन हाँसी याकी हैजु विदेशिनिभोरी ॥ तुरत कहिदई अपने मनकी बात न राखी चोरी ॥ २८ ॥ कौन कौनसे नगर जातिहै कौन कौनसे गेहा ॥ हम बूझतिहैं ताहिं रँगीली किहिठां अधिक सनेहा ॥ २९ ॥ नयननमें मुसिकाइ रही चुप उत्तर कछु न दीयो ॥ तब चित्राने हाथ पकरिकै बहुत निहोरो कीयो ॥ ३० ॥ जो प्यारी परसन्न करे तो नित होइ तेरो ऐबो ॥ मानी विनती अब कै मेरी यहू बात कहि देवो ॥ ३१ ॥ मेरो हित नंदगाम बहुत है कहा राखौं अब ओटा ॥ सबहीको आदर राखतहै नंदमहरिको ढोटा ॥ ३२ ॥ पाट तागरी मेरे करकी पहरि मोह अतिमाने ॥ माला रीझि पुहाइ कहै आवन जु वेगि बरसाने ॥ ३३ ॥ राजकुँवरि सुंदर सुशील सबहीके मन जू भावे ॥ बरसानेको नाम सुन-तही दृगन नीर भरि आवे ॥ ३४ ॥ आरज सेव मानि अपने मन वह चित रुक्यो रहेरी ॥ गृह वन फिरत तऊ वाको चित याही ओर बहेरी ॥ ३५ ॥ मैं देख्यो टटोरि सब अंगनि दुलहनि ही रँगराच्यो ॥ ब्यालका-लते ब्याह सगाई वितमन नटवा नाच्यो ॥ ३६ ॥ बहुत

रचत उद्यम जु श्यामघन राधारूप उमाहें॥ कुँवरि कहो तनु छिये तो देखें विनु दृग कलतनुनाहें ३७॥ कहति कहति हों होति बावरी अब जिनि आगे बूझे॥ प्रेम बली जिनि मोहिं दबाने ऐसी गति मन सूझे ३८॥ पटविनि कथा कही प्रीतमकी सबको प्रेम भिजायो॥ समझि सकुचि अबहूं हे प्यारी तऊ गरो भरिआयो॥ ॥ ३९ ॥ ललता कहति कौन दिन सजनी तू नँदगाम गईही॥ कौंन भांति प्रीतमके मनकी तैं सब बात लईही॥ ४०॥ इतनी तौ मैंहूं परखीहै गाढी लगनि हिये॥ सजन सगारथ कठिन लोक विधि रहे आडही दिये॥ ॥ ४१ ॥ तू पटविनि उन उर अंतरकी बात जु कैसे जानी॥ कहति कछू विद्याबल कै मोहन मुख आपु बखानी॥ ४२॥ उत्तरदेहि कौन ललताको इत उत वे पथगाते॥ समझि करत उपचार लखि परी उर उरझ-निकी बाते॥ ४३ ॥ रोम रोम प्रीतमके प्यारी सुंदर सींव सनेहा॥ क्यों न्यारे रहिसकैं सखीये एक प्राण द्वैदेहा॥ ॥ ४४॥ ललता प्रेम बहतिहै उलटी जो जाने सो जाने॥ श्रीहरिवंशप्रसाद रसिक मरमीही रीति बखाने॥ ४५॥ सावधान करवाय सहेली दंपति लाड़ लडावे॥ वृंदावन हित रूप प्रेमके कौतुक नाना भावे॥ ४६ ॥

इति श्रीपटविनिलीला सम्पूर्णम् ॥

अथ योगीलीला ॥

राग गौरी ॥

यह योगी बसतु कहां है ॥ मैं परख्यो बड़ी बारते यामें जुगति योगकी नाहै ॥ टेक ॥ कौन गुरू उपदेश ते इन घर छांडो तात ॥ ललता निकट बुलायके यासूं बूझि मरमकी बात ॥ १ ॥ चितवनि भऱ्यो सनेहकी हिये ललक कछु ओर ॥ घर घर प्यासीसों फिरे याके चितकी वृत्ति न ठोर ॥ २ ॥ यह योगी भयो कर्मसों नहीं ज्ञानको अंग ॥ योग बाहिरे जो दिये तो कियो होय गुरुसंग ॥ ३ ॥ कै योगी जादू करी मोह्यो राजकुमार ॥ सुंदरतापै रीझिके ले आयो अपनीलार ॥ ४ ॥ बाहूसों विरच्यो जु अब पुर कौतुक कियो हेत ॥ रूप सबदीस्योसों लगे यह फिरि फिरि फेरी देत ॥ ५ ॥ जिहिं देखे तन ऊजरी तहँ ठैरावैनैन ॥ यह औगुणहै योगमें इं सत्य कहतहूंबैन ॥ ६ ॥ यह योगी तुम नृपसुता घटति नकही नजाय ॥ जो संदेह जु बूझिहों तो अबहीं लेहु बुलाय ॥ ७ ॥ ललता काचे योगबल जिन त्याग्यो परिवार ॥ विधि प्रतिकूल तहां भये यह जानि परी निर धार ॥ ८ ॥ योगी लियो बुलायके बैठ्यो सन्मुख आइ ॥ हियके हिय फूले सखी कछु वस्तु दुरीसी पाइ ॥ ९ ॥ सींगीनाद बजाय तू राग रँगीलो गाय ॥ बास भानपुर देहिंगी प्यारी सुंदर कुटी छवाय ॥ १० ॥

सींगी अधरनु धारिकै रुचिर अलाप्यो राग ॥ किधौं फुरी जो मोहिनी अति उर उलझ्यो अनुराग ॥ ११ ॥ रीझी कीरतिनंदनी विधना अखिल निधान ॥ जो कछु इच्छा रावरी अब विरमो पुर वृषभान ॥ १२ ॥ कौन मनोरथ करिभये तुम जु परम अवधूत ॥ अखिल पुरुष परच्यो नहीं लाय हिये रावरी कूत ॥ १३ ॥ ग्रीव. ढोरि रावल कही, तुम जू भाषत नीति ॥ परदामेंकी भामिनी क्यों लहो योगकी रीति ॥ १४ ॥ योगीको घर दूरिहै को भाषन समरत्थ ॥ गुरु आगमसों पहुँच्यो जहँ तहँ नाथ गह्यो दृढहत्थ ॥ १५ ॥ हाथ गहेनको को कहा शून्यसान सों देश ॥ योगी ध्यान नाहिंन सुन्यो कऱ्यो कारो योगीको वेष ॥ १६ ॥ बस वाहीके बरणहैं सब वाहीके रूप ॥ सकल पसारो अलखको सुनि टेरी रावल भूप ॥ १७ ॥ अलख अलख जाको कहैं बरणों ताको अंग ॥ जैसो फूल अकाशको किन देख्यो कैसो रंग ॥ १८ ॥ दिन दश नगरी विरमते समझि तिहारो नेह ॥ अब चरचा ऐसी करी पग धरैं न तिहारे गेह ॥ १९ ॥ योगीकुल जनमें नहीं योगलियो सुनि ज्ञान ॥ राज्य विभव हमने तजा जाको तुम जुकराति अभिमान ॥ २० ॥ कौन देश और कौन पुर कौन नामको ग्राम ॥ रावलवदन प्रकाशियो

हम सब मिलि करत प्रणाम ॥ २१ ॥ भली भई तुम आप मुख कही आपनी आदि ॥ यह संदेह निवारियो बलि और बात सब वादि ॥ २२ ॥ निरखत प्यारी वदन दिशि हीयो धुकपुक होत ॥ जैसे परसत पवनके झुकरावति दीपककी जोत ॥ २३ ॥ देश रँगीलो कुल बड़ो नाम धाम सुखमूल ॥ विदितलोक सब जानिये प्रेमिन कुल अनुकूल ॥ २४ ॥ सब प्राणी निर्भय बसें सबको पालन होय ॥ हम सुख लाइ तहां पलें यामें संदेह न कोय ॥ २५ ॥ अब योगी वन वन फिरत कहहूं शोचि निहार ॥ सुखित भये गुरु ज्ञानसों सब व्यर्थ सुन्यो संसार ॥ २६ ॥ यह जू ब्रजमंडल बस तुम ठहरायो कौन ॥ बूझति कीरति निंदत सुख रावल गहि रह्यो मौन ॥ २७ ॥ रहि रहि बोलत एक सखि हँसति नैनकी कोर ॥ योगी कैधों कौतुकी तन सिमटत जैसे चोर ॥ २८ ॥ चित्रा नेरे आउ तू लक्षण परखि निराट ॥ रावल रावल कहा कहे याकी चरचा औरे घाट ॥ २९ ॥ केशन ढाँपे बसनसों जो भीजे जु फुलेल ॥ योगीनहीं भोगी सखी एनंदसुवनके खेल ॥ ३० ॥ गहे बाट वनको भजे सुख जु अपूरव लूटि ॥ मन बाजी ह्वाँई रह्यो गई बाज हाथते छूटि ॥ ३१ ॥ खेल विविध नित २ रचे भीजे उर अहलाद ॥ वृंदावन हित रूप यश गायो श्रीहरि वंशप्रसाद ॥ ३२ ॥ इति योगिलीला समाप्ता ॥

अथ गंधीलीला ॥

राग गौरी ।

ए गंधी की कुँवरि नवेली ॥ कहत लेउ बड़भामिनी चोखो फुलेल चमेली ॥ टेक ॥ अति रोटा अति घेरको चोली शोभाअयन ॥ कनक छपी सारी लसे याके बड़े बड़े हैं नैन ॥ १ ॥ अतर लहे बहु भाँतिको सीसी भरी पिटार ॥ धरे जु बाएँ हाथमें संग लाग केतिकहार ॥ २ ॥ तनु सामल अति ऊजरी मन खोले चौगान ॥ लोचन वाजीसी रच्यो मनहु चुटीले बान ॥ ३ ॥ लोग बसत ह्यांई तरे राजत नाहिन कानि ॥ हों आई आशा लगी घर बड़े करन पहँचानि ॥ ४ ॥ तैसी आवो विशद शशि वाही को सुख होय ॥ गंधीके जु परोसमें सौरभ लेत जु कोउ ॥ ५ ॥ चोखो अंबर डिगनमें गाहक होय सुलेहु ॥ बसत भानपुर सोहनो कोई मोहिंजु आदर देहु ॥ ६ ॥ सौरभ महरकी गलिनमें जित तित करत हैं गान ॥ परदामें भामिनि कहै कहा यह बोलत आन ॥ ७ ॥ अरी अपूरब कौन यह आई नगर मँझार ॥ दृग शोभा उरझे परैं ना सुगंध लागीलार ॥ ८ ॥ फिरत फिरत आई तहां रावल पति जु निकेत ॥ चोखो अतर गुलाबको कोऊ राजभवन में लेत ॥ ९ ॥ चौंकि परी तब लाडिली बैठी अपने भौन ॥ लाउ वेगि सखि टेरिके गंधिन सी बोलत कौन ॥ १० ॥ नरम वचन

अति प्रीतिके तिनमें भरयो मिठास ॥ ह्यांलौं आई सुगंधि सखि जो याके पास सुवास ॥ ११ ॥ यह आइ कोउ दूरिते या नगरीकी नाहिं ॥ ज्यों बेचै त्यों लीजिये याहि लावे मंदिरमाहिं ॥ १२ ॥ गई सुदेवी दौरिकै कहति आवरी आव ॥ तोव्यापार छिप्यो नहीं कहौ कुमर मानदे ल्याव ॥ १३ ॥ मोपै चोखो अतर है तुम दे सकौ न मोल ॥ राजकुमरि ढिग चलो तुम बड़ि बोलो वेगि बोल ॥ १४ ॥ आदर दीये चले नाहिं फिरत निरादर गाम ॥ सौदा करि जानैं नहीं तेरो क्यों सुधरेगो काम ॥ १५ ॥ एक आई है चारि सुनि ले जुगई परचाय ॥ सौदा करि व्यापारिनि कहा पहले ही सतराय ॥ १६ ॥ यह सौदा महँगो नहिं तैसेही जु बिकाय ॥ जो तुम मर्म न बूझिहो का बैठो माल गमाय ॥ १७ ॥ भटू कौन रिझवारहै भानुसुता सम और ॥ कोमल परम स्वभाव सब रिझवारन शिरमौर ॥ १८ ॥ उझकतसी यह चलत है कछु लेत कन हेरि ॥ प्रिया हिए की चाहकी लेय थाह सयानी फेरि ॥ १९ ॥ बीच आय ललता मिली कहति जुपार उठाय ॥ अतिसकि जादूसों भरयो लिए सबको चित्त चुराय ॥ २० ॥ मोसी सौदागरि सुनो नहीं तिहारे देश ॥ नई नई वस्तु दिखायहों सखी एक-एकते वेश ॥ २१ ॥ तू देगी नहीं वस्तु तो कासों कहति नवीन ॥ ले सुगंधि गई जानिकै हम स्वामिनिपरम प्रवी-

न ॥ २२ ॥ आदर मोहिं दिवाइयो जो समझी हो चित्त ॥ साज अपूरव लायहों और आऊंगी नित नित्त ॥ २३ ॥ शोभा नीकी दई मृज्यो जित तित होत चिन्हार ॥ आँखियाँ हैं या दुनियामों वाँछित रूप अहार ॥ २४ ॥ आउ बैठिरी भामिनी अपनी वस्तु दिखाय ॥ तो उर भऱ्यो सनेह सों आनन में झलक्यो आइ ॥ २५ ॥ हों सनेह समझों नहीं फिरों जो उद्यम के काज ॥ तुम लायक जु कृपाकरो मोमन उपजतहै लाज ॥ २६ ॥ व्यापारिन क्यों बनिगई शोभाहू जंजार ॥ सबकोऊ दासीकर निज फिरो पराये द्वार ॥ २७ ॥ सौदा तो थोरो करै सब कोऊ ढिग बोल ॥ मोहिं देखि आनंदहिय बात कहत मुख खोल ॥ २८ ॥ सुनो कुमरि शोभा जु निधि बड़े घर नहीं देहि ॥ व्यापारिनितैं स्वांगसों सब कोऊ अतर जु लेहि॥ २९ ॥ सूंध्यो तनु जु छिपाइकै ज्यों ज्यों अपनो-धर्म ॥ टालो देहों कहति हौं जीय बड़ी होतिहै सर्म ॥ ३० ॥ भोरी पुनि साँची लगति या गंधिनिकी धीय ॥ सौदा पाछे कीजिये अब सुनो बचन जु यह सुख प्रीय ॥ ३१ ॥ बहुत बकावो मोहिं जिन हो प्रवीन तुम आप ॥ बहुरि कहोंगी खोलि मन यह पहलोही जु मिलाप ॥ ३२ ॥ तुंग विद्या ठोढ़ी गही लगति खिलौना मोहिं ॥ प्यारी की बातें रुचें कहि मैयाकीसों तोहिं ॥ ३३ ॥ मेरी सकुच गई नहीं पुनि मन मिल्यो न पास ॥ घटि बढ़ि बातें

कहे सखी होय राजभवन उपहास ॥ ३४ ॥ कौन देश को पुर सखी कौन नाम तेरोजु ॥ कौन कौनसे गांममें तू करति सदा फेरोजु ॥ ३५ ॥ कालिगईही नंद पुर लाई द्रव्य कमाय ॥ भरयो पिटार सुगंधिको लियो ब्रजपति सुवन मुल्याय ॥ ३६ ॥ मोहिं दाम दूने दिए वह ऐसो रिझवार ॥ तुम यश ऐसोई सुनो तब फिरि आई इहि दरबार ॥ ३७ ॥ वेहू बातन के रसिक अधिक सुनो देकान ॥ ऐसो मैं देख्यो नहीं प्यारी यह ब्रज चतुर सुजान ॥ ३८ ॥ इतकी उत उतकी जु इत कुसल कहोंगी आइ ॥ सुखित होउंगी हिये में प्यारी आदर दुहुँ दिशि पाइ ॥ ३९ ॥ सौदामें सौदा भयो दई मोहिं अनुकूल ॥ रसना एक कहा कहों ललता हों उरकी फूल ॥ ४० ॥ जानीरी हम जानीरी हमहैं उनहींके रंग बोलनि बहुत उतावली चटसार पढी एक संग ॥ ४१ ॥ यह लेव पिटार सुगंधिको कर अपनो व्यापार ॥ गाम गाम तोहिं डोलिबो तू काहे करति अबार ॥ ४२ ॥ सीसी काढी अतरकी दई कुमरिके पानि ॥ याको मोल नलेहुंगी मैं भेट करी हित मानि ॥ ४३ ॥ आपुन सूँघो बलिगई सबकूं देउ सुँघाय ॥ चोखो होय तो लीजियो नातर दीजो बगदाइ ॥ ४४ ॥ रीझी कीरतिनंदिनी अतर लगावति अंग ॥ कह्यो माँगिसो दीजिये व्यापारिनि अति चतुरंग ॥ ४५ ॥ असन वसन बहु द्रव्यदे राजी कीनी ताहि ॥ अब तू मांडि दुकान ह्यां जिन दूरि दिशं

तर जाहि ॥ ४६ ॥ गंधिनि कर सखि मूँदरी ललता करति विचार ॥ यह कीरति के हाथकी जो दीनी पलिका चार ॥ ४७ ॥ हिये बिराजत धुकधुकी जड़ी अमोलिकहीर ॥ सोऊ लई पहँचानिकै जब सरक्यो उरते चीर ॥ ४८ ॥ गोनेमें तीयरदई सो यह पहरे वाम ॥ लगि लगि श्रवण कहे सब ये नंदसुवनके काम ॥ ४९ ॥ इंदुश्वेत रानी दई मोतिन जोकी माल ॥ हौंजानति ललता कहे याके हिय लसति विशाल ॥ ५० ॥ अरी उतावल जिनकरो चित्रा भासति बैन ॥ छान्यो छदमरहे नहीं परे उघरि देखिहै नैन ॥ ५१ ॥ रजनीहू आई निकट जो यह बिदा न होय ॥ निश्चयछदमसुजानिये यामें संदेह न कोइ ॥ ५२ ॥ ज्यों ज्यों आवत सरबरी त्योंही हर्षत नीक ॥ समझि विशाखाने कह्यो सखीहै वह लंगरठीक ॥ ५३ ॥ प्यारी अब रजनीभई कहो जाउँ किहि गेह ॥ या नगरीमें है नहीं मेरो दूजी गैर सनेह ॥ ५४ ॥ गंधिनि मैं तू गल परू ह्यां न रहनको काम ॥ तू चंचल जु विदेशिनी पुनि यह राजाको धाम ॥ ५५ ॥ सब विधि करि सकुचत जु है मेरो मन जो शुद्ध ॥ हँसि हँसि क्यों ललता करो व्यापारिनि संग विरुद्ध ॥ ५६ ॥ कर ऊंचो यों कहत हैं झलकत मुंदरी जोति ॥ सखी गहि लई आंगुरी तब धुकर पुकर यह होति ॥ ५७ ॥ यह मुँदरी पाई कहां तैंने हमें बताय ॥ मोतिन माला धुक-

धुकी उरते उतारि दरशाय ॥ ५८ ॥ राजभवन देखी नहीं काहूदेश अनीत ॥ सखी अधिक जानी परी यह मंदिरकी रीत ॥ ५९ ॥ माला उरजु उतारते गई कंचुकी छूटि ॥ देखि देखि हरहरहँसी गयो भांड्यो कृष्णजू फूटि ॥६०॥ धनि गंधीकीनंदिनी कुल यश देश अनूप ॥ जबेजु महरि उदरते अब कढयो घूँघटतेरूप ॥ ६१ ॥ चौदहसींक महरिधरी औरन धरी जु सात ॥ हीरापुर-तिहँ रावरे जगते जु अनोखी घात ॥ ६२ ॥ कंटक परें जु केतकी गिने न जिय हिय हेत ॥ अलि अनन्य झुकि आवहीं बारबार रसलेत ॥ ६३ ॥ इति ॥

अथ दावानलपानलीला ॥

दोहा—खेलत खात अन्हात निशि, वासर वैर बढ़ाय ॥
कृष्णविहारी ब्रजजनन, कंसमहादुख दाय ॥

कंस वचन ॥

सवैया—जनम्यो ब्रज में नँदनंदनवीर अहीरन गर्व वढयो अति भारी । मारयो अघा औ बकासुरहू नहिं जानि हमार पराक्रम सारी । केतिक बातहै तासु सँहार-न नंद कुमारन कृष्णविहारी ॥ जारि अबै पुर क्षार करूं सब भाँति करौं ब्रज लोग दुखारी ॥

दोहा—दावानल वर मित्र मम, तुम सम बली न कोय ॥
वेगि जाय ब्रज जारहू, भागि बचै नहिं कोय ॥

दावानल उवाच ॥

वार्तिक-जयहो जयहो श्रीमन्महाराज गरीबनेवाज कृपासागर सब गुण आगर बुद्धि उजागर दीनबंधु दीनानाथ लोकपाल शोकघाल अभी मैं ब्रज जाकर सब धन जन वन खाकर आपका काज बजाकर यहां आकर कुछ सुस्ताकर एक तान गाकर पानी पीऊंगा।

दोहा-लैबीरा करि घोर रव, ताक्यो ब्रजकी ओर।
अतिप्रचंड बलबंड अरि, हहरत चल्यो बहोर ॥

राग कान्हरो ॥

दावानल ब्रज जनपर धायो। गोकुल ब्रज वृन्दावन तृण द्रुम चाहतहै चहुँ पास जरायो॥ घेरत आवत दशहु दिशा ते अति कीन्हें तनु क्रोध। नर नारी सब देखि चकृत भये दव लाग्यो चहुँ कोध॥ बहतो असुर घात किये आवत धावत पवन समाज। सूरदास ब्रज लोग कहत यह उठ्यो दवा अति आज॥ १॥ आय गई दव अतिहि निकटहीं। यह जानत अब ब्रज नहिं बचिहै कहत सबै चलिये जलतटहीं॥ करि विचार उठि चलन चहत हैं जो देखैं चहुँ पास। चकृत भये नर नारि जहाँ तहँ भरि भरि लेत उसाँस॥ झरझरात भहरात लपट अति देखियत नहीं उबार। देखत सूर अग्नि अधिकानी नभ लौं पहुँची झार॥ २॥ दशहु दिशाते बरत दवानल आवत है ब्रज जन पर धायो। ज्वाला उठी अकाश बराबरि घात आपने करि सब पायो॥

बीरा लै आयो संमुख ते आदर करि नृप कंस पठायो । जारि करों परलय छिन भीतर ब्रज बपुरा केतिक कहवायो ॥ धरणि अकाश भयो परिपूरण नेक नहीं कहुँ संधि बचायो । सूरश्याम बलरामहि मारन गर्व सहित आतुर ह्वै आयो ॥३॥ ब्रजके लोक उठे अकुलाई ॥ ज्वाला देखि अकाश बराबर दशहुँ दिशा कहुँ पार न पाई । हर हरात वन पात गिरत तरु धरणि तराकि तराकि सुनाई । जल बरषत गिरिवर तर पहुँचे अब कैसे गिरि होत सहाई ॥ लटकि जात जरि जरि बेली जर पटकत बांस कांस कुश ताल ॥ उचटत कर अंगार गगनलों सूर निरखि ब्रज जनन बिहाल ॥ ४ ॥ नन्द घरनि यह कहति पुकारे । कोउ बरषत कोउ अगिन जरावत दई परेउ है खोज हमारे ॥ तब गिरिवर कर धरेउ कन्हैया अब न बांचिहै मारत जारे । जेंवन करन चली जब भितरे छींक परी ती आजु सवारे ॥ ताको फल तुरतहि एक पायो सो उबरेउ भयो धर्म सहारे । अब सब को संहार होत है छींक किये एकाज विचारे ॥ कैसेहु ए बालक दोउ उबरैं पुनि पुनि शोचति परी खँभारे । सूर श्याम यह कहत जननि सों रहुरी माँ धीरज उर धारे ॥ ५ ॥

राग गौड ॥

झहरात झहरात दावानल आयो । घेरि चहुँ ओर

करि शोर अंदोर वन धरणि आकाश चहुँ पास छायो ॥ बरत बन बांस थर हरत कुश कांस जरि उड़त है भाँस अति प्रबल धायो।झपटि झपटत लपट पटकि फलफुटत फटि चटकि लटलटकि द्रुम द्रुम नवायो ॥ अति अग्नि झार भार धुंधार करि उचटि अंगार झंझार छायो। बरत वनपात भहरात झहरात अररात तरु महाधरणी गिरायो ॥ भये बेहाल सब ग्वाल ब्रजबाल तब शरण गोपाल कहिकै पुकारेउ । तृणा केशी शकट बकी बक अघासुर वाम कर राखि गिरि ज्यों उबारेउ ॥ नेक धीरज धरो जियही कोउ जिनि डरौ कहा यह सुरो लोचन मुँदायो । मुठी भरि लयो सब नाय मुखहीं दियो सूर प्रभु पियो ब्रजजन बचायो ॥ ६ ॥

राग कान्हरो ॥

अब की राखि लेहु गोपाल । दशहुँ दिशाते दुसह दावाग्नि उपजी है यहि काल ॥ पटकत बांस कांस कुश चटकत लटकत ताल तमाल। उचतट अति अंगार फुटत फर झपटत लपट कराल ॥ धूम धूषि बाढी धुर अंबर चमकत बिच बिच ज्वाल ॥ हरिण बराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल ॥ जिनि जिय डरहु नयन मूँदहु सब हँसि बोले नन्दलाल। सूर अनल सब सदन समानी अभय करे ब्रजबाल ॥ ७॥

राग गौंड ॥

दावानल अचै ब्रज जन बचायो ॥ धरणि आकाश लौं ज्वालमाला प्रबल घेरि चहुँ पास ब्रज बास आयो ॥ भये बेहाल सब देख नन्दलाल तब हँसतही ख्याल तत काल कीनों । सबनि मूँदे नयनि नाहिं चितये सैन तृषा ज्यों नीर दे अचै लीनों ॥ देखो अब नयन भरि बुझि-गई अगिनि झरि चितै नर नारि आनन्द भारी ॥ सूर प्रभु सुख दियो दावानल पीलियो कहत सब ग्वाल धनि धनि मुरारी ॥ ८ ॥

राग विहागरो ॥

चकृत देखि यह कहि नर नारि । धरणि अकाश बराबर ज्वाला झपटत लपटि करारि ॥ नहिं वरष्यो नहिं छिरक्यो काहू कहँ धों गयो बिलाई । अति आघात करत वन भीतर कस गयो बुझाई ॥ तृण की आगि बरत नहिं बुझि गई हँसि हँसि कहत गोपाल ॥ सुनहुँ सूर वह करनि कहनि यह ऐसे प्रभुके ख्याल ॥ ९ ॥

राग बिलावल ॥

जाके सदा सहाइ कन्हाई । ताहि कहौ काको डर माई । बन घर जहां तहां सँग डोलै । खेलत खात सबनि सों बोलै ॥ जाको ध्यान न पावैं योगी । सो ब्रज माखन मिश्री भोगी ॥ जाकी माया त्रिभुवन छावे । सो यशुमति

के प्रेम बधावे ॥ मुनि जन जाको ध्यान न पावें। ब्रज जन लैलै नाम बुलावें ॥ सूर ताहि सुर अंमर देखो जीवन जन्म ब्रजहि को लेखो ॥ १० ॥

राग कान्हरो॥

ब्रज वनिता सब कहति परस्पर नन्दमहर को सुत बड़बीर। देखो धौं पुरुषारथ इन को अति कोमल तनु श्याम शरीर ॥ गयो पताल उरग गहि आन्यो ल्यायो तापर कमल लदाय ॥ कमल काज नृप ब्रज मारत हो कोटि जलज तेहि दये पठाय। दावागिनि नभ धरणि बराबर दशहु दिशाते लीनो घेरि। नयन मुँदाय कहा तेहि कीनों कहूं नहीं जो देखे हेरि ॥ ए उत्पात मिटत इनहीं ते कन्स कहा बपुरो है छार। सूरश्याम अवतार बडो ब्रज एहीं हैं कर्त्ता संसार ॥ ११ ॥

राग सोरठ॥

अति सुन्दर नंदमहर ढिटोना। निरखि निरखि ब्रजनारि कहति सब ये जानत कछु टोना ॥ कपट रूप की त्रिया निपाती तबहिं रहे अति छौना ॥ द्वार शिला पर पटकि तृणावर्त्त ह्वै आयो अब पौना। अघा बकासुर तबहिं सँहारेउ प्रथम कियो वन गौना ॥ सूर प्रकट गिरि धरेउ वाम कर मैं जानति बलि बौना॥१२॥

राग मारू॥

दवाते जरत ब्रज जन उबारे। पैठि जल गयो गहि

उरग आन्यों नाथि प्रकट फन फननि प्रति चरण धारे ॥ देखैं मुनिलोक सुरलोक शिवलोक के नन्द यशुमति हेत वश मुरारी । जहां तहां करत स्तुति मुखनि देव नर धन्य जय शब्द तिहुँ भुवन धारी ॥ सुख कियो यमुन तट एक बासररैनि प्रातही ब्रज गये गोप नारी । सूर प्रभु श्याम बलराम नन्द धाम गये मात पितु ब्रज जनहि सुखदकारी ॥ १३ ॥

राग रामकली ॥

हरि ब्रज जनके दुख बिसरावन । कहा कन्स कब कमल मँगायो कहा दावानल दावन ॥ जल कब गिरे उरग कब नाथ्यो नहिं जानत ब्रज लोग । कहां बसे यक दिवस रैनि भरि कबहिं भयो यह सोग ॥ यह जानत हम ऐसेहिं ब्रजमें वैसेहि करत विहार । सूर श्याम जननी सों माँगत माखन बारंबार ॥ १४ ॥

राग बिलावल ॥

नेक रहौ माखन द्यों तुम को । ठाढी मथति जननि दधि आतुर लवनी नन्दसुवन को ॥ मैं बलि जाउँ श्याम घन सुन्दर भूख लगी तुम्हैं भारी । बात कहूं की बूझति श्यामहि फेरि करत महतारी ॥ कहत बात हरि कछु नहिं समुझत झूठेहि भरत हुँकारी । सूरदास प्रभु के गुण तुरतहि बिसरिगई नन्दनारी ॥ १५ ॥ बातनहीं सुत लाय लयो । तबलों मथि दधि जननि यशोदा

माखन करि हरि हाथ दियो ॥ लैलै अधर परस करि जेंवत देखत फूल्यो मात हियो ॥ आपुहि खात प्रशंसत आपुहि माखन रोटी बहुत दियो ॥ जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुत हित वश करि नन्द चियो। यह सुख निरखत सूरप्रभू को धन्यधन्य फल सफलजियो॥१६॥

राग सूहो ॥

देरी मैया दोहनी दुहि हौं मैं गैया। माखन खायो बल भयो करि नन्द दुहैया ॥ कजरी सेन्दुरी धूमरी धौरी मेरी गैया ॥ दुहि ल्याऊं मैं तुरतही तू करि दे घैया ॥ ग्वालनि की सर दुहतहूं बूझहु बल भैया। सूर निरखि जननी हँसी तब लेति बलैया ॥ १७ ॥

रागबिलावल ॥

बाबा मोको दुहन शिखायो। तेरे मन परतीत न आवै दुहत अँगुरियनि भाव बतायो ॥ अँगुरिन भाव देखि जननी तब हँसि कै श्यामहि कंठ लगायो। आठ वरष को कुँवर कन्हाई इतनी बुद्धि कहां तें पायो ॥ माता लै दोहनी कर दीन्हीं तब हरि हँसत दुहुँनको धायो। सूर श्याम को दुहत देखि तब जननी मन अति हर्ष बढ़ायो ॥ १८ ॥ जननी मथति दधि दुहत कन्हाई ॥ सखा परस्पर कहत श्याम सों हमहूं ते तुम करत चँडाई ॥ दुहन देहु कछु दिन अरु मोको तब करिहौ

मोसम सरिआई ॥ जब लौं एक दुहोगे तबलौं चारि दुहौं तौ नन्द दोहाई ॥ झूठहि करत दोहाई प्रात उठि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूरश्याम कहेउ काल्हि दुहैंगे हमहुँ तुमहुँ मिलि होड लगाई ॥ १९ ॥

इति दावानलपान समाप्तम् ॥

अथ गुरुमान लीला ॥

वार्त्तिक–अरीबीर ! कबहुँ श्याम मोरेधाम भी पधारैं-गे मेरे मनकीभी अभिलाषा पूरी करैंगे ज्यों नहीं जो तू उनके गुण गावेगी उनका कीर्त्तन करैगी तन मन धन उनको अर्पन करैगी हृदय से बरैगी तौ अवश्य श्रीमु-रारी भक्तहितकारी कुंजविहारी तेरी यारी करैंगे अरी आली मेरेचित्तमें तो आठो याम वनमालीही बसता है ॥

राग सुघराई ॥

आंखिनमेंबसै जियरामेंबसै हियरामें बसै निशिदिन प्यारो ॥ मनमें बसै रसना में बसै अंग अंग बसत नन्द वारो । सुधिमें बसै बुधिहूमें बसै उरमें बसत प्रिय प्रेम दुलारो । सूर श्याम मनहू में बसत संग ज्यों ही छाया होति न न्यारो ।

दोहा–अन्तर्यामी जानि हरि, मधुर मंद मुसकाइ ।
श्यामाघर आवन कह्यो, ताघर पहुँचे जाय ॥

राग कल्याण चर्चरी ।

हर्षि प्रिय प्रेम तिय अंकलीन्ही । प्रिया विन बसन

कर उलटि धरि सुजनि भरि सुरति रति पूर अति निब-ल कीन्ही । अपने कर नखनि सों अलक कुरवार हीं कबहुँ बांधे अतिहि लगत लोभा । कबहुँ मुख मोरि चुम्बनदेत हरष है अधर भरि दशन वह उनहि शोभा ॥ बहुरि उपज्यो काम गोपिका पति श्याम मगन रस ताम नहिं तनु सम्हारै । सूर प्रभु नवल नवला नवल कुंज गृह अन्त नहिं लहत दोउ रति विहारै ॥

दोहा-इत राधा सँग सखिन के, चलीं यमुन स्नान ।
आज श्याम आये नहीं, अतिरिस मनमें ठान ॥

चौपाई ॥

सखिन संग वृषभानुकिशोरी । चली न्हान प्रातहिं उठि गोरी ॥जाके घर निशि बसे कन्हाई । ताघर ताहि बुलावन आई ॥ ठाढ़ी भई द्वार पर जाई । कढ़े तहाँते कुँवर कन्हाई ॥ औचक मिले न जानत कोऊ । रहे चकित इत उतते दोऊ ॥ फिरी सदन को तुरतहि प्यारी । न्हान जानकी सुरति बिसारी ॥ भई बिकलतनु रिस अतिबाढी । रहिगईं सखी निरखि सब ठाढी ॥ रहि गये ठाढे श्याम ठगेसे । सकुचाने उर शोच पगेसे ॥ जब देखे हरि अति मुरझाये । तब सखियनि गहि भुज समझाये ॥ उलटि भई सब हरि की धाईं । देके बांह प्रिया जहँ ल्याईं ॥ देखि श्याम आये जहँ राधा । बैठी मान दृढ़ाय अगाधा ॥ रिसहीके रस मगन किशोरी । भईश्याम मति देखत

भोरी ॥ ठाढे चकृत चित्त अकुलाहीं । मुखते वचन कहे नहिं जाहीं ॥

दोहा-व्याकुललखिनँदलालको,सखियनकियोविचार ॥
अब दोऊ जैसे मिलैं, करिये सो उपचार ॥

सो०-अति रिस नारि अचेत, को सुनिहै कासों कहैं ॥
इत ये धर नहिं चेत, परी रुठावत बान इन ॥

चौपाई ॥

प्यारी निकट गईं सब आली । ठाढे पौरि रहे बन-माली ॥ कहति मान कीन्होंतैं प्यारी । न्हान जान ते फिरी कहारी ॥ तोहिं लखतही री गिरिधारी । अति-हि डरे तनुसुरति बिसारी ॥ मुरछि परे धरणी अकुलाई । तरु तमाल जनु गयो झुराई ॥ तैं ऐसे चितयो कछु उनको । नेकहुँ चैन रहेउ नहिं तिनको ॥ तेरे नयन अरी अनियारे । किधौं बान खरसान सँवारे ॥ भौंह कमान तानयों मारे । क्योंकरि राखे प्राणपियारे ॥घायल जिमि मूर्च्छित गिरिधारी । अमीवचन अब सींचि पियारी ॥ बहु नायक वे तू नहिं जानै । तिनसों कहा इतौ दुख मानै ॥ बांह गहौ हरिको ढिग लावैं । अब वे निज अपराध क्षमावैं ॥ गहति बाँह तुम हीं किन जाई । मोसों बांह गहावन आई ॥ काल्हिहि सौंह मोहिं उन दीनी । आजहिं यह करनी पुनि कीनी ॥

दोहा-देखि चुकी उनके गुणन, निज नयनन सुख पाय ॥
तिन्हैं मिलावति मोहिं अब, बाँह गहावति आय ॥
सो०-मिलौं न तिनसों भूल, अब जौलौं जीवन जियौं ॥
सहौं विरहको शूल, वरु ताकी ज्वाला जरौं ॥

चौपाई ॥

मैं अब अपने मन यह ठानी । उनके पंथ न पीऊं पानी ॥ कबहूं नयन न अंजन लाऊं । मृगमद भूलि न अंग चढाऊं ॥ हस्तबलै पट नील न धारौं । नयनन कारे घन न निहारौं ॥ सुनौं न श्रवणनि अलि पिक बानी। नीलजलज परसौं नहिं पानी ॥ सुनत प्रिया की बात सुहाई।डरपत ठाढे पौरि कन्हाई ॥ सखी कहति यों हठ नहिं लीजै । हरि सों ऐसो मान न कीजै ॥ तू है नवल नवल गिरिधारी । यह यौवन हैरी दिनचारी ॥ क्षण क्षण जों करको जल छीजै । सुनरी याको गर्व न कीजैं ॥ नन्दनन्द मुख शशि सुखकारी ॥ तू करि नयन चकोरि पियारी । हुतो प्रेम धन तौ यह भारी । सो अब कहि तैं कियो कहारी ॥ कहति हुती रूसौं नहिं कबहीं । सो अब रूसतिहै जब तबहीं ॥ सुनि है सुघर नारि जो कोई । करिहै हँसी प्रेम की सोई ॥

दोहा-मान कियो जो भावते, सो न भावतो होय ॥
उरते रिसवत प्रेम कत, अंत भावतो सोय ॥

सो०-लख कहौ किनकोय, पिय सनेह जो गोय है ॥
चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचो किनहुँ ।

चौपाई ॥

तुम वे एक न दोय पियारी । जलते तरंग होय नहिं न्यारी ॥ रस रूसनो ओस कन जैसो । सदा न रहै चाहिये तैसो ॥ तजि अभिमान मिलहि प्रिय प्यारी । मानु राधिका कही हमारी ॥ चुप न रहति कहकरतिमनावन । तुम आई हौ बात बनावन ॥ बहुत सही घर आई यातें । सुरति दिवावति पिछली बातें ॥ मोसौं बात कहति हौ काकी । जाहु घरन अब कछु है बाकी ॥ को उनकी नहिं बात चलावत । हैं वे अब तुमहीं को भावत ॥ तुम पुनीत अरु वे अति पावन । आई हौ सब मोहिं मनावन ॥ यह कहि रही रोषभरि भारी । गईं सखी ये जहाँ बिहारी ॥ कहेउ जाय हरि सों हरुवाई । आज चतुरई कहां गँवाई ॥ बिन निज जांघन चले ललारे । कैसे चहत कियो सुखप्यारे ॥ हो मनमोहन तुम बहुनायक । नागर नवल सकल गुण लायक ॥ तब बोले हरि दोउ कर जोरी । तेरी सों वृषभानु किशोरी ॥ तूही हित चित जीवन मोकों । सदा करत आराधन तोकों ॥ तू मम तिलक तुही आभूषण । पोषण तेरेइ वचन पियूषण । तेरोइ गुण मैं निशि दिन गाऊं । अब तज मान हृदय सुखपाऊं ॥ कर जोरे विनतीकरि भाख्यो । कहति शीश-

चरणनिपर राख्यो ॥ यह सुनि कछु प्यारी मुसुकानी । तब बोली उठि सखीसयानी ॥ सुनहु श्याम तुम हौ रसनागर । रूप शील गुण प्रीति उजागर ॥ तुमते प्रिया नेक नहिं न्यारी । एक प्राणद्वै देह तुम्हारी ॥ प्यारी में तुम तुममें प्यारी । जैसे दर्पण छाँह विहारी ॥ रस में परै बिरस जहँ आई ॥ होय परति तहँ अति कठि-नाई ॥ अबकै हम सब देति मनाई । परसो प्यारी चरण कन्हाई ॥ अब रुठाय हो जो गिरिधारी । राम राम तौ बहुरि हमारी ॥

दोहा–जब परसे प्यारी चरण, परम प्रीति नँदनन्द ।
छुट्यो मान हर्षीप्रिया, मिट्यो विरह दुख द्वन्द ॥
सो०–उर आनन्द बढाय, प्रेम कसौटी कसि पियहि ।
अवगुण मन बिसराय, मिली प्रिया उठि श्यामसों ॥

चौपाई ॥

हर्षि मिले दोउ प्रीतम प्यारी । भईं सखी सब निरखि सुखारी ॥ तब दोउ उबटि सखिनअन्हवाये । रुचिर श्रृँगार श्रृँगारि बनाये ॥ मधुर मिष्ट भोजन मन भाये । दोउअन एकै थार जिमाये ॥ दिये पान अचवन कर-वाये । सुमनसुगंध माल पहिराये ॥ लै बीरा अपने कर प्यारी । दीनो बिहँसि वदन गिरिधारी ॥ तबहिं सफल हरि जीवन जान्यो । परमहर्ष उर अन्तर आन्यो ॥ मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी । तब सखियन

आरती उतारी ॥ अति आनंदभरे दोउ राजैं । अरस परस निरखत छबिछाजैं ॥ पायेसब करि कुंजविहारी ॥ विहँसि कहेउ तब पियसों प्यारी ॥ सुनहु श्याम वर्षाऋतु आई । रचहु हिंडोरो शुभ सुखदाई ॥ है मन पिय यह साद हमारे । सब मिलि झूलहिं संग तुम्हारे ॥ सुनि तियवचन श्याम सुख पायो । ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो ॥

छंद–तिय मान हरि ऐसे छुड़ायो भक्त हित लीला करी । निगम नेति अपार गुण सुखसिंधु नट नागर हरी । यह मान चरित पवित्र हरिको प्रेमसहितजुगावहीं । कराहिं आदर मान तिनको संत जन सुख पावहीं ॥

दोहा–राधा रसिक गुपाल को, कौतूहल रस केलि ।
ब्रजवासी प्रभु जनन को, सुखद कामतरु वेलि ॥

सोरठा–सफलजन्महै तास, जे अनुदिन गावत सुनत ।
तिनको सदा हुलास, सूरदास प्रभुकी कृपा ॥

इति गुरुमानलीला समाप्ता ।

रेखता ॥

चहुं ओर बू चमन में कैसी बहार है । मृगनयनी पिकवयनी गुलशन गुलजारहै ॥ गजगामिन रति कामिन नागिनमें नामहै । चलिये कृष्णबिहारी रमणीक ठामहै ॥ १ ॥ यक तर्फ गुल चमेली केसर कि क्यारियां ।

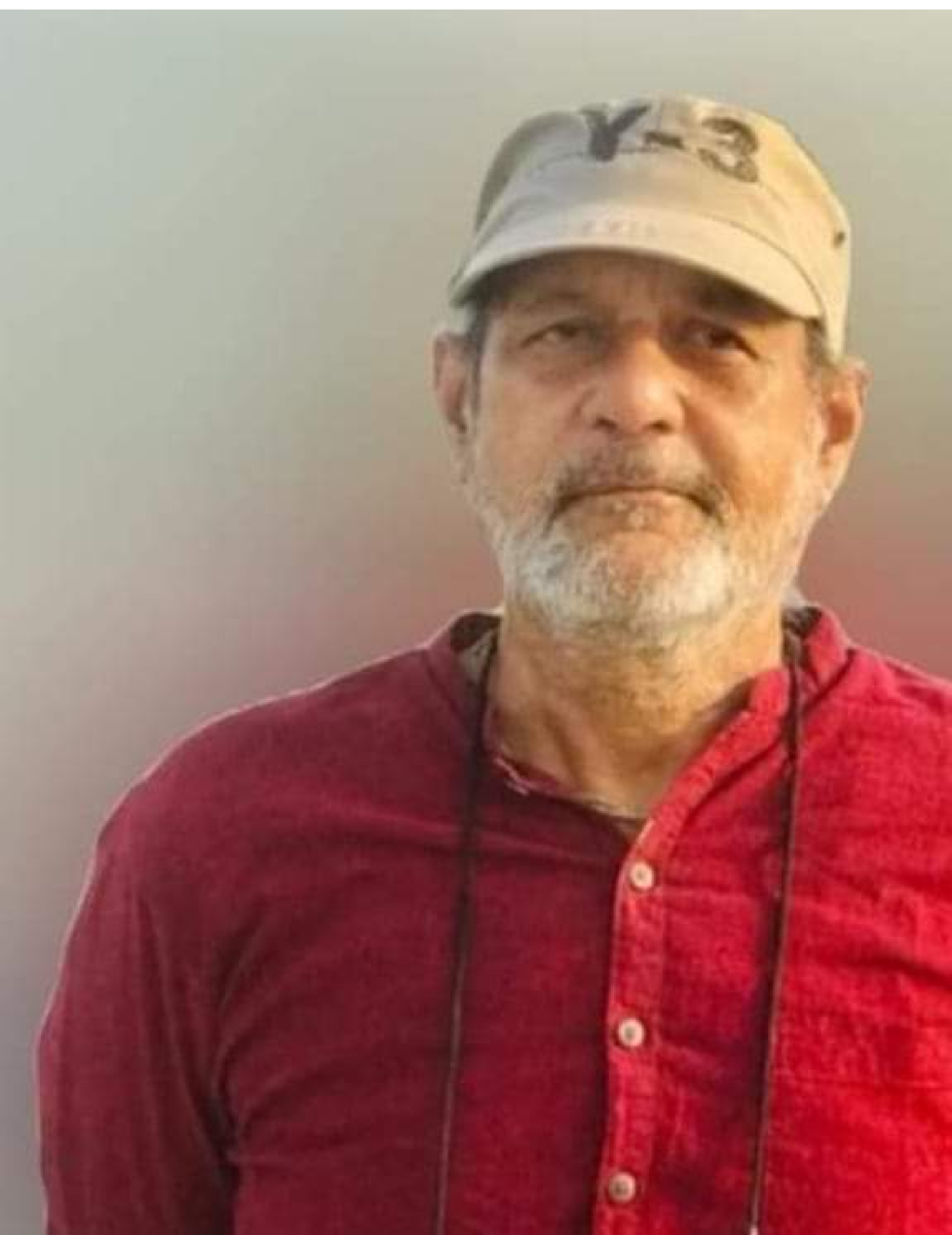
क्या नरगिसें सुहाईं चम्पा कि डारियाँ ॥ जाही जुही चमेली पौधा ललाम है ॥ चलिये कृष्णबिहारी रमणीक ठाम है ॥ २ ॥ हँसि हँसि कै कहै प्यारी क्यारी गुलाबकी । कँवडे को कौन पूँछे कलियाँ कमाल की ॥ बहँके सुगंध बेला छैला तमाम है । चलिये कृष्णबिहारी रमणीक ठामहै ॥ ३ ॥ लटकीं लतान सौरभ पल्लव छतान छाईं । मोर कुहुकि कुहुकि नाचैं पिक कूक है मचाई ॥ डोलै वसंत मारुत रति केलि कामहै । चलिये कृष्णबिहारी रमाणीक ठाम है ॥ ४ ॥ विकसे सरोज सरवर मकरंद सों भरे । अलि मस्त मधुर गुंजैं वश यारके परे ॥ छाईं छिटक उजारी पूनो प्रणामहै ॥ चलिये कृष्णबिहारी रमणीक ठाम है ॥ ५ ॥ सुनि हँसि चले कन्हाई यमुना निकुंज में । गलबाहिं देसखीके आनन्द पुंज में ॥ कारि अर्श पर्श सर्वस की केलि काम है ॥ चलिये कृष्णविहारी रमणीक ठाम है ॥ ॥ ६ ॥ हरि भक्तन मन राखत जाहिर पुरान है । फिर वेदहू ने गाई मन जपत क्यों न है ॥ धारि कृष्ण चरण हृदय जप राम राम है । चलिये कृष्णविहारी रमणीक ठाम है ॥ ७ ॥ सुंदर सदन सुहावन बहु धवल धाम है । सुरसरि तटे बदरका ज़िह्ला उनाम है । हरि दासनको दासन शुक्लोपनाम है । रमिये कृष्ण विहारी रमणीक ठाम है ॥ ८ ॥

दोहा–जे अनुदिन गावें सुने, कथा रसिक हरिदास ।
अतुलकीर्ति जगमें लहैं, अन्त स्वर्गपुर वास ॥
श्रीकृष्णदासात्मज, क्षेमराज विख्यात ।
तिनके यन्त्रालय छपी, भई जगत प्रख्यात ।

इति श्रीनवरत्नभाष्य–रासविलास समाप्त ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज–श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाड़ी–बंबई.


Y-3